॥ श्रीहरिः ॥

ॐ नमः श्रीमते हरिरामदासाय

श्री पाठ रत्न

संपादक

रामस्नेहिसम्प्रदाय सींथल पीठाचार्य

श्री १००८ श्री क्षमारामजी महाराज

॥ श्रीहरिः ॥

ॐ नमः श्रीमते हरिरामदासाय

श्री पाठ रत्न

राम

संपादक

रामस्नेहिसम्प्रदाय सींथल पीठाचार्य

श्री १००८ श्री क्षमारामजी महाराज

संत-साहित्य-ग्रन्थमाला

चतुर्थ संस्करण तक प्रकाशन - ११,०००
पंचम संस्करण - १०,०००
प्रकाशन काल - विक्रम संवत् २०५२
भगवज्जयन्ती चैत्र शुक्ला १३

न्योछावर - नौ रुपये

प्रकाशक
आचार्यपीठ, श्रीरामधाम, सींथल (बीकानेर) राज०

पुस्तक प्राप्ति स्थान
१. आचार्यपीठ, श्रीरामधाम, सींथल (बीकानेर) राज०
२. श्री आनन्द आश्रम, बीकानेर, राज०

॥ श्रीहरिः ॥

ॐ नमः श्रीमते हरिरामदासाय

विषय-सूची

॥ इति ॥

पूज्यपाद अनन्त श्री विभूषित श्री हरिरामदासजी महाराज
श्री रामस्नेहि सम्प्रदायाद्याचार्य सिंहस्थल

॥ राँ रामाय नमः॥

ॐ नमः श्रीमते हरिरामदासाय

ब्रह्म स्तुति

परम वंदन परम सेवा, परम दीनदयाल तुम् ।
परम आतम परम यारी, परम स्वरग पयाल तुम् ॥ १ ॥
नमो निर्गुण नमो नाथू, नमो देव निरंजनम् ।
नमो सम्रथ नमो स्वामी, नमो सकल सिरंजनम् ॥ २ ॥
नमो अवगत नमो आपू, नमो पार अपंपरम् ।
नमो महरम नमो न्यारा, नमो पद परमेश्वरम् ॥ ३ ॥
नमो चेतन नमो तारी, नमो निज्ज निरासनम् ।
नमो आदि न नमो अन्ता, नमो ब्रह्म प्रकाशनम् ॥ ४ ॥
नमो प्रीतम नमो प्यारा, नमो नाम निकेवलम् ।
नमो कायम नमो करता, नमो राम निरम्मलम् ॥ ५ ॥
नमो निकलंक नमो निकुला, नमो नित्त नरायणम् ।
नमो अम्मर नमो अधरा, नमो पीव परायणम् ॥ ६ ॥
नमो हरदम निराकारं, नमो निगम निरूपणम् ।
नमो अविचल नमो अणभै, नमो एक अनूपनम् ॥ ७ ॥
नमो साहिब नमो सहजां, नमो काल-निकन्दनम् ।
दास हरिया नमो दाता, नमो तुम निर्द्वन्द्वनम् ॥ ८ ॥

॥ इति ॥

॥ श्री हरि॥

ॐ नमः श्रीमते हरिरामदासाय

प्राक्कथन

हरिया मन माला भई, तिलक हमारै तत्त ।
ज्ञान हमारे गूदड़ी, सहज हमारे मत्त ॥

अनादि काल से यह जीवात्मा भवाटवी में असहाय, दीन, हीन होकर भटक रहा है। जो जीव इस भवाटवी-भ्रमण को समाप्त करना चाहते हैं उनके लिए सन्त-महापुरुषों की वाणी ही सच्चा अवलंबन है। सन्तों के उपदेश के कारण ही जीव को भगवान् के अवलंबन का ज्ञान होता है। इतना ही नहीं, स्थाणु को भूत समझकर जैसे बालक् डरता है उसी प्रकार वासुदेवस्वरूप इस जगत् को अज्ञानी लोग मिथ्या-कल्पना-दृष्टि से देखकर घबरा रहे हैं। महात्माओं ने जीवों की इस दुर्दशा पर कारुणिक दृष्टि से देखकर मातृवत् लालन कर जीवों को प्यार से जिन

शब्दों में समझाया है वही वाणी के रूप में आदरित हुई है। उन "वाणियों" में जिन जिन धन्यात्माओं की श्रद्धा हुई, वे "सम्प्रदाय" के निरापद परिसर में आकर मुक्त हो गये। "सम्प्रदाय" शब्द को स्वार्थी लोगों द्वारा दूषित करने का अनावश्यक प्रयत्न किया जा रहा है किन्तु जिस पवित्र भाषा का यह पवित्र शब्द है वह इसमें विलक्षण स्वारस्य ही प्रकट करता है। दानार्थक "दा" धातु से "सम्" एवं "प्र" उपसर्ग से विभूषित "सम्प्रदाय" शब्द एक साथ उन समस्त महात्माओं के परमानुभव का स्मरण कराता है जिन्होंने निर्गुण, सगुण, साकार, निराकार तत्व का अनुभव कर मानव मात्र के कल्याण का पावन संकल्प किया है। उन महापुरुषों के पावन संकल्प में जो शक्ति है वही उनकी वाणी में अवतरित हुई है और वही साधक के मन में प्रवेश कर दिव्यातिदिव्य प्रकाश का अनुभव कराती है। अतः श्रद्धालुजन उनकी "वाणी" का नित्य-प्रति पाठ करते हैं। जैसे स्थूल शरीर को अन्न-जल नित्यशः पुष्ट करते हैं उसी प्रकार श्रद्धालु साधकों

की अन्तरात्मा को महापुरुषों की वाणी ही सदा सन्तुष्ट कर सकती है। इसी भावना से विज्ञजनों ने वाणी प्रचार का सुपुनीत कृत्य किया है।

इस सन्दर्भ में रामस्नेहिसम्प्रदाय सींथल पीठ के परमाद्याचार्य अनन्त श्री हरिरामदासजी महाराज श्री की "अनुभव वाणी" अत्यन्त विलक्षण एवं विपुल कलेवर है। उस दिव्य "वाणी" में से योगोपयोगी "घघर-निसाणी" नामनिष्ठोपयोगी "नाम परचा" एवं "निजज्ञान" मात्र ही नित्य पाठार्थ लिया है। इसी प्रकार श्री हरिरामदास जी महाराज के प्रथम शिष्य श्री नारायणदास जी महाराज की वाणी में से वैराग्योत्पादक "चेतावनी" भाग लिया है। सींथल पीठ के द्वितीय आचार्य श्री हरिदेवदास जी महाराज की विशाल वाणी से चामत्कारिक "करुणा-निधान" नामक अंश लिया है। अनन्तश्री हरिरामदास जी महाराज सींथल के ही द्वितीय शिष्य श्री रामदास जी महाराज, जो रामस्नेहि संप्रदाय खैड़ापा के प्रथम आचार्य हैं, की विपुल वाणी से आदर्श गुरुभक्ति समन्वित "गुरु महिमा" एवं भगवदानन्दकारिणी "भक्तमाल" अंश लिया है। श्री रामदास जी

महाराज के शिष्य श्री दयालुदासजी महाराज की वाणी अतिविशाल है। उसमें से केवल "रक्षा बत्तीसी", "अरदास बत्तीसी" एवं "करुणासागर" भाग लिया है। अन्य आचार्यों एवं सन्त महात्माओं की भी वाणियों का अंश लिया है। साथ ही रामस्नेहिसम्प्रदाय के मेले-महोत्सवों एवं बरसियों के अवसर पर रात्रि जागरण के लिए उपयोगी भजनों को भी "सन्त भजनावली" के नाम से दिया गया है। अन्त में समस्त बाधाविनाशिनी "रामरक्षा" एवं अशेषाभ्युदयकारिणी सायंतनी "सन्ध्यारती" देकर इसे सर्वोपयोगी बनाया गया है।

इसका अर्थ यह नहीं है कि इस "श्रीपाठरत्न" को पहली बार छपवाया जा रहा है। सर्वप्रथम "श्रीपाठरत्न" का प्रकाशन रामस्नेहि सम्प्रदाय सींथल पीठाचार्य (७) श्री चौकस रामजी महाराज ने करवा कर दिग्दर्शन करवाया। तत्पश्चात् उन्हीं के शिष्य एवं मेरे परमाराध्य गुरुवर्य्य रामस्नेहि-सम्प्रदाय सींथल पीठाचार्य (६) श्री भगवद्दासजी महाराज ने इसके दो और संस्करण प्रकाशित करवाये थे। उन्हीं के पदचिह्नों के आश्रय से एवं

संतकृपा से चौथे एवं पाँचवें संस्करण को प्रकाशित करने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ है। पूर्व संस्करणों की सामग्री में सामान्य परिवर्तन कर इस पाँचवें संस्करण को प्रकाशित किया जा रहा है। परमश्रद्धेय स्वामीजी श्री रामसुखदास जी महाराज श्री के प्रातःकालीन सारगर्भित एवं संक्षिप्त साधक-संजीवक प्रवचन से पूर्व ५ बजे की जाने वाली "नित्य-स्तुति" को बहुत लोगों ने कण्ठस्थ किया है। कई सज्जन नियमित रूप से अपने-अपने घरों या जहाँ भी वे प्रातः ५ बजे हों, अवश्य ही इस "नित्य-स्तुति" को करते हैं। उसे इस संस्करण में सम्मिलित करने से इसका महत्व और भी बढ़ जाता है।

इस "श्रीपाठरत्न" की उपादेयता एवं लोकप्रियता तो इस बात से ही सिद्ध होती है कि ज्यों ही छपवाते हैं त्यों ही कुछ समय बाद इसका अभाव होता चला जाता है। सन्त महापुरुषों के पावन श्रीचरणों में यही प्रार्थना है कि इस घोर कलियुग में लोगों की भावना "सद्वाणी" से जुड़ जाय और लोगों का कल्याण हो जाये।

इस संस्करण के पुनः प्रकाशन के लिए हमारे अपने प्रिय सन्त श्री नवलरामजी साहित्यायु-र्वेदाचार्य एम०ए० बार-बार आग्रह न करते तो इसमें और भी विलम्ब हो सकता था। बीकानेरस्थ आनन्दाश्रम के साधु रामपाल जी रामस्नेही एवं जोधपुरस्थ सूरसागर बड़ारामद्वारा के साधु रामप्रसाद जी रामस्नेही ने भी इस संस्करण के प्रकाशन में प्रशंसनीय प्रयत्न किया है।

अन्त में उनको भी हार्दिक धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकते जिन्होंने मूलरूप से इस संस्करण के प्रकाशन में अपूर्व एवं अमूल्य सहयोग दिया है। राम महाराज सभी का कल्याण करें।

हमसा तैरे बहुत है, तुमसा मेरे नांहि ।
हरीया तुझको छाड़िकै, और न किसपे जांहि ॥

माघ सुदी ११ सं० २०५२
(श्री जैमल-जयन्ती)

श्री आचार्यपीठ
श्री रामधाम सींथल
बीकानेर (राज०)

सन्तचरणरंज

महन्त क्षमाराम शास्त्री
रामस्नेहिसंप्रदाय सींथल पीठाचार्य
व्याकरणायुर्वेदाचार्य (एम०ए०)

॥ श्री हरिः ॥

नित्यस्तुतिः

गजाननं भूतगणादिसेवितं कपित्थजम्बूफलचारुभक्षणम्।
उमासुतं शोकविनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वरपादपङ्कजम्॥

कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः पृच्छामि त्वां धर्मसम्मूढचेताः।
यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम्॥

कविं पुराणमनुशासितारमणोरणीयांसमनुस्मरेद्यः।
सर्वस्य धातारमचिन्त्यरूपमादित्यवर्णं तमसः परस्तात्॥

पश्यामि देवांस्तव देव देहे सर्वांस्तथा भूतविशेषसंघान्।
ब्रह्माणमीशं कमलासनस्थमृषींश्च सर्वानुरगांश्च दिव्यान्॥

अनेकबाहूदरवक्त्रनेत्रं पश्यामि त्वां सर्वतोऽनन्तरूपम्।
नान्तं न मध्यं न पुनस्तवादिं पश्यामि विश्वेश्वर विश्वरूप॥

किरीटिनं गदिनं चक्रिणं च तेजोराशिं सर्वतो दीप्तिमन्तम्।
पश्यामि त्वां दुर्निरीक्ष्यं समन्ताद्दीप्तानलार्कद्युतिमप्रमेयम्॥

त्वमक्षरं परमं वेदितव्यं त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम्।
त्वमव्ययः शाश्वतधर्मगोप्ता सनातनस्त्वं पुरुषो मतो मे॥

अनादिमध्यान्तमनन्तवीर्यमनन्तबाहुं शशिसूर्यनेत्रम्।
पश्यामि त्वां दीप्तहुताशवक्त्रं स्वतेजसा विश्वमिदं तपन्तम्॥
द्यावापृथिव्योरिदमन्तरं हि व्याप्तं त्वयैकेन दिशश्च सर्वाः।
दृष्ट्वाद्भुतं रूपमुग्रं तवेदं लोकत्रयं प्रव्यथितं महात्मन्॥
अमी हि त्वां सुरसंघा विशन्ति केचिद्भीताः प्राञ्जलयो गृणन्ति।
स्वस्तीत्युक्त्वा महर्षिसिद्धसंघाः स्तुवन्ति त्वां स्तुतिभिः पुष्कलाभिः॥
रुद्रादित्या वसवो ये च साध्या विश्वेऽश्विनौ मरुतश्चोष्मपाश्च।
गन्धर्वयक्षासुरसिद्धसंघा वीक्षन्ते त्वां विस्मिताश्चैव सर्वे॥
स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च।
रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसङ्घाः॥
कस्माच्च ते न नमेरन्महात्मन् गरीयसे ब्रह्मणोऽप्यादिकर्त्रे।
अनन्त देवेश जगन्निवास त्वमक्षरं सदसत्तत्परं यत्॥
त्वमादिदेवः पुरुषः पुराणस्त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम्।
वेत्तासि वेद्यं च परं च धाम त्वया ततं विश्वमनन्तरूप॥
वायुर्यमोऽग्निर्वरुणः शशाङ्कः प्रजापतिस्त्वं प्रपितामहश्च।
नमो नमस्तेऽस्तु सहस्रकृत्वः पुनश्च भूयोऽपि नमो नमस्ते॥
नमः पुरस्तादथ पृष्ठतस्ते नमोऽस्तु ते सर्वत एव सर्व।
अनन्तवीर्यामितविक्रमस्त्वं सर्वं समाप्नोषि ततोऽसि सर्वः॥

सखेति मत्वा प्रसभं यदुक्तं हे कृष्ण हे यादव हे सखेति।
अजानता महिमानं तवेदं मया प्रमादात्प्रणयेन वापि॥
यच्चावहासार्थमसत्कृतोऽसि विहारशय्यासनभोजनेषु।
एकोऽथवाप्यच्युत तत्समक्षं तत्क्षामये त्वामहमप्रमेयम्॥
पितासि लोकस्य चराचरस्य त्वमस्य पूज्यश्च गुरुर्गरीयान्।
न त्वत्समोऽस्त्यभ्यधिकः कुतोऽन्यो लोकत्रयेऽप्यप्रतिमप्रभाव॥
तस्मात्प्रणम्य प्रणिधाय कायं प्रसादये त्वामहमीशमीड्यम्।
पितेव पुत्रस्य सखेव सख्युः प्रियः प्रियायार्हसि देव सोढुम्॥
त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं मम देवदेव॥

हरिःशरणम् हरिःशरणम् हरिःशरणम् हरिःशरणम्
हरिःशरणम् हरिःशरणम् हरिःशरणम् हरिःशरणम्
हरिःशरणम् हरिःशरणम् हरिःशरणम् हरिःशरणम्
हरिःशरणम् हरिःशरणम् हरिःशरणम् हरिःशरणम्
हरिःशरणम् हरिःशरणम् हरिःशरणम् हरिःशरणम्
हरिःशरणम् हरिःशरणम् हरिःशरणम् हरिःशरणम्
हरिःशरणम् हरिःशरणम् हरिःशरणम् हरिःशरणम्

॥ श्री हरिः ॥

प्रार्थना

हे नाथ! आपसे मेरी प्रार्थना है कि आप मुझे प्यारे लगें! केवल यही मेरी माँग है और कोई माँग नहीं।

हे नाथ! अगर मैं स्वर्ग चाहूँ तो मुझे नरक में डाल दें, सुख चाहूँ तो अनन्त दुःखों में डाल दें, पर आप मुझे प्यारे लगें।

हे नाथ! आपके बिना मैं रह न सकूँ ऐसी व्याकुलता आप दे दें।

हे नाथ! आप मेरे हृदय में ऐसी आग लगा दें कि आपकी प्रीति के बिना मैं जी न सकूँ।

हे नाथ! आपके बिना मेरा कौन है? मैं किससे कहूँ और कौन सुने?

हे मेरे शरण्य! मैं कहाँ जाऊँ? क्या करूँ? कोई मेरा नहीं।

मैं भूला हुआ कइयों को अपना मानता रहा। उनसे धोखा खाया फिर भी धोखा खा सकता हूँ, आप बचायें।

हे मेरे प्यारे! हे अनाथनाथ! हे अशरणशरण! हे पतितपावन! हे दीनबन्धो! हे अरक्षितरक्षक! हे आर्तत्राणपरायण! हे निराधार के आधार! हे अकारण करुणावरुणालय! हे साधनहीन के एकमात्र साधन! हे असहाय के सहायक! क्या आप मेरे को जानते नहीं? मैं कैसा भग्नप्रतिज्ञ, कैसा कृतघ्न, कैसा अपराधी, कैसा विपरीतगामी, कैसा अकरणकरणपरायण हूँ। अनन्त दुःखों के कारणस्वरूप भोगों को भोगकर-जानकर भी आसक्त रहनेवाला, अहित को हितकर माननेवाला, बार-बार ठोकरें खाकर भी नहीं चेतनेवाला, आपसे विमुख होकर बार-बार दुःख पानेवाला, चेतकर भी न चेतनेवाला, जानकर भी न जाननेवाला मेरे सिवाय आपको ऐसा कौन मिलेगा?

प्रभो! त्राहि माम्! त्राहि माम्! पाहि माम्! पाहि माम्!

हे प्रभो ! हे विभो ! मैं आँख पसारकर देखता हूँ तो मन-बुद्धि-प्राण-इन्द्रियाँ और शरीर भी मेरे नहीं हैं, फिर वस्तु-व्यक्ति आदि मेरे कैसे हो सकते हैं? ऐसा मैं जानता हूँ, कहता हूँ, पर वास्तविकता से नहीं मानता। मेरी यह दशा क्या आपसे किञ्चिन्मात्र भी कभी छिपी है? फिर हे प्यारे! क्या कहूँ!

हे नाथ! हे नाथ! हे मेरे नाथ! हे दीनबन्धो! हे प्रभो! आप अपनी तरफ से शरण में ले लें। बस, केवल आप प्यारे लगें!

भक्त चरित्र पढ़कर खूब अच्छा भाव बनाकर सुबह-शाम और मध्याह्न-तीनों समय भगवान् से यह प्रार्थना करनी चाहिए।

-परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ श्री हरिः ॥

श्री १०८ श्री रामानन्द जी महाराज का अनुभव शब्द

ग्रन्थ ज्ञान लीला

॥ चौपाई ॥

मूरख तन धरि कहा कमायो। राम भजन बिन जनम गमायो ॥
रामभक्ति गति जानी नाहीं। भोंदू भूल्यो धंधा माहीं ॥
मेरी-मेरी करतो फिरियो। हरि सुमिरण तो कबहु न करियो ॥
नारी सेती नेह लगायो। कबहूँ हृदय राम नहिं आयो ॥
सुख माया सूं खरो पियारो। कबहु न सुमर्यो सिरजन हारो ॥
जोबन मद मातो अभिमानी। पर घर भटकत शंक न आनी ॥
स्वारथ मांही चहुं दिशि ध्यायो। गोविंद को गुण कबहु न गायो ॥
ऐसे-ऐसे करत व्यवहारा। आया साहिब का हलकारा ॥
बांध्यो काल कियो चौरंगा। सुत बेटी नारी न कोइ संगा ॥
जो तैं कर्म किया है भारी। सो अब संग सुं चलै तुम्हारी ॥
जम आगे लै ठाढो कीन्हो। धर्म राय बूझण कूं लीन्हों ॥
कीधा कौल किया तुम कर्मा। सिरजनहार न भज्यो निशर्मा ॥

जिन पाणी सूं पैदा कीयो। नर सो रूप तोहिं कूं दीयो ॥
जो तूं विसर्यो मूर्ख अंधा। तो तूं आयो जम के बंधा ॥
हरि की कथा सुणी नहिं काना। तो तू नाहीं जम सूं छाना ॥
साधु संगति में कबहु न रह्यो। मुख सूं राम कबहु नहिं कह्यो ॥
हरि की भक्ति करो नर नारी। धर्मराज यों कहै विचारी ॥
मोकूं दोष न दीज्यो कोई। जैसा कर्म भुगताऊं सोई ॥
पाप पुण्य कूं न्यारा ठाणूं। जो तुम कर्म करो सोजाणूं ॥
तुमरा कर्म तुम्हैं भुगताऊं। आदि पुरुष की आज्ञा पाऊं ॥
साहिब की आज्ञा है मोकूं। महा कसौटी देऊं तोकूं ॥
घड़ी-घड़ी का लेखा लेऊं। कर्मादिक तेरा भरि देऊं ॥
है हरि बिना कौन रखवारो। चित दे सुमरो सिरजनहारो ॥
संकट तें हरि लेहि उबारी। निशिदिन सुमिरो नाम मुरारी ॥
नाम निकेवल सब तै न्यारा। रटत अघट घट होय उजारा ॥
रामानन्द यों कहै समझाई। हरि सुमिरे जमलोक न जाई ॥

–इति–

ॐ नमः श्रीमते हरिरामदासाय

अथ श्री १०८ श्री जयमलदासजी महाराज के अनुभव पद

राग कन्हड़ा

अर्ध नाम उद्धार करैगो, नहिं तो फिर-फिर जनम धरेगो ।टेर॥

वेंद पुरान सकल को नायक, इनहीं ते सब काज सरेगो ॥१॥
है निज नाम सकल भय भंजन, जे यो सहजां ध्यानधरैगो ॥२॥
गह विश्वास भजन मन लावे, सोई संत जन तुरत तरैगो ॥३॥
अन्तर सोझ करे उजवाला, कबहूं ना फिर देह धरैगो ॥४॥
आवागमन भर्म दुख संसय, सो इन्हीं तें सहज टरैगो ॥५॥
जैमलदास इसी विध भजियाँ, भवसागर में नाहि परैगो ॥६॥

मन रे जे तूं राम पिछाणै, नेड़ा है जो निश्चै आणै ।टेर॥
पाँच तत्व ले किया पसारा, जल थल जीव सकल संसारा ॥१॥
तीन भवन के बाहिर माही, हरि बिन काज सरै कोइ नाहीं ॥२॥
पालन पोषण करण संहारण, दीन दया कर दुस्तर तारण ॥३॥
जयमलदास साच मन भजियै, राम विमुख विषय रस तजियै ॥४॥

राम नाम धन पायो प्यारा, जन्म जन्म के मुचें विकारा ।टेर॥
गुरु गोविन्द हरि भक्ति बताये, शरणे आय बहुत सुख पाये ॥१॥
साधु संगति मिल हरि गुण गाये, सेवा सुमिरण ध्यान बताये ॥२॥
साधू जन की सेवा करिये, भवसागर ऐसे उतरिये ॥३॥
जयमलदास कृपा प्रभु कीजैं, अपने जनकूं बहुत सुख दीजैं ॥४॥

राम खजाना खूटत नाहीं, आदि अन्त केते पचि जाहीं ।टेर॥
राम खजाने जे रंग लागा, जामण मरण दोऊँ दुःख भागा ॥१॥
सायर राम खजाना जैसे, अंजरि नीर घटै वह कैसे ॥२॥
काया मांही खजाना पावै, रोम-रोम में राम रमावै ॥३॥
जयमलदास भक्ति रस भावै, खानाजाद गुलाम कहावै ॥४॥

मेरे हिरदे राम बस्योरी, पांच पचीसूँ तीस नस्योरी ।टेर॥
सुषमण नालि अमीरस भरना, चंद सूरले भेला करना ॥१॥
धरणीबंध ऐसी विध लावै, सहजाँ पवन अगम कूं आवे ॥२॥
अनहद चक्कर अजपा बोलै, तासु विचार और नहिं डोलै ॥३॥
जैमलदास करो निज सेवा, निर्मल जोति विराजे देवा ॥४॥

-इति-

॥ॐ नमः श्रीमते हरिरामदासाय॥

तमीश्वराणां परमं महेश्वरं, तं देवतानां परमं च दैवतम् ।
पतिं पतीनां परमं परस्ताद्, विदाम देवं भुवनेशमीड्यम् ॥१॥

प्रत्यात्मभूतं परमार्थरूपं योगेश्वरं ज्ञानगुणैकनिष्ठम् ।
नित्यं शिवं सर्वसुलक्षणञ्च आचार्यश्रेष्ठं हरिराममीडे ॥२॥

पद्मापूजितपादपद्मयुगलं रामं दधन्तं हृदि,
रागद्वेषकरालजालमखिलं वृन्दं रिपूणां हरम् ।
याता ये शरणं विशुद्धमनसस्तेषां प्रबोधादिदं,
वन्दे श्रीहरिरामदासमनिशं रामाय सन्मन्त्रदम् ॥३॥

खाकाशाष्टमहीमिते शुभतमे संवत्सरे वैक्रमे,
कृष्णे पक्षवरे त्रयोदशतिथावाषाढ़मासे शुभे ।
साधुः श्रीहरिरामदासविदितः सिंहस्थले शोभितं,
सर्वैरर्च्यमलंचकार मतिमान् योगस्य सिंहासनम् ॥४॥
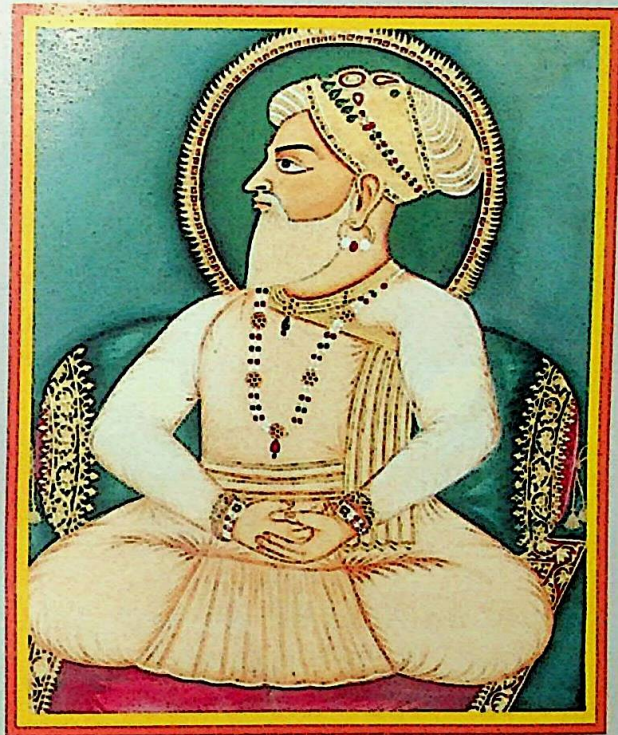
पूज्यपाद अनन्त श्री हरिरामदासजी महाराज
श्रीरामस्नेहि सम्प्रदायाद्याचार्य सिंहस्थल
(प्राचीन चित्र से)

अथ श्री १०८ श्री हरिरामदासजी महाराज के अनुभव शब्द

(१) ग्रन्थ घघर निसाणी

साखी

परब्रह्म सद्‌गुरु प्रणम्य, पुनि सब सन्त नमोय ।
हरिरामा मुर भवन में, या पद समा न कोय ॥

हरिया सम्वत् सत्रहसे वर्ष सईको जान ।
तिथि तेरस आषाढ़वदि सतगुरु पड़ी पिछान ॥

छन्द निसाणी

सतगुरु पहिचानी परचे प्रानी सब सिध काम सरंदाहै ॥१॥
सद्‌गुरु से मिलियाअंतरभिलिया सारशब्द ओलखंदा है ।
तन मन कर हेती रसना सेती रामहि राम रटंदा है ॥२॥
वरस्या है प्रेमा दरस्या नेमा कंठ कमल फूलंदा है ।
भंवरा गुंजारूं खुल्ला बारू मुरली टेर सुणंदा है ॥३॥

श्वासरु उच्छ्वासा हिरदैवासा सुमिरण ध्यान धरंदा है ।
नाभी घर-आया नाच नचाया सहजां मुख सुमरंदा है ॥४॥
रग-रग आरंभा भया अचंभा छुच्छम वेद भणंदा है ।
ओऊँ अरु सोऊँ देख्या दोऊँ पारब्रह्म परसंदा है ॥५॥
मम्मा हुय पासै कमल विकासे अर्ध नाम आखंदा है ।
ऊ नामज केवल बड़े महाबल रोम रोम उचरंदा है ॥६॥
रहता से रत्ता है निज तत्ता न्यारा हुय निरखंदाहै ।
ऐसा अविनाशी आय न जासी भाग बड़े भेटंदा है ॥७॥
रेचक अरु पूरक कर बिन कुंभक आप उलटि पलटंदाहै ।
त्राटक हुय ध्यानू बात विज्ञानू आपा पट खूलंदा है ॥८॥
सुखमण की घाटी चढियावाटी अरसघरां ठहरंदाहै ।
फिरिया मन पूरब चले अपूरब ठाम ठाम ठमकंदा है ।।९॥
जालंधर बंधा उरधे कंधा मन अरु पवन मिलंदा है ।
उलट्या है आसण पलट्या वासण सुरत शब्द परसंदा है ।।१०॥
बहती बंकनाड़ी खुलो किवाड़ी भंवर गुफा भणकंदा है ।
उल्लंघ्या मेरा गुरुमिलचेरा चहूं चकडोल फिरंदाहै ॥११॥
षट्चक्कर भेद्या भवदुख छेद्या सांसा शोक नसंदाहै ।
गरज है गेणूं बरजतवेणूं सरवर शून्य वसंदा है ॥१२॥

हंसा सुन होती मंझे मोती मुख विन चूण चुगंदा है ।
आतम ब्रह्मंडा एक अखंडा विन रसना गावंदा है ॥१३॥
अंबर घर आये ब्रह्म बधाये अनहद नाद घुरंदा है ।
नौबत नीसाणा दिल दीवाणा बाजा भेरि बजंदा है ॥१४॥
मन शिक्खर मिलिया त्रयगढ़ भिलिया पद चौथा पावंदा है ।
अधः मिल उर्धा पवन निरुध्धा ध्यान समाधि लगंदा है ॥१५॥
धरिया नहिं धारूं अधर अधारूं सहजां सेव करंदा है ।
दशमें मिल द्वारी लाई तारी अम्मर बींद वरंदा है ॥१६॥
मनवा थिर पवना पांचू दमना प्याला अजर पिवंदा है ।
निरमल जहाँ नूरा उदय अंकूरा परमानंद परसंदा है ॥१७॥
तिरबेणी छाजै ब्रह्म विराजै निरभै राज करंदा है ।
झिलमिल्ला जोती ओत'रु पोती जीव'रु शीव मिलंदा है ॥१८॥
हरि हीरा पाया विणज हलाया तोल न मोल लहंदा है ।
हरि हीरा होती पारख कोती खोट न चोट चढंदा है ॥१९॥
मन पंचे रहता मुखा न कहता अंतर लिव लावंदा है ।
सुध बुध को विसरी सुरत न निसरी पूरण ब्रह्म अनंदा है ॥२०॥
जीवत जहाँ मुक्ती शिव मिल शक्ती जन्म न फेर मरंदा है ।
अम्मी रस पीया जुग जुग जीया खालिक मिल खेलंदा है ॥२१॥

हंसा परहंसा एको अंसा सुन पर सुन सोहंदा है ।
उड्डे बिन पंखा मिले असंखा पार न को पावंदा है ॥२२॥
जाहर जुग जोगी है अणभोगी औघट घाट रमंदा है ।
नाथन के नाथू मस्तक हाथू शिव ब्रह्मा सेवंदा है ॥२३॥
हरिजन हरि जाणी वेद वखाणी शेष विष्णु ध्यावंदा है ।
धरिया अवतारू अन्त न पारू रहता एक रहंदा है ॥२४॥
अंतः नहिं करणू बाल न तरणू वृद्धन को वरषंदा है ।
पाषाण न पाती छाप न ताती थान न आन थपंदा है ॥२५॥
अणघड़ अज्जातू मात न तातू निराकार निर्द्वन्दा है ।
हाट न कोइ शहरू विणज न बोहोरू खरच न को खूटंदा है ॥२६॥
सूरा नहिं सत्ती जोग न जत्ती जरा न जम पूजंदा है ।
तीरथ नहिं वरतू आभ न धरतू अकल कला आपंदा है ॥२७॥
नारि न को पुरुषा चतुर न मूरखा वेद न चार वचंदा है ।
अनुभव पद बोल्या अंतर खोल्या विधि विरला बूझंदा है ॥२८॥
मिलिया गुरु आदू पाय अनादू पूरबले लेखंदा है ।
जाण्या हम जैसा कहियै कैसा कछु इक मन सरमंदा है ॥२९॥
कायम कुरबाणी कर आसानी, तुँहि तुँहि काम कमंदा है ।
तूँही है रामा तुंही रहीमा जन हरिराम जपंदा है ॥३०॥

दोहा

नीसाणी निश्चै करे, धरे उनमुनी ध्यान ।
हरिरामा साची कहै, पावै पद निर्वान ॥

॥ इति श्रीनिसाणी ॥

सील संतोष सदा रहै सीतल, आनन्द रूप रहै जांह तांही ।
प्रेम प्रवाह भयै तन भीतर, और विकार लिपै नही काही ॥
दंद न को दुष सुष न हिंस्या कूड़ कपट दिसै नही जांही ।
दास कहै हरिराम वसौ वन, भावै बैस रहौ घर मांही ॥

अनन्त श्री हरिरामदासजी महाराज के 'सबद'

(२) ग्रन्थ नाम परचा

सद्गुरू के सत शब्द ते, उपज्यो मन विश्वास ।
राम नाम छांडू नहीं, धरूं न दूजा पास ॥१॥
प्रथम राम रसना सुमर, द्वितीये कंठ लगाय ।
तृतीये हिरदै ध्यान धरि, चौथे नाभि मिलाय ॥२॥

चौपाई

अध मध उत्तम त्रय घर ठानू, चौथे अति उत्तम अस्थानू ।
यह चहुं भिन देखे आसरमा, राम भक्ति को पावै मरमा ॥३॥
अध सुमरन जू ऐसे कहये, रसना राम राम कूं गहिये ।
निशिदिन रसना राम उचारा, ज्यों दर बंदीवान पुकारा ॥४॥
ज्यों रसना तन यों तृण वेली, तन तृण संग तंतु वामेली ।
वेली पान फूल फल लागा, रसना राम सुमिरि भवभागा ॥५॥
अध सुमरन रसना से करिया, करताई मुझिपारउतरिया ।
रसनां राम सुमर अध तालू, मध सुमरन की आया नालू ॥६॥
मध सुमरन जू ऐसा भाई, सुख सुमरन हालत रह जाई ।
गदगद कंठहि कमल विकासा, पाया प्रेम भया परकासा ॥७॥
ज्यों घायल उर सालै पीरा, त्यों-त्यों व्यापै राम सरीरा ।
घायल की घायल सो जानै, राम भजै सोई मन मानै ॥८॥

निश्चय राम नाम लिव जागी, भ्रमना कंठ कमलकी भागी ।
मध सुमरन की ये परतीती, अब उत्तम सुमरन की रीती ॥९॥
उत्तम सुमरन हृदय स्थानूं, माँहो माँही भया धरि ध्यानूं ।
रसना लेत राम का नामा, उर भीतर पाया विश्रामा ॥१०॥
सहजां सासा शब्द पिछानी, रसना सहित नाम निर्बानी ।
उत्तम सुख सुमरन हिरदामें, यूं नारी पुरुषां मन कामें ॥११॥
उत्तम सुमरन की सुधि आई, टुकि इक ध्यान रह्या ठहराई ।
अध मध उत्तम सुमर सुजाना, अति उत्तम के मांहि मिलाना ॥१२॥
अति उत्तम सुमरन जू ऐसा, या उपमा वरनूं मैंकैसा ।
अति उत्तम सुमरन परकारा, रोम रोम लागा ररंकारा ॥१३॥
अति उत्तम नाभी अस्थानू, मन संकल्प विकल्प न ठानू ।
अति उत्तम सुमरन सरवंगा, अक्षर एक भया अणभंगा ॥१४॥

साखी

सुमरन मारग संतका, तातें भरम नसाय ।
हरिरामा हरि बंदगी, करिहों चित्त लगाय ॥१५॥

छंद प्रयात भुजंगी

नाम चेतन्न कूं चेत भाई, नाम तें चित्त चौथे मिलाई ॥१६॥
नाम तें केवला होय भजना, नाम तें सहज सुमिरन्न रसना ॥१७॥
नाम तें अज़प्पा जाप ओऊं, नाम तें सास उस्सास सोऊं ॥१८॥

नाम तें हक्क है एक अल्ला, नाम महमान की आखिगल्ला ॥१९॥
नाम तें चंद सूरा समेला, नाम तें करत मन सुक्ख केला ॥२०॥
नाम तें खोलि कप्पाट गैणूं, नाम तें ध्यान ताटक्क नैणूं ॥२१॥

साखी

नाभी परचा नाम का, गुरू तें पाया ज्ञान ।
हरिया पूरब एक पल, धर्या गगन में ध्यान ॥२२॥

छंद प्रयात भुजंगी

पलटि पूरब्ब अपूरब्ब प्याणा, करि बंकनाली लिये मेरू थाणा ॥२३॥
ध्यान आकास धरि अधर छाजै, सूरति अरु शब्दका एक राजै ॥२४॥
मन बुद्धि चित्त अरु अहंकारा, पाँच पच्चीस मिल एक यारा ॥२५॥
नाद अनहद जहाँ तूर बाजै, बिन बादलां बीज बिन अंबुगाजै ॥२६॥
बिनां गंग जमुना बहै नीर पारा, चलै सुषमणा सीर अमृत धारा ॥२७॥
झिलमिला होत जहां अखण्ड ज्योती, निर्मला नूर तहांओतपोती ॥२८॥
अगम अप्पार अवगत यारा, मिला मुझमें मुझ प्रीतम्मप्यारा ॥२९॥
फदल कूंजीत पति अदल साँई, सुन्य का सहर निरभै बसाँई ॥३०॥

साखी

हंसा सुन सरवर मिल्या, सरवर हंस मिलाय ।
हरिया परसर खेलताँ, सहजाँ रहे समाय ॥३१॥

छंद प्रयात भुजंगी

सहज तन मन्त्र करि सहज पूजा, सहज सा देव नहिं और दूजा ॥३२॥
सहज का जोग साझन्त्र पवना, सहज थिर नाद अरू बिंदगगना ॥३३॥
सहज तीरत्थ जल तप्प ध्यानू, सहज षट्कर्म सेवासनानू ॥३४॥
सहज कछ काछ कीर्तन्न बाजा, सहज का शब्द सुर वायबाजा ॥३५॥
सहज में नाच दे तृत्य ताली, सहज आकाश पर भोम भाली ॥३६॥
वंदना सहज करि शीस धरिया, सहज हरिनाम बकसीसकरिया ॥३७॥
सहज का भेद सोइ भेद भेदै, सहज बिन और दूजा नखेदै ॥३८॥
सहज का भेद सोइ संत जाणै, हद्द कूं जीत बेहद्द माणै ॥३९॥
सहज आसण किया सहज वासा, सहज में खेल अज्जीत पासा ॥४०॥
सहज का खेलणा खूब भाई, सहज सम्माधि सहजां मिलाई ॥४१॥

साखी

सहजां मारग सहज का, सहज किया विश्राम ।
हरिया जीवरु सीव का, एक नाम अरू ठाम ॥४२॥

छंद प्रयात भुजंगी

जीव अरु सीव मिल एक राई, पूरण ब्रह्म जहाँ सुखख दाई ॥४३॥
आदि अरु अंत नां मध्य कोई, जीव जहाँ सीव मिल एकहोई ॥४४॥
जीव अरु सीव का ओथि वासा, ना आभ धरती न होते निरासा ॥४५॥

जीव अरु सीव करि एक जाणी, मिले सिंधु सिंधौ जिमि बूंद पाणी ॥४६॥
ब्रह्म निरपाप गुण गर्व गलिया जरा नाहिं झंफै भय कंप टलिया ॥४७॥
ब्रह्म अवतार भव रहत होई, ब्रह्म अवगत आनन्द सोई ॥४८॥
ब्रह्म निर्बन्ध निर्वाण नित्तूं, ब्रह्म पी अपी परमा निरत्तूं ॥४६॥
ब्रह्म अनहद अनवी नवीसा, ब्रह्म अन्नाथ के नाथ ईसा ॥५०॥
ब्रह्म विदेह देवन्न देवा, ब्रह्म निर्पाप निर्पुण्य लेवा ॥५१॥
ब्रह्म अड्डोल भय नाहि डोलै, ब्रह्म अब्बोल ता नांय बोलै ॥५२॥
ब्रह्म अत्तोल नहिं मोल माया, ब्रह्म अप्पार किन पार पाया ॥५३॥
ब्रह्म निरंजन निर्गुण न्यारा, ब्रह्म परमात्मा आतम्म प्यारा ॥५४॥
ब्रह्म अग्गाध कोइ साधु जाणी, और खुरघींस सिरनाकताणी ॥५५॥

साखी

जीव सीव मिल एकठा, रहे निरंतर छाय ।
हरिया ब्रह्मानन्द में, ना कोई और समाय ॥५६॥

छंद प्रयात भुजंगी

न को रस्स भोगी, न को रहत न्यारा ।
न को आप हरता, न कर्त्तु व्यवहारा ॥५७॥
न को विष्णु ब्रह्मा, न कोई नगेशं ।
न को आदि शक्ति, न कोई महेशं ॥५८॥

न को नाद बिंदू, न को जीव जिन्दा ।
न को आभ धरती, न कोई गिरिंदा ॥५९॥
न को मोह माया, न को काम क्रोधं ।
न को वृद्ध तरूणा, न को बाल बोधं ॥६०॥
न को खाणि च्यारै, न को च्यार बाणी ।
न को चन्द सूरा, न को पौंन पाणी ॥६१॥
न को मास पक्षं, न को तिथ्थि वारा ।
न को रात दिन्नं, न को अंधियारा ॥६२॥
न को सात द्वीपं, न को नव्व खण्डा ।
न को तेज तारा, न को ब्रह्म अंडा ॥६३॥
न को सिंधु सरिता, न को ढार भारूं ।
न को तीन लोका, न को जुग्गा च्यारूं ॥६४॥
न को ऋद्धि सिद्धं, न को मान धाता ।
न को आय जावै, न को नेह नाता ॥६५॥
न को नारि पुरूषा, न को जाति पांति ।
न को ऊंच नीचा, न को छोति भ्रांति ॥६६॥
न को लोक लज्जा, न को कुटुम्ब धर्मा ।
न को पित्त मातं, न को भर्म कर्मा ॥६७॥
न को थान मानं, न को पान पाती ।
न को देव दोसं, न को जग्ग जाती ॥६८॥

न को शुच्चि किरिया, न को वेद पाठं ।
न को मुक्ख वाणी, न को मौन काठं ॥६६॥
न को तन्त्र त्यागी, न को गृह चारा ।
न को नव्व नाथूं, न को पंथ बारा ॥७०॥
न को जोग जुगता, न को जत्तजोखा ।
न को सात सुख्खं, न को दश्श दोखा ॥७१॥
न को मन्त्र वाचा, न को स्वाल शब्दी ।
न को हद्द माहीं, न को वेह हद्दी ॥७२॥
न को रोग दोषं, न को बंध मोषा ।
न को घाटि बाधं, न को आध ओषा ॥७३॥
न को राज तेजं, न को देश पत्ती ।
न को महल छाजा, न को रूप रत्ती ॥७४॥
न को खवास दासी, न को आसपासं ।
न को साथ संगी, न को साथ वासं ॥७५॥
न को राग वागं, न को षट्ट भाषा ।
न को हाल माली, न को लक्ख पाषा ॥७६॥
न को सूर सत्ती, न को खग्ग धारा ।
न को आगि लागै, न को जूझ मारा ॥७७॥
न को शाख सोई, न को दूज दाखै ।
न को जाति जूई, न को पक्ख राखै ॥७८॥

न को ध्वज्ज नेजा, न को तूर बाजै ।
न को मेघ बरषा, न को बीज गाजै ॥७९॥
न को दैत्य देवा, न को दशावतारा ।
न को खेल जुआ, न को जीत हारा ॥८०॥
न को भक्ति नवधा, न को षट्ट बरनूं ।
न को कान्ह गोपी, न को कीरतनूं ॥८१॥
न को मूर्ती सेवा, न को देव द्वारा ।
न को भोग चाढ़ै, न को खाण हारा ॥८२॥
न को तीर्थ व्रत्तू, न को असनाना ।
न को होम जापू, न को तप्प दाना ॥८३॥
न को पिंड पोहरा, न को चोर लागै ।
न को रैण सूता, न को दिन्न जागै ॥८४॥
न को च्यार वेदं, न को है पुराना ।
न को है कतेबा, न को है कुराना ॥८५॥
न को अवल हिन्दू, न को कोल मुल्ला ।
न को दाय पालं, न को मह रसुल्ला ॥८६॥
न को राह पीरां, न को तेग मरदां ।
न को हक्क मूवां, न को हक्क करदां ॥८७॥
न को सुनत काजी, न को बंग न्वाजा ।
न को ईद रोज़ा, मक्का नहीं ख्वाजा ॥८८॥

न को राव रंकू, न को सुल्लताना ।
न को खाक पाकं, न को मस्सताना ॥८६॥
न को भूतप्रेतं, न को जक्षजूणा ।
न को काल जालं, न को तत्त टूणा ॥६०॥
न को स्वप्न जागै, न को सुक्ख पत्ती ।
न को पद्द तुरिया, न को मोक्ष मुक्ति ॥६१॥

साखी

ज्यों देख्या त्यों मैं कह्या, काण न राखी काय ।
हरिया परचा नाम का, तन मन भीतर पाय ॥६२॥
दारक में पावक वसै, यूं आतम घट माहिं ।
हरिया पय में घृत्त है, बिन मथियां कुछ नाहिं ॥६३॥

॥ इति नाम परचा ॥

ऊठत ही बैठत कहै, जागत ही कहै सोय ।
हरिया जा घट रामजी, कबहुक परगट होय ॥

(३) ग्रन्थ निजज्ञान

चौपाई

मेरे सत्य शब्द का शरना, ताते मिटै जन्म जग मरना ।
सोई शब्द सदगुरूते पावै, जब तन मन का संशय जावै ॥१॥
गुरु समर्थ गुरु सुखकी सीरा, गुरु सब दहैं विषय तनपीरा ।
गुरु अघ हरन करन आनंदा, गुरु ते मिटै भर्म भय फंदा ॥२॥
गुरु दयालु दीन गुरु दाता, गुरु सबहिन के ज्ञान विधाता ।
गुरु है दयापाल गुरु देवा, या गुरु की मिल करिये सेवा ॥३॥
गुरु श्रोताको भेद बतावै, मैं तैं मन अज्ञान मिटावै ।
ररो ममो अच्छर पढि लीजै, तन मन वचन साधु पे दीजै ॥४॥
सारशब्द सत है सोई, जाको जानत है जन कोई ।
सो हैं चिदानंद अविनासी, निराकार निर्गुन निर्वासी ॥५॥
परमातम पूरण परकासा, परोदेव परभव परनासा ।
परब्रह्म पार पुरूषोत्तम, निराधार निर्भय निर्गोतम ॥६॥
निर्व्यापक निर्देह निराली, ना कोई वृद्ध न तरूणावाली ।
निर्विकल्प निकलंक निर्वासी, निरालेप निर्वाण निरासी ॥७॥

निश्चल अचला चलै न डोलै, अमर अथाह न अर्थ अतोलै ।
निर्पख निजानंद पद न्यारो, परमगुरू परमेश्वर प्यारो ॥८॥
अजरामर अखण्ड अनजंगी, आप अकल अणभै अनभंगी ।
परमातम परनव परगासा, परोदेव परभव परनासा ॥९॥
निर्व्यापक निर्देह निरालो, नां कोई व्रिध न तरणाबालौ ।
अधर एक अनभंग अनजायो, मातपिता नहिं गोद खिलायो ॥१०॥
नां मुख मौन गहै नहि बोलै, खालिक खलिक पलक नहि खोलै ।
नां कुछ हलका नां कुछ भारी, नां कुछ पुरूषा नां कुछनारी ॥११॥
अगमागम अविगत आद्यंता, पावेगा सु परमगति संता ।
एक बूंद का मंड्या मंडाना, कुन हिन्दू कुन मुस्सलमाना ॥१२॥
जाति पांति कारण नहि कोई, सबही का हरि एको होई ।
छोटे बड़े नीच कुल ऊँचा, राम कहत सब ही नर शुच्चा ॥१३॥
कहा भयो ऊंचे कुल आयो, राम नाम जो मुखां न गायो।
बार-बार औसर नहि ऐसो, राम भजन को मौसरकैसो ॥१४॥
अजहौं कहां विसरे छिनवारा, गाफिल गंदा मूढ़गंवारा ।
एक विनां दाता नहि कोई, कर्ता हर्ता सबका होई ॥१५॥
गुरूगम ज्ञान ध्यान इकतारा, प्रेम सहित निजनाम पियारा ।
द्वन्द्व बाद किनसों नहि करियै, तन मन सेती अजरा जरियै ॥१६॥
रागद्वेष हर्ष नहि धोखा, शीलादिक संजम संतोषा ।
निंदा लोक दोष परित्यागै, अहनिशि एक आतमा जागै ॥१७॥

छाजन भोजन भूख विनासा, ऊजड़ बस्ती नां गृह वासा ।
रमताराम एक रंग राता, माया मोह विषय नहिं माता ॥१८॥
उत्तम साधु सुलच्छन धीरा, सो कहिये अजरामर बीरा ।
मेरा सो हरिजन हितकारी, जाके प्रेमभक्ति अधिकारी ॥१९॥
मनको ज्ञान गुंझ संभलाई, मनवा एक दोय फलदाई ।
कै तो विषय कर्मके काजै, भावै वैस रहो हरि छाजै ॥२०॥
अकर्म कर्म न कर्ता होई, जैसा दत्तब भुगतै सोई ।
मैं तो अपना पीव पिछान्या, जबते एक-एक करि जान्या ॥२१॥
अब घट मेरे भया आनन्दा, शशि घर सूर सूर घर चंदा ।
जाके बीच सुषुमणा जागी, नाम निरंतर ताली लागी ॥२२॥
जाके मरण काल नहि ग्रासै, मनवा मिल्या रामइकरासे ।
सतगुरू जैमलदास सहाई, ताते जीव ब्रह्म इकथाई ॥२३॥
जन हरिराम कहें निजज्ञाना, प्रगट्या परम तत्व परध्याना ।
पूरण पद पाया परिनांमी, सब संतन को दास गुलामी ॥२४॥

साखी

रसना एको नाम ले, पिया प्रेम भरपूर ।
अखंड एक अविगतरता, दुख भय संशय दूर ॥२५॥

–इति–

अथ श्री नारायण दास जी महाराज का अनुभव ग्रन्थ

चेतावनी

साखी

सत्तगुरू अरू सन्त जन, राम निरंजन देव ।
दास नारायण वीनवै, दीजै परभू सेव ॥
चेतावनि सुन चेतरे मूरख मन्न गंवार ।
राम निरंजन ध्यायलै दैगौ सुख्ख अपार ॥१॥

छन्द ऊधोर

फिरियो जीव जन्मां माहि, कित्थे चैन पायो नांहि ।
अब तो मिनख करि मोकूंह, सांई सुमरसूं तोकूंह ॥२॥
नायक जन्म देवो मोहि, हिरदै वीसरूं नहितोहि ।
करसूं संत की सेवाक, भज सूं राम कूं देवाक ॥३॥
दीया गर्भ ही में वास, जठराअग्नि ही के पास ।
किया देह का आकार, सारा अंग ही सुद्धार ॥४॥
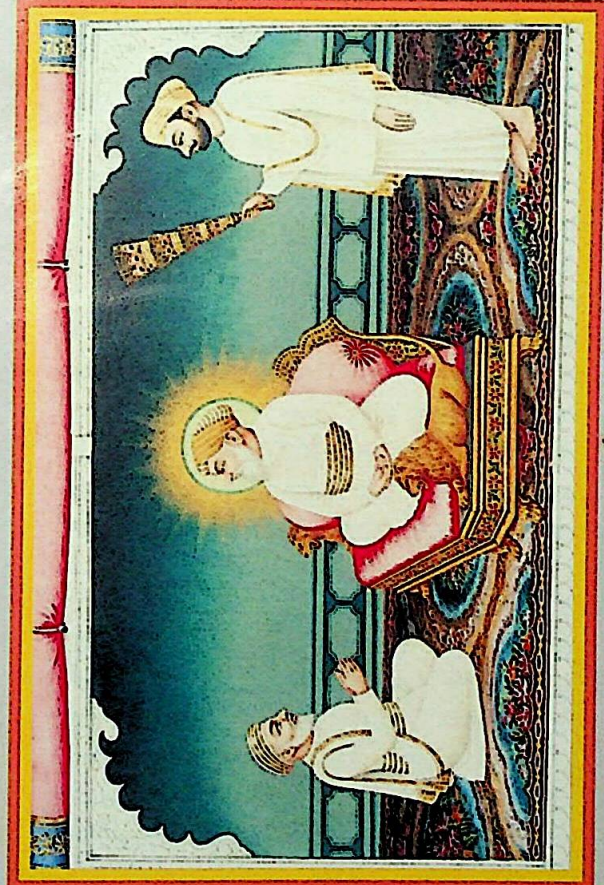
सिंहासन पर विराजमान - अनन्त श्री हरिरामदासजी महाराज
हाथ जोडे हुए सम्मुख विराजमान - श्री नारायणदासजी महाराज

उद्दर माहि कीवी सार, ऊंधै मुक्ख अम्मी धार ।
राख्यो मास ही नव जाण, उद्दर बीच ओखो प्राण ॥५॥
माही करत है पुक्कार, बाहिर लाव हो कर्तार ।
मेरे तोहिको आधार, करसूं याद प्रियतम यार ॥६॥
श्वासोश्वास ही संभार, प्यारा राखसूं उरधार ।
अब तो जन्मियो है बाल, दया करी है दय्याल॥७॥
दाई कहै सुधर्‌यो काम, बाहिर काढ़ियो है जाम ।
माता हर्ष करि परसैह, बालो कान्ह सो दरसैह ॥८॥
पिता कहै हूओ न्याल, बेटो कमासी धनमाल ।
भाई कहै अपनो वीर, बल तो बंधियो शरीर ॥९॥
बहिनड़ बाल लेवै पास, राखे मनां मोटी आस ।
कडुंबै हुओ मंगलाचार, गावै गीत बैठी नार ॥१०॥
माता-पिता सेती प्यार, सबसे करत है हितकार ।
बालो रमै खेलै सोय, माता पिता विकसै जोय ॥११॥
मही दूध पीवै आय, लाडू चूरमांही खाय ।
अब तो साथियों में जात, खेलै बहुत ही दिन-रात ॥१२॥
कूदै फैल ही करैक, कितना विद्रुही मरैक ।
राखै पिताही समझाय, मानै नहीं जोरै जाय ॥१३॥
ख्याली खलकसूं खुशियाल, अब तो बीसर्यो गोपाल ।
खांगी पाघ ही झुक्काय, चंगा चौलणा लग्गाय ॥१४॥

आछो करत है शृंगार, जोवै रूप ही दीदार ।
हुवो मरद ही मोट्यार, मांही ऊपज्या विक्कार ॥१५॥
करमी करै जारी जाय, कसराँ काढसी जमराय ।
राखे जोश ही मनमाहिं, मो सा और कोई नाहिं ॥१६॥
मुखसे बुरो ही भाखैह, सब सूं वैर ही राखैह ।
हरि से हुओ गनहैगार, जमरो मार करसी ख्वार ॥१७॥
गाफिल समझ रे अजाण, माथे राख पति कूं जाण ।
कीयो नीरसे पैदाक, ताकूं भजरै गन्दाक ॥१८॥
दौलत दिवी है तोईक, गोविन्द गायरे सोईक ।
अब तो व्याहि लायो नार, पासै ब़ांधियौ घरबार ॥१९॥
माता पिता से करि जुद्ध, माया बांटि ली बेसुद्ध ।
गाडै ब्याज ही देवैज, दूणा दाम ही लेनैज ॥२०॥
पिव सूं प्रेम ही भागोक, लोभ रू मोह सूंलागोक ।
नेहा नारि से दिन रात, बूहो कामना में जात ॥२१॥
बंदो घिरत रोटी खाय, सोवै नींद ही अघ्याय ।
चांवल खाय चंगा माल, सांई बिना भूंडो ह्वाल ॥२२॥
हत्या करै मारै जीव, बदला मांगसी रे पीव ।
मांसहु खाय पीवै मद्द, ह्वैगो मरद ही गरद्द ॥२३॥
पीवै पोस्त ही को लाय, पोसक पिंड ही को खाय ।
पीवै तम्बाकू अरू भंग, जावै नीच जूणां संग ॥२४॥

पांचूँ पसरिया अप्पार, कीया कर्म ही हुशियार ।
मनवो विषै सूं भरियोह, स्वादां लाग के मरियोह ॥२५॥
बंदा छांड मैला खाज, मांहै सुमर लै महाराज ।
निश्चै नाम लै निराश, नहिं तो होय सत्यानाश ॥२६॥
दया दीनता कर भाय, माया राम लैखे लाय ।
मन को देत है विच्चार, समझै नाहिं रे गंव्वार ॥२७॥
कीयो संपदा विस्तार, मेरे पूत पोता नार ।
मेरे गाय गोधा अन्न, मैरै ऊंठ घोड़ा धन्न ॥२८॥
अंधो अहूं में डोलैह, मुख ता राम नहि बोलैह ।
कहारे भरमियो भइयाह, हरिसे दूर ही रहियाह ॥२९॥
झूठे बंधियो रे जाल, बंदा खायसी रे काल ।
हिरदै नाहिं हरि का हेत, मुंहडे पड़ेगी बहुरेत ॥३०॥
किया श्याम से वचन्न, जासूं झूठ पड़ियो मन्न ।
रक्षा करी दोहरी माहिं, तासें प्रीति कीवि नाहिं ॥३१॥
कीया गुण ही अप्पार, ऐसा भूलग्यो करतार ।
जान्यो नांहि सिर्जनहार, माथै पड़ैगी बहुं मार ॥३२॥
अब तो ज़रा जोजर थाय, बूढ़ो अंग ही धूजाय ।
कुड़ियों डांगड़ी संभाय, आँखें धुंद लागी जाय ॥३३॥
बूढ़ा काम होवै नाहिं, अंधा अकल नाहिं माहिं ।
नारी कहै कैसे काम, नाखो छानड़ी में चाम ॥३४॥

बेटा कहे घर में साल, पापी पड्यो है बेहाल ।
सूक्को टूक देवें लाय, गल में ऊलडै नहिं भाय ॥३५॥
तन से काम करता सब्ब, आदर भाव करता जब्ब ।
अब तन थाकियो म्हारोक, सब कूं लागियो खारोक ॥३६॥
यो तो स्वारथी संसार, तेरो नाहिं रे परिवार ।
बूढो दुखी है मनमाहिं, यामें कोई मेरो नाहिं ॥३७॥
घर में घणों रे कीतोक, कुछ इक द्योह रे पूतोक ।
पूतां कियो हैं विच्चार, पिता करांगा कुछ लार ॥३८॥
दुनिया लोक बूझैं आय, बूढा व्यथा तेरै काय ।
खोटा कर्म लागा आय, पीड़ा पिंड सारे दाय ॥३९॥
बूढा राम कहै भाईह, दुष्टी हाय ही लाईह ।
अब तो मौत ही आईह, संगी कोई नहीं भाईह ॥४०॥
नर तूं बीसर्यो बेकाम, संगी नाहि कीयो राम ।
चेत्यो नाहिं रे गंवार, आछो जन्म चाल्यो छार ॥४१॥
नर तूं काहै कूं आयोह, हरि को नाम नहिं पायोह ।
कंठ कूं काल रोक्यो आय, सब ही द्वार बूंद्या लाय ॥४२॥
मारां दिवी माहों माहि, दोहरो पिंड छुटै नाहि ।
बहुतो कष्ट ही हुवोह, माया मोह करि मुवोह ॥४३॥
लोकां बाल कीयो छारि, देखा देखि रोवै नारि ।
जमरो मारि लेग्यो जीव, आडो नहीं आयो पीव ॥४४॥

साखी

पति सूं वेमुख होय करि, मिल्यो माया के साथ ।
अज्ञानी नर अहूं में, पड्यो पराये हाथ ॥४५॥

छन्द ऊथोर

अब तो लेचल्या जमदूत, कीयो मार करि धर पूत ।
लेग्या धर्म के आगैह, लेखा सर्व ही मांगैह ॥४६॥
झुठा बोल कह नहि सोय, सुकृत नाहिं कीयो कोय ।
मैला काम ही कीयाह, हरि का नाम नहि लियाह ॥४७॥
जापर कोपिया जमराय, मारां दिवी जाझी लाय ।
लातां मारियो पिच्छाड़, गल में घाल घींस्यो नाड़ ॥४८॥
ऊंधो टेर दीवी मार, जम्मां जोर कूट्यो जार ।
हिरदै नाहिं हरिका लेस, नांख्यो मुगदरां सूं फेस ॥४९॥
आगै अग्नि का दव्वार, तपती भाय ताता सार ।
ऊपर ताहिकै फेरियोह, बंदो बाल करि गेरियोह ॥५०॥
नाख्यो नरक ऊंडै ताण, कीड़ा तोड़ चूंटै प्राण ।
कूकै पड़ै माथै मार, बंदा तोहि कूं धिरकार ॥५१॥
सापां बिछुवां का कुंड, तामें डार दीयो रूंड ।
बिच्छु सांप पिंजरखाहिं; दूता मुगदरां की लाहि ॥५२॥
ऐसी त्रास दीवि ताहि, प्राणी पड्योही विललाहि ।

एहा नरक ही भुगताहिं, भुगतै बहुत जुग्गां माहि ॥५३॥
जग में स्वाद ही लीयाह, साहिब याद नहिं कीयाह ।
यो तन फेर पावै कांय, पड़ियो अनंत ऊंडै माँय ॥५४॥
बंदा राम सुमर्‌यो नाहिं, दुःखां पार कैसे पाहिं ।
मन में राखता अभिमान, जोधा गया मैली खान ॥५५॥
करता गर्व ही गुम्मान, गया नरक ही निद्दान ।
उंचा महल ही अव्वास, करता नारि नरविल्लास ॥५६॥
खाता मेवा मीठा भात, प्याला पीवता निव्वात ।
निर्गुण नाम राता नाहिं, गया गंदगी कै माहिं ॥५७॥
मांही केई जुग्गां ताहि, पीछै चौरासी कूं जाहि ।
जूणां अनेक ही भुगताय, जामें ऊपजै खपजाय ॥५८॥
बहुतो दुःख पावै जीव, सुमर्‌यो नाहिरे तै पीव ।
तातें कष्ट तन पायोक, जुग जुग माहि भटकायोक ॥५९॥

साखी

सदगुरू शरणे ऊबर्‌या, नरिये सुमर्‌या राम ।
नहिं तो भरम्या जावता, दुख पड़ता बे काम ॥६०॥

छंद ऊधोर

शरणे संत के आयाक, भावरू भक्ति ही भायाक ।
सेवा ह्याल की लागाह, दुविधा दोष ही भागाह ॥६१॥

रसना नाम ही लीयाह, अमृत कंठ ही पीयाह ।
हिरदै ध्यान ही धरियाह, तन मन सहज थरहरियाह ॥६२॥
नाभी नाम ही निरधार, सुमरण सहज ही उच्चार ।
संगी सांचही धार्याह, झूठा पास ही डार्याह ॥६३॥
पति सूं प्रेम ही लायाह, हरि गुण हेत सूं गायाह ।
सहजां ज्ञान ही आयाह, मनवै शान्ति ही पायाह ॥६४॥
उल्टा पछिम कूं ध्यायाह, ऊंचा मेरूं करि थायाह ।
बाजा गगन ही वायाह, निरंज़न शून्य ही पायाह ॥६५॥
सुन में शब्द ही निरकार, लागी सुरत ही झकतार ।
शुन में सुक्ख ही भइयाह, दूजा दुःख ही गइयाह ॥६६॥
पूरण ब्रह्म ही कूं पाय, सहजां रहे सुख सम्माय ।
मीटिगे जनम अरू मरणाक, अब तन फेर नहिं धरणाक ॥६७॥
मिलिया नीर में हुय नीर, हंसा चुगत है हरि हीर ।
पाया राम ही महाराज, सरिया सहज जन का काज ॥६८॥

साखी

सतगुरू के परताप ते, नरियै नाम पियाह ।
प्यासा प्राण पिलाइया, पीवत ही जीयाह ॥६९॥
और सकल कूं छांड़ि करि, परस्या आतमराम ।
नरिया सांसा को नहीं, जाय मिल्या निजधाम ॥७०॥

॥ इति चेतावनी ॥

अथ श्री हरिदेवदास जी महाराज का अनुभव ग्रन्थ

करुणानिधान

साखी

वंदन हरि गुरू जन प्रथम कर मन कायक वैन ।
अखिल भुवन जो सोधियै समा न या कोई सैन ॥

दोहा

आदि ब्रह्म जन अनन्त के, सारे कारज सोय ।
जेहि जेहि उर निश्चो धरै, तेहि ढिग प्रग्गट होय ॥१॥

छन्द त्रिभंगी

राक्षस ठगवाने ब्रह्मा ज्ञाने जाय लुकाने अपथाने ।
मच्छा धरि प्राने जद भगवाने जल बहराने तिहठाने ॥
शंखासुर हाने निगम लराने श्याम दराने विधिसेतम् ।
ब्रह्म हो अविनाशी आनंदराशी दोष विनाशी सुखदेतम्जिय० ॥२॥

श्री १००८ श्री हरिदेवदासजी महाराज
रामस्नेहि सम्प्रदायाचार्य सिंहस्थल (२)

हिरणख जब ठाढे कौन समाढे धर पय चाढ़े तब डाढे ।
वेरा हरिताढे आयस गाढे वाराह गाढे तन वाढे ॥
राक्षस हणि दाढे इल गह काढे सो थिर माढे निजखेतम् ।
ब्रह्म हो अविनाशी० ॥३॥

अवनीके तवरे अगनिज अवरे मंजा कंवरे विचमवरे ।
सिरियादे सिवरे हरि हित हिवरे न्याही निवरे जो जिवरे ॥
स्वालत सुत संवरे वहं बिन भंवरे खेलत नंवरे निजखेतम्।
ब्रह्म हो अविनाशी० ॥४॥

प्रह्लाद पुकारे जिह ररंकारे निश्चय भारे गमसारे ।
हिरणाकश धारे नहीं हमारे क्रोध विचारे खगसारे ॥
प्रगटे अवतारे खंभ प्रहारे राक्षस मारे जनहेतम् ।
ब्रह्म हो अविनाशी० ॥५॥

बालक धू ध्याये पिता बेठाये मांइ रिसाये दुख पाये ।
गम पूछी माये हरि नहिं गाये जब लिव लाये बन धाये ॥
धन धाम धमाये सब छिटकाये हरि उर पाये निजहेतम् ।
ब्रह्म हो अविनाशी० ॥६॥

धूमर जब आये शिव भरमाये, कंकण लराये उठधाये ।
अस्त्रीक जिताये लारि पठाये, शंभू भाये हरि आये ॥

तिरिया तन थाये नाच नचाये, कर शिर आएभस्मेतम् ।
ब्रह्म हो अविनाशी० ॥७॥
धाये तजि आरण करि जल कारण, ग्राह विदारण जुधसारण ।
बूडत वहं वारण परे पुकारण, उर इक धारण ररंकारण ॥
सुनिये जब तारण चक्र संभारण, कपे बधारण करमुकतम् ।
ब्रह्म हो अविनाशी० ॥८॥
भवपुज के अंगा कुलधर्म भंगा, गणिकासंगा विषरंगा ।
अजमेल अनंगा दोष उपंगा, कर्म कुसंगा नितसंगा ॥
हो नारण चंगा सुतहित बंगा, जब जम जंगा छूटेतम् ।
ब्रह्म हो अविनाशी० ॥९॥
अमरीष भुवाले ऋषि सुखपाले, जेहि करआले दुखटाले ।
वही बहु चाले उलटी भाले, दुख असरालेतपवाले ॥
दुर्वासा पाले सोह भवनाले, राजा टाले दुखदेतम् ।
ब्रह्म हो अविनाशी ॥१०॥
आये जल अगरे सोइ ऋषि सगरे, बाहरन लगरे स्त्रीवगरे ।
तासूं ऋषि झगरे दीनी तगरे, जलरत रगरे नय जगरे ॥
प्रिय रजवा डगरे शवरी पगरे, परशत सगरे जलनेतम् ।
ब्रह्म हो अविनाशी० ॥११॥
कौरव मद भरिये है पंड हरिये, द्रोपां डरिये थरहरिये ।

दु:शासन लरिये गहन कबरिये, अंबर परिये कर अरिये ॥
बिलखी जब तिरिये तो हरि विरिये, चीर वधरिये निजचेतम् ॥
ब्रह्म हो अविनाशी० ॥१२॥
कौरव पंड भारें जुद्ध करारे, गयंद हजारे जहंगारे ।
सुत वहं टीटारे श्याम संभारे, गज घंट डारे दुखटारे ॥
राखे जब सारे इसा मुरारे, तो कुण पारे पेखेतम् ।
ब्रह्म हो अविनाशी० ॥१३॥
तुरकज तन साले नर अनभाले, वेहपराले इह ह्वाले ।
मगचल पयपाले डगडगटाले, शूकरवाले हतयाले ॥
कहियो अंतकाले हराम आले, जेहि जमजाले छूटेतम् ।
ब्रह्म हो अविनााशी० ॥१४॥
चातक तरू ठाणे शिर अरि जाणे, पारधि बाणे दिसताणे ।
जाकूं अहि हाणे शर छूटाणे, जाय लगाणे सीचाणे ॥
पप्पीह जु प्राणे टल विघनाणे, हरिहि पिछाणे निजहेतम् ।
ब्रह्म हो अविनाशी० ॥१५॥
निज भंक्ता नामा अरि पति गामा, हते बछामा ढिगतामा ।
जीवादे जामा तो तेहि रामा, नतो हंतामा इह कामा ॥
गौगमने धामा लाय लगामा, मुगल सिलामा करिहेतम् ।
ब्रह्म हो अविनाशी० ॥१६॥

कबीर जन भारे द्विज दुख धारे, पतिया फारे दिश चारे ।
आये जब सारे भेष अपारे, वणि निज प्यारे बिणजारे ॥
बालद जन द्वारे आनि उतारे, सोइ विधि सारे पोखेतम् ।
ब्रह्म हो अविनाशी० ॥१७॥

रैदाससु लागा हरि प्रतिमागा, ब्राह्मण जागा सब सागा ।
किन सूं नहिं रागा ना अणरागा, धेषै लागा मंदभागा ॥
काढ़े उरतागा साम सुहागा, जब द्विजभागा सबसेतम् ।
ब्रह्म हो अविनाशी० ॥१८॥

मीरा सोइ नारी निज हरिप्यारी, राणै विचारी विषगारी ।
अंजलि भरि सारी मुख में डारी, हरि हितकारी दुखटारी ॥
भूपति पच हारी निज बलदारी, भक्ति करारी भावेतम् ।
ब्रह्म हो अविनाशी० ॥१९॥

जनसे दुख दाये कुल के ताये, रामत भाये नर ध्याये ।
नरसी के नाये अंक लिखाये, हुंडी आये जेहि गाये ॥
साँवल हुय साये दिवी भराये, सब सुख दाये जनसेतम् ।
ब्रह्म हो अविनाशी० ॥२०॥

दादू दुख धारे लोक पुकारे, मुगल दवारे हुय प्यारे ।
कीने सब ख्वारे कुल धर्म हारे, एह विचारे धेखारे ।

जन दिश झोकारे महमंत मारे, बन्दन सारे शुंडेतम् ।
ब्रह्म हो अविनाशी० ॥२१॥

तारे जन सारा अधम अपारा, असंख्य जुगारा नहिं पारा ।
आपै बुध सारा कहै विचारा, लह कुण पारा विर्दभारा ॥
ऐसे निरकारा जिवके प्यारा, तारणहारा उरहेतम् ।
ब्रह्म हो अविनाशी० ॥२२॥

दोहा

जहं जिव उर करुणा धरे, वहां करे हरिपाल ।
अपनो विरद विचारियो, करुणामयी कृपाल ॥२३॥
अधम जीव तुम तारिया, तुम ही तारे संत ।
अब किरपा मोपर करहुं, यो हरिदेव कहंत ॥२४॥

॥ इति ॥

हरिया जाणै सहज कूं, सहजां सब कुछहोय ।
सहजां सांई पाइयै, सहजां विषया खोय ॥

आद्याचार्य श्रीहरिरामदासजी महाराजश्री (सींथल)

अथ श्री १०८ श्री रामदास जी महाराज के अनुभव शब्द

(१) ग्रन्थ गुरु महिमा

साखी

सतगुरु सेती वीनती परब्रह्म सूं परणाम ।
अनंत कोटि संत रामदास निशिदिन करूं सलाम ॥
आये संत सधीर, लिये जग में अवतारा ।
खोले भक्ति भंडार, मिट्या है तिमिर अंधारा ॥१॥
अमर लोक सूं आय, सिंहस्थल माहिं विराजे ।
तेजपुंज परकास, बजे अनहद के बाजे ॥२॥
सतासमाधि अगम जहां आसण, सुखमण सहज समाधी ।
आय रामियो चरणां लागो, सिख है आदि अनादी ॥३॥
हरिरामा हरि है अवतारा, अंतर कला कबीरू ।
नाम देवसा दृष्टि देखतां, सूरा संत सधीरू ॥४॥
पत प्रहलाद चाल सनकादिक, ज्ञान सहित शुकदेवूं ।
ध्रुवसा ध्यान अटल अनुरागी, गोरख जैसा भेवूं ॥५॥
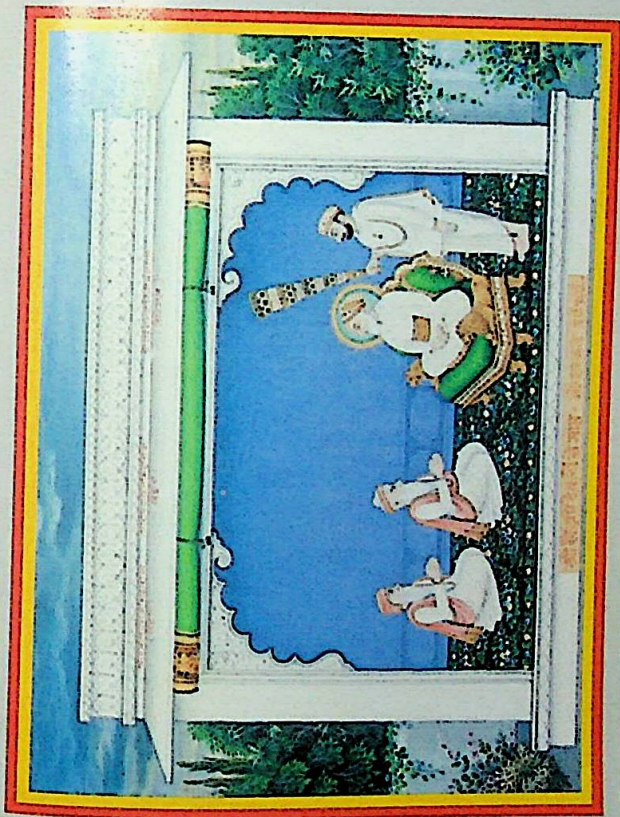
सिंहासन पर विराजमान - अनन्त श्री हरिरामदासजी महाराज रामस्नेहि सम्प्रदायाचार्य सिंहस्थल(१)

हाथ जोडे हुए सम्मुख विराजमान -१. अनन्त श्री रामदासजी महाराज रामस्नेहि सम्प्रदायाचार्य खेडापा (१)

२. अनन्तश्री दयालुदासजी महाराज रामस्नेहि सम्प्रदायाचार्य खेडापा(२)

दादूसा दीदार दुरस कोई दर्शन पावै ।
काल जाल सब जाय, भरम अघ दूर गमावै ॥६॥
दीर्घ सा दिग्पाल, मेरूसा अविचल कहिये ।
सूरजसा परकास, समंदज्यूं थाह न लहिये ॥७॥
समंद संख्या में होय, सत्तगुरु असंख कहाये ।
गोविदतें दीरग्घ, चंदते शीतल थाये ॥८॥
ब्रह्म विलासी संत, ब्रह्म का है व्योपारी ।
ज्ञान ध्यान गलतान, दीसतां दर्शण भारी ॥९॥
मरूधर के मंझ मांहि, प्रगट्या सच्चा सांई ।
देख्या जगत रु भेख, और ऐसा कुछ नांई ॥१०॥
ऐसा है कोई संत, सूरवां कहिये सादू ।
हरिरामा गुरुदेव, मिल्या पूरब पुन आदू ॥११॥
जो पावै दीदार, दुरस होय चरणां लागै ।
भर्म कर्म सब जाय, काल अघ दूरा भागै ॥१२॥
सिख कूं ज्ञान बताय, ब्रह्म के मांहि मिलावै ।
ऐसी औषधि लाय, जन्म का रोग मिटावै ॥१३॥
सुणिया था सुरलोक, देवता वायक पूगा ।
अधिक ज्योति परकास, अनंत जहं सूरज ऊगा ॥१४॥

मिटिया तिमिर अनेक, तेज परकास्या मांई ।
रामाकूं गुरूदेव मिल्या, एक सच्चा सांई ॥१५॥
ऐसा है गुरूदेव, हमारे शीश विराजै ।
जेती महिमा होय, गुरां कूं ऐती छाजै ॥१६॥

साखी

गुरूमहिगा सीखै गुणै, आपा लेह विचार ।
भजन करै गुरूदेव को, सो जन उतरै पार ॥१७॥
गुरू की महिमा रामदास, करता है दिनरात ।
सद्‌गुरूसा दूजा नहीं, सत भाखतहूं बात ॥१८॥

चौपाई

सद्‌गुरु समी नहीं पर दिखणा, सद्‌गुरु समा प्रेम नहिं, चखणा ।
सद्‌गुरु समा तीर्थ नहिं तिरणा, सद्‌गुरु समा और नहिं शरणा ॥१९॥
सद्‌गुरु समा धूप नहिं रूपम्, सद्‌गुरु समा नहिं तत्व अनूपम् ।
सद्‌गुरु समा पुण्य नहिं दाना, सद्‌गुरु समा ज्ञान नहिं ध्याना ॥२०॥
सद्‌गुरु समा जोग नहिं जग्गा, सद्‌गुरु समा और नहिं सग्गा ।
सद्‌गुरु समी कहत नहिं कहणी, सद्‌गुरु समी रहत नहिं रहणी ॥२१॥
सद्‌गुरु समा उडता नहिं गडता, सद्‌गुरु समा पढ्या नहिं पिंडता ।
सद्‌गुरु समा पिता नहिं माता, सद्‌गुरु समा नहिं तत्व विधाता ॥२२॥

सद्गुरु समा वीर नहिं बन्धू, सद्गुरु समा और नहिं सन्धू ॥
सद्गुरु बिना नरक में जावै, सद्गुरु बिना कहु कौन छुड़ावै ॥२३॥
सद्गुरु बिना कबहु नहिं छूटै, जहँ जावै जहँ जमरो लूटै ॥
सद्गुरु बिना बहुत फिर भटकै, जहँ जावै जहँ जमरो पटकै ॥२४॥
सद्गुरु बिना सर्व को ध्यावै, गोगा पाबू मात सरावै ॥
सद्गुरु बिना सर्व को जाणै, क्षेत्रपाल बहु भूत बखाणै ॥२५॥
सद्गुरु बिना सर्व को सेवै, धूप रूप सो बहु दिन खेवै ॥
सद्गुरु बिनां सर्व को जोवै, करामात ऋधि सिधि को रोवै ॥२६॥
सद्गुरु बिना एक नहिं सूजै, अनँत देवको फिर फिर पूजै ॥
सद्गुरु बिना बहु देव वखाणै, हद की बात सफल कर जाणै ॥२७॥
सद्गुरु बिना राम नहिं पावै, रसना कंठ किमु प्रेम मिलावै ॥
सद्गुरु बिना हृदय नहिं सूधा, निज्जनाम विन कमलजु ऊँधा ॥२८॥
सद्गुरु बिना नाभि नहिं आवै, श्वासोच्छ्वास कहो किमिलावै ॥
सद्गुरु बिन रगरग नहिं बोलै, अन्तर ध्यान कहो किमि खोलै ॥२९॥
सद्गुरु बिन अजपा नहिं जाणै, रोम-रोम रस किस विधि माणै ॥
सद्गुरु बिना वंक नहिं पीवै, कैसे मिलकर जुग-जुग जीवै ॥३०॥
सद्गुरु बिना पंच नहिं उलटै, काग वंश कहु किस विधि पलटै ॥
सद्गुरु बिना अधः नहिं जाणै, ऊर्ध्व कमल कहु किसविधि माणै ॥३१॥

सद्गुरु बिना मेरु नहिं छेदै, आकाश कमल कहु किसविधि भेदै ॥
सद्गुरु बिन अनहद नहिं वावै, त्रिवेणी तट कैसे न्हावै ॥३२॥
सद्गुरु विनां लिव्व नहिं लागै, ब्रह्मज्योति कहु किसविधि जागै ॥
सद्गुरु बिन दशमा नहिं जाणै, सहज समाधि किसीविध माणै ॥३३॥

साखी

सद्गुरु बिन सुधि ना लहै, कोटिक करो उपाय ॥
रामदास सद्गुरु बिना, सब जग जमपुर जाय ॥३४॥

चौपाई

कोटि कोटि बहु ज्ञान दिढावै, कोटि कोटि धुन ध्यान लगावै ॥
कोटि कोटि बहु देव अराधै, कोटि कोटि किरियां जो साधै ॥
तोहि गुरु गोविन्द विन मुक्ति न जावै, सद्गुरु बिना काल सबखावै ॥३५॥
कोटि कोटि तीरथ फिर आवै, कोटि कोटि असनान करावै ॥
कोटिक दै पृथ्वी परदिखणा, निज्ज नाम बिन प्रेम न चखणा ॥
तोहि गुरु० ॥३६॥
कोटि कोटि बहु तुला विसावै, सोना रूपा दान दिरावै ॥
और द्रव्य बहुतेरा देवै, सहसर नाम निशीदिन लेवै ॥
तेहि गुरु० ॥३७॥
कोटि कोटि जिग होम करावै, कोटिक ब्राह्मण न्योति जिमावै ॥

कोटिक गउवाँ दान दिरावै, कोटि कोटि बहु हेत लगावै ॥
तेहि गुरु० ॥३८॥

धर्म करे कन्या परणावै, दत्त दायजो कोटि दिरावै ॥
कोटि कोटि कन्या फल लेवै, सर्वभेष कूँ बहु धन देवै ॥
तेहि गुरु० ॥३९॥

कोटि कोटि जत सत्त कमावै, कोटिक तपस्या तप्प करावै ॥
कोटिक वरत करे बहुतेरा, पोत पहर लूटावत डेरा ॥
तोहि गुरु० ॥४०॥

कोटि कोटि ऋधि सिद्ध कमावै, कोटि कोटि भण्डार भरावै ॥
सदावरत बहुतेरा देवै, कानगुरूकूं निशिदिन सेवै ॥
तोहि गुरु० ॥४१॥

कोटिक कहत कहत बहु कहणी, कोटिक रहत रहत बहु रहणी ॥
रेचक कुंभक जोगजु साजै, ताटक ध्यान धरै मन छाजै ॥
तोहि गुरु० ॥४२॥

कोटि कोटि उडता बहु गडता, कोटिक पढ्या होय जो पिंडता ॥
कोटिक अगम निगम की सूझै, कोटि कोटि सूरा हुय जूझै ॥
तोहि गुरु० ॥४३॥

कोटि करै बारै पतसाई, नवाँ खंडां में नोबत वाई ॥

उदय अस्तलग अदल चलावै, विध्धिलोक सुरलौकां जावै ॥
तोहि गुरु० ॥४४॥
सप्तद्वीप लौ आँण सवाई, एक चक्रवर्ती ठकुराई ॥
एको सुक्ख कहीं नहिं भाया, फिर पाछा गर्भावासा आया ॥
तोहि गुरु० ॥४५॥
कोटिक ब्रह्मा विष्णु ध्यावै, शिव शक्ती सूं ध्यान लगावै ॥
और देव बहुतेरा सेवै, धूप रूप सो निशिदिन खेवै ॥
तोहि गुरु० ॥४६॥
चवदह भवन काल घर जावै, ब्रह्मा विष्णु महेश डरावै ॥
काल डरै अणघड़ सूं भाई, तासूं संताँ सुरति लगाई ॥४७॥

साखी

ता मूरत पर रामदास, बार-बार बलिजाय ॥
बिणज करे ता नामको, जाकूँ काल न खाय ॥४८॥

चौपाई

शून्य शिखर में हाट मंडाया, विणजण कूं व्योपारी आया ॥
हरि हीरों की धड़ी लगाई, निज्जनाम की गूण भराई ॥४९॥
पांच पचीस बलधिया लाया, गूण घाल अरू लाद चलाया ॥
सद्गुरु कहै चेला तुम जावो, काया पाटण विणज हलावो ॥५०॥

चेला चलकर लारै आया, दिल भीतर बाजार मंडाया ॥
चित्त चोहटै आण उतारी, फिर फिर जावै सब व्योपारी ॥५१॥
ततकी तराजू दिल की डांडी, उर भीतर हम हाट जु मांडी ॥
कड़दा करम परा कर पाखै, तत्व नाम एक हीर जु राखै ॥५२॥
अधः ऊर्ध्व विच रस्त चलाई, जमडाणी अब न्यारा भाई ॥
बिणजकरै विणजारों जागै, जमडाणी का जोर न लागै ॥५३॥
हाट मंडाई चौड़े चौहटे, चोर न मुसै लाट नाहिं वाटै ॥
विणजण कूं जग चलकर आवै, हीरा पारख कोई न पावै ॥५४॥
जौहरि होय सो पारख पावै, तन मन दे हीरा ले जावै ॥
हरि हीरां की नाव चलाई, जग भीतर में धुरा बंधाई ॥५५॥
धुर बोहरे अब मेल घणेरा, विणज करै अरु सुन में डेरा ॥
आपहि धुर आपहि है बोरा, आपहि विणजै आपहि हीरा ॥५६॥
हरि हीरों का भर्‌या भंडारा, विणजकरै है अगम अपारा ॥
विणज करै अरू सुनमें आया, सदगुरु सेती शीश निवाया ॥५७॥
शून्य शिकर में गुरू विराजे, रात दिनां नित नौबत वाजै ॥
सिख सतगुरु एकज मिल हूआ, विणज करै अब कबू न जूवा ॥५८॥

साखी

सद्‌गुरु समाजु को नहीं, इण जुग ही के मांहि ॥

रामदास सद्गुरु विनां, दूजा दीसै नांहि ॥५६॥
सूरत शुद्ध कबीरसी, दादू सा दीदार ॥
हरिरामा हरि सारसा, अनंत जोत अधिकार ॥६०॥
हरिरामा गुरू सूरवाँ, ज्ञान ध्यान भरपूर ॥
चौरासी सूं काढ़कर, किय काल जम दूर ॥६१॥
ऐसा साधू नाम दे, जैसा है हरिराम ॥
रामै कूं शरणै लियो, मेल निरंजन राम ॥६२॥
हरिरामा प्रह्लाद सा, जैसा रामानंद ॥
चरण परस चित चेतिया, मन में भया अनंद ॥६३॥
विष माया सब त्याग करि, हिरदै ध्यान लगाय ॥
रामदास निरभय भया, सद्गुरु शरणै आय ॥६४॥
सद्गुरु केवल रामदास, मिल्या निकेवल मांय ॥
हरिरामा सँत ब्रह्म है, सिख भी निरभै थाय ॥६५॥
चरणां चाकर रामियो, सद्गुरु है महाराज ॥
च्यार चक्क चवदै भवन ताहि परे संतराज ॥६६॥
सद्गुरु को मुख देखतां, पाप शरीरां जाय ॥
साधु संगति सत रामदास अटल पदी ले जाय ॥६७॥
गुरु गोविंद की महरतें, रामा पड़ी पिछाण ॥
सब संतों के ऊपरै, वारूं मेरा प्राण ॥६८॥
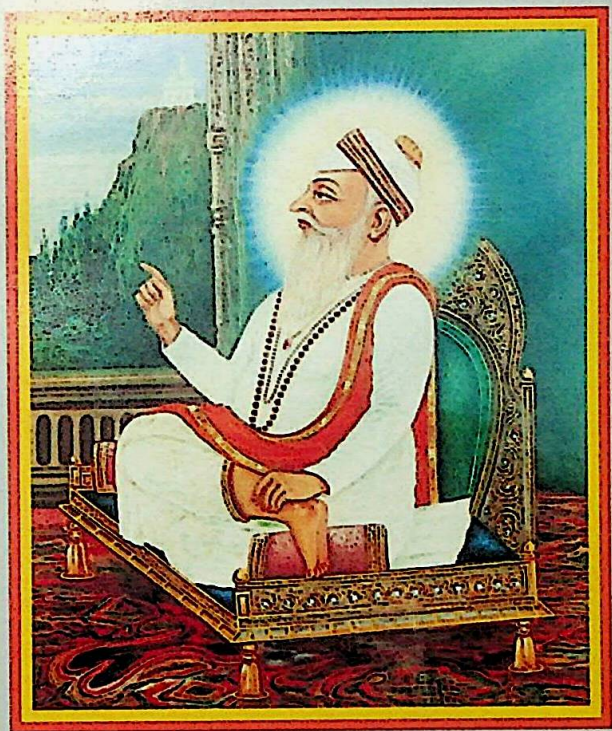
श्री १००८ श्री रामदासजी महाराज
रामस्नेहि सम्प्रदायाचार्य खैड़ापा (१)

दरसण दीठा रामियां, भाज जाय सब भर्म ॥
ऐसा गुरु हरिरामजी, परस्यां, काटे कर्म ॥६९॥
पूरण ब्रह्म विराजिया, ग्राम सिंहस्थल मांहि ॥
रामदास जन जाणसी, दूंजा कूं गम नाहिं ॥७०॥

–इति–

(२) अथ ग्रन्थ श्री भक्तमाल

साखी

मैं अबला हूं रामदास, आंधों अंत अचेत ।
तुम सद्गुरु हो शीश पर हमको करो सचेत ॥
रामदास की वीनती, तुम हो अगम अपार ।
भक्तमाल को भेव दो, सद्गुरु करौ जुहार ॥

चौपाई

सदगुरु मिल्या नाम निज पाया, सत्तशब्द को निशिदिनध्याया ।
हृदय कमल घर लीया वासा, बीज भक्ति मोहि उपजी आसा ॥
नाभि कमल में राम मिलाया, रोम-रोम में रंग लगाया ।
उलटि शब्द पश्चिम दिशि फिरिया, अधः ऊर्ध्व प्रेमरस झरिया ॥
मनवा उलटि अगम घर आया, सब संतन का दर्शन पाया ।
सब सँत मेरे शीष बिराजै, सत्त शब्द सन्तां मुख छाजै ॥

सब संतन को राम पियारा, भक्तमाल का करौ उचारा ।
रामनाम संपति सुखदाई, सब सन्ता मिल साख बताई ॥
रामनाम ध्यावै कुल मांई, सो बांधव है मेरा भाई ।
रामनाम को निशिदिन ध्यावै, आवागमन बहुरि नहिंआवै ॥
रामनाम को निशिदिन ध्यावै, अटल पद्द अमरापुर पावै ।
रामनाम को निशिदिन ध्यावै, दु:ख दारिद्दर दूर गमावै ॥
रामनाम से बहुता तिरिया, अनंत कोटि अन्नेक उधरिया ।
रामनाम की सुनिये साखा, अजामेल पुत्र जिन राखा ॥
रामनाम की क़हौं बड़ाई, अहिल्या को जु विमान चढ़ाई ।
रामनाम का मता अपारा, झींवर कुटुम्ब सहेता तारा ॥
रामनाम गजराज उधारे, सब सन्तन का काज सुधारे ।
रामनाम से शिला तिराई, पाणी उधर पाज बंधाई ॥
रामनाम केहा गुणा गाऊं, जुग-जुग भक्ति तुम्हारी पाऊं ।
रामनाम की महिमा भारी, मो अबला को तार मुरारी ॥
तीन लोक में राम धियाया, सो सन्त जु मेरे मनभाया।
रामदास को रामपियारा, जो सुमरै सो प्राण हमारा ॥

साखी

हरि की महिमा रामदास, कहिये कहा बनाय ।
अनंत कोटि नर उद्धरे, रामनाम लिव लाय ॥

छंद नीसानी

सद्‌गुरु स्वामी द्यो निजनामी निज ही नाम धियावन्दा ।
गणेश गरवा कानां सरवा ऋधि सिद्ध बुद्धि मिलावन्दा ॥
दश अवतारूँ ब्रह्म विचारूँ ररंकार मिल जावन्दा ।
पानी पवन रू धरनी अंबर चन्द सूर गुन गावन्दा ॥
नव भी नाथू बारह पंथू परमल परभू ध्यावन्दा ।
छऊँ भी जतियां सातों सतियाँ चेत जानि जुगजीवन्दा ॥
एको अक्षर मंडे मच्छर ओऊंकार उपावन्दा ।
लख चौरासी है अविनासी पूरण ब्रह्म समावन्दा ॥
है भी न्यारा प्रियतम प्यारा जाहिर जोगी जाणन्दा ।
कोटि अनन्तु मिले निरन्तु रोम-रोम रस माणन्दा ॥
है जुग चारू सन्त अपारू दास दीनता गावन्दा ।
हम कोड़ी कायर हरि सुख सायर उलटा अभर भरावन्दा ॥
थाह न पाया ध्यायमिलाया समदां बून्द समावन्दा ।
रामादासू सतगुरु पासू नमि-नमि शीश नमावन्दा ॥

साखी

सद्‌गुरु सेती वीनती, मनका मत्सर मेट ।
रामदास को दीजिये, भक्तमाल जस भेंट ॥

चौपाई

प्रथमहि नाम सदाशिव लीया। पार्वती को निज ततदीया ।
सो सुनि नाम सुवा ले भागा। उद्दरमाहिं राम लिव लागा ॥
बाहिर आइ बसे वन जाई। रामनाम से प्रीति लगाई ।
वेदव्यास बहु ज्ञान उपाया। राम-राम कहि उलटि समाया ॥
ब्रह्मा विष्णु रामसे रत्ता। कुबेर जोगी राम सुमरता ।
शेषनाग गुरुज्ञान विचारा। सहस मुखां से राम उचारा ॥
राम रसायन नारद पीया। ऋषिसनकादिक हरिगुण लीया ।
मारकंड लोमश ऋषि भाई। रामनाम से प्रीति लगाई ॥
गर्ग ऋषि जु राम से रत्ता। गौतम कागभुशुंडि सुमरता ।
जयदेव ऋषि की प्रीति पियारी। उद्धव हरि से लाईतारी ॥
पिप्पलाद ऋषि हरि हर ध्याया। ज्ञान पाय अज्ञान मिटाया ।
कुंभी ऋषि काम को जीता। काया गढ ले भया वदीता ॥
करणबंध ऋषि राखी काया। नाद बिन्द ले गांठ घुलाया ।
अगस्त्य ऋषि जुगे जग जीया। सात समंदका पाणीपीया ॥
भृगुजी ऋषि ब्रह्म को चीन्हा। विष्णुदेव का परचालीन्हा ।
सेवा करी श्याम से लागा। काल क्रोध भय अन्तर भागा ॥
नासकेत उद्दालक पूरा। आन मिल्या सुखसागर सूरा ।
ऋषि समीक भूमंडल गाया। रामनामको निशिदिन ध्याया ॥

ऋषि दालभ्य एक धुन धारी। सत्तशब्द से प्रीति पियारी ।
मुनि वशिष्ट समाधी सूरा। निशिदिन रहते हरी हजूरा ॥
ऋषिभदेव रामसे राता। निज्जनाम से कीया नाता ।
गुरू गांगेय राम गुण गाया। निज माईको भेद बताया ॥
विश्वामित्र हि ब्रह्म विचारा। रोम-रोम में राम उचारा ।
बाहुबल बलवन्ता हूवा। मन को जीति सन्तां मिल वूवा ॥
राजा भरत महा पटरानी। दोनों भक्ति निकेवल जानी ।
महावीर महा तत पाया। केवल होई मोक्ष पद पाया ॥
कैशौ कुंवर काम दल पाला। परदेशी सन्तां मिल हाला ।
चौबीस तिथंकर राम धियाया। केवल होई मोक्ष पद पाया ॥
भगवन्नाम निरंजन भेला। निज्जनाम से कीया मेला ।
काल जाल जमका डर नाहीं। भगवद मिल्या ताहि घर माहीं ॥
सिरियादे प्रह्लाद उधरिया। रामनाम ले कछु न डरिया ।
भीड़ पड़ी संतां पख आया। हिरण्यकशिपु को मार गुडाया ॥
सिंह रूप अवतार धारिया। तिलक दिया प्रह्लाद तारिया ।
कार्तिक स्वामी हनुमत सूरा। सीता लक्ष्मण राम हजूरा ॥
त्यागा राज भरत वन लीया। राम रसायन निशिदिन पीया ।
रिपुहन राम-राम गुणा गाया। मन्दोदरी विभीषण पाया ॥
तुलसीदास राम का प्यारा। आठों पहर मगन मतवारा ।
भूत मिल्या हरिभेद बताया, हनूमान हरि चरणां लाया ॥

राजा जनक राम का प्यासा। खट दिलीप प्रेम परकासा ।
परीक्षित प्रेम पियाला पीया। जन्मेजय निजतत ले जीया ॥
पारायण सुनि के पद पाया। आवागमन बहुरि नहिं आया ।
रुक्मांगद पुंडरीक उधरिया। राजा शिवी सत्य से तिरिया ॥
गूंड राज गोविन्द गुण गाया। सुखसागर में सहज समाया ।
मोहमर्द निरमोही राजा। दीठा जाय अगम का छाजा ॥
परजा दीप परम तत पाया। हाकम सन्ता चरण लगाया ।
कटिया करम राम को गाया। दिने पैंतीसां मोक्ष मिलाया ॥
मोरध्वज का मता कंरारा। त्यागी देह राम का प्यारा ।
सदावर्त दीया सुख पाया। सन्तन को बहु शीश नवाया ॥
प्रेमभक्ति सूं प्रीति लगाई। वैकुंठा चढ़ि नौबत वाई ।
जन अमरीष रामगुण गाया। चरणामृत लेकर सुख पाया ॥
दुरवासा ऋषि शापन आए। उलटा दुःख उसी को धाए ॥
तप्ति लगी तन में बहुभारी। साहिब सेती अरज गुजारी ॥
हरिजन हर को बहुत पियारा। भक्त काज़ धरिया अवतारा ॥
उलटा ऋषि लगाये पाए। सन्तनका कारज सुधराए ॥
द्विजकन्या दिल माहीं दरस्या। उलटी मिली अगम घर परस्या ॥
राजा हरिचंद सती कहाया। सत्त न हार्‌या हाट विकाया ॥
बलि जग माहिं जाग रचाया। बावन रूप छलन कोआया ॥

बलि नहिं छलिया आप छलाया। राज पयालां निश्चै पाया ॥
पांडव पांच राम के प्यारा। कुन्तां माता अगम अपारा ॥
पांडव जग में जाग रचाया। चार कोंटका ऋषि बुलाया ॥
जाग जिमिया शंख न बोला। स्वामी काहिन अन्तर खोला ॥
स्वामी भेद सन्त का दीया। पांडव जाय बाल गुण लीया ॥
बालमीकि की शोभा सारी। कीन्हों जाग संपूरण भारी ॥
दूजा बालमीकि इक हूआ। रामनाम कहि निरभै वूआ ॥
शतकोटी रामायण कीन्ही। स्वर्ग मृत्यु पातालां दीन्ही ॥
निश्चै नाम एक की आसा। रामनाम कह ब्रह्म विलासा ॥
द्रौपदी प्रेम पियाला पीया। चीर बधार परम सुखलीया ॥
विदुर जु भेवभक्ति का पाया।नाम निकेवल निशिदिन ध्याया ॥
बथवै हन्दा शाक बनाया। साहिब को परसाद कराया ॥
साहिब साधु प्रीति पियारी। कौरव हार गये अहंकारी ॥
सूरदास सन्तां सुखदाई। रामनाम से प्रीति लगाई ॥
कालू कीर राम का प्यारा। रोम-रोम में लीया झारा ॥
संत हरिदास सुरति उलटाई। देवहुति भूमि सातवीं पाई ॥
ध्रुवजी ध्यान धणी से लाया। अटल पदी अमरापुर पाया ॥
भक्त वंश में सन्त जू सूरा। वैकुंठा मिलिया जन पूरा ॥
रतनदास राम सों रत्ता। रोम रोम में लागा तत्ता ॥

नरसीदास राम का प्यासा। प्रेम भक्ति पाई परकासा ॥
साँई के संत हुआ हजूरी। कर माहेरो आशा पूरी ॥
तिलोकचन्द की भक्ति करारी। लेखण स्याही आप मुरारी ॥
सुदामा का दारिद्र हरिया। रामनाम ऐसा गुण करिया ॥
प्रेम भीलणी भक्ति पियारी। बोर पायकर शिक्षा बधारी ॥
सरिता नीर निरमला कीया। शबरी रघुवर् टीका दीया ॥
सर जहं ऋषि सतगुरु पाया। ऋषि मिल हरिदर्शन को आया ॥
शबरी भक्ति भली पण कीन्हीं। सब ऋषियां मिल माहें लीन्हीं ॥
ईश्वर बाप गधाकूं कीया। पिता पुत्र खोला में लीया ॥
नेमनाथ नारायण ध्याया। भेदी भेद ब्रह्म का पाया ॥
आदिनाथ मिलिया अविनाशी। केवल हुआ एक सुखराशी ॥
गनिका गुरु सूवा को पाया। सत्त शब्द को निशिदिन ध्याया ॥
रंका बंका राम पियासा। नामा छींपा हरिका दासा ॥
देवल फेर रू दूध पिलाया। श्वान रूप हुइ भोजन पाया ॥
परचा पूगा परज पतीनी। दशधा भक्ति नामदे कीनी ॥
दत्त दरश दिल भीतर पाया। गुरु चोबीसूं ले गुण गाया ॥
निश्चय एक नाम की आशा। रामनाम कह ब्रह्म विलासा ॥
विष्णुस्वामी माधवाचारा। सत्त शब्द ले किया पसारा ॥
रामानुज निम्बारक भाई। कलि जुग मांही भक्ति हलाई ॥

राघवानन्द राम का प्यारा। रोम-रोम में लिया झारा ॥
रामानन्द मुख राम उचारा। निर्गुण भक्ती किया प्रचारा ॥
चार संप्रदा बावन द्वारा। हूआ शिष उजियागर सारा ॥
भावानंद अनंतानंद दासा। रामनाम से लाई आसा ॥
नरहरिनन्द निकेवल लीया। स्वामी गालव हरिरस पीया ॥
धनै सुरसरै सुरति लगाई। रामनाम मीठो रे भाई ॥
सन्तन के मुख बीज वुहाया। खेती माहिं नाज निपजाया ॥
दास कबीर मगन मतवारा। सहज समाधि वणी इक धारा ॥
सब संता में चकवै हुआ। ब्रह्म विलास कबू नहिं जूआ ॥
हुइ विणजारा बालद लाया। सदावर्त दे सन्त सराया ॥
कमाल कमाली हरिगुण गाया। सुखसागर में सहज समाया ॥
कबीर कमाल जमाल जमल्ला। शेख फरीद सुमरियाअल्ला ॥
श्री सहस्त्रास्य गुरु गम पाई। बहतर शिष मिल पद्धति लाई ॥
सेन सुखा योगानंद भाई। आय मिल्या सुखसागर माई ॥
सीता पीपै प्रेम पियारा। रामनाम रटिया एक धारा ॥
गेले मांहि किया सिंह चेला। रामनाम से बांध्या बेला ॥
झांपापात समंद में लीन्हीं। छापां आय परगटी कीन्हीं ॥
राम-राम रैदास उचरिया। रोम-रोम में नीझर झरिया ॥
काढि जनेऊ विप्र जिमाया। शालग स्वामी मुखाँ बोलाया ॥

पद्मावती प्रेम रस पागी। सब संग छाडि राम लिव लागी ॥
विष्ष तणां चरणामृत दीया। साहिब सहजा अमृत कीया ॥
अमृत उलटि मिल्या घट माहीं। जन रैदास सत्तगुरु पाहीं ॥
कुल मारग को काने त्याग्या। मीरां चली गुरां की आज्ञा ॥
रतना करमां मीरां बाई। झाली प्रीति राम से लाई ॥
फूली प्रेम पियाला पीया। सद्गुरु से मिल निज तत लीया ॥
थांमण मनको थिर करि राखा। रामनाम भजिया सुण साखा ॥
धर्मदास ध्यान करि ध्याया। अनहद नाद अखंडित वाया ॥
टीलमदास लगावै तत्ता। लाहूदास राम से रत्ता ॥
ज्ञानी ज्ञान चिह्निया निर्गुण। माया दूर करी सब दुर्गुण ॥
गेबीराम गैब से मिलिया। सब सन्तां सुखदाई भिलिया ॥
गोविन्दराम राम गुण गाया। केवलदास निकेवल पाया ॥
अल्हैदास अगम की आसा। भक्ति पदी में कीन्हा वासा ॥
कोल्ह गैस कुलशेखर सारा। मुकुन्ददास मिल्या ततसारा ॥
मुरलीदास मलूका बेई। आन मिले सुख सागर तेई ॥
चंदरै चित चेतन करि जाण्या। सथरै रोम रोम रस माण्या ॥
मक्खू भीड़ पीया रस वंकी। चवड़े चपट मंड्या चित चोकी ॥
चित से चित चेतन करि ध्याया। आतम में परमातम पाया ॥
हीरदास हरि का हितकारी। सत्य शब्द से प्रीति पियारी ॥

कान्हरदास काम को त्यागा। रामनाम से निशिदिन लागा ॥
मगनीराम मगन में रहणा। आठ पहर नित राम सुमरणा ॥
जंगीराम जुक्ति करि जाना। ब्रह्म चीन्ह निज तत्व पिछाना ॥
बालकदास ब्रह्म व्यापारी। उलटे आइ लगाई यारी ॥
केशवदास काम कुण काजी। राम राम भजिया हुइ राजी ॥
हरचंददास चरणा चित लाया। सद्‌गुरु सेती प्रेम मिलाया ॥
चेतनदास चेत जुग जीया। आतम राम रसायन पीया ॥
मोहनदास मानगढ़ मारा। रोम रोम में राम पुकारा ॥
मानादास महारस पीया। उलटे आइ अगम सुख लीया ॥
दास मुरारि मिल्या तन मांए। तिरवेणी चढ़ि ध्यान लगाए ॥
संत शिवदास श्याम से सच्चा। सत्तशब्द से निशिदिन रच्चा ॥
बाणारसी रामसो लागा। उलटा मिल्या अगम घर आगा ॥
दईदास दिल मांही दरसा। रोम रोम में अमृत बरसा ॥
जनपयहारी परिपक हुआ। ब्रह्मविलास कबहु नहीं जूआ ॥
कृष्णदास राम गुण गाया। वे गलते का महन्त कहाया ॥
अगर कील्ह हूआ उजियागर। अनुभव वाणी मिल्या सुख सागर ॥
वन्दर नाभै हरि गुण गाया। भक्तिमाल कर सन्त सराया ॥
सम्मन सेऊ प्रेम पियारा। राम-राम रटिया इकधारा ॥
घाटमदास जाति का मेणा। सदगुरु सेती मिलिया सेणा ॥

डाला भर गेहूं का लाया। सन्तन को परसाद कराया ॥
कीता मिल्या राम से राजी। रोम रोम में झालर बाजी ॥
तापै तपस्या करी करारी। लोधिये जाय लगाई यारी ॥
नानक गुरु नाम निज पाया। चार कोंट में पंथ हलाया ॥
ईश्वरदास राम का प्यारा। हरिगुण कथिया अगम अपारा ॥
आशोदास अगम की आसा। कनक दंडवत की बहुदासा ॥
परमानंद आनन्द दुई भाई। रामनाम से प्रीति लगाई ॥
धरि अवतार बूढण हुइ आया। दादू को निजनाम सुनाया ॥
दादूदास राम का प्यारा। चार पन्थ ले किया पसारा ॥
बावन शिष्य हुए उजियागर। अनुभव बानि मिले सुखसागर ॥
दास गरीब गुरु घर आया। भेदी भेद ब्रह्म का पाया ॥
रज्जब पिया राम रसभारी। सद्गुरु सेती प्रीति पियारी ॥
प्रीति लगाय प्रेम रस पीया। नाम निकेवल निशिदिन लीया ॥
सुन्दरदास मिल्या सुख मांए। नाम निकेवल निशिदिन ध्याए ॥
मुक्ति पंथ का पाया मारग। दादूराम मिल्या गुरु तारग ॥
पीथे प्रेम पियाला पीया। गोरख जोगी दरशण दीया ॥
जो गोरख जोगी तुम आदू। उर भीतर में है गुरु दादू ॥
लालदास लागा गुरु घाटी। कीन्हीं दूर भर्म की टाटी ॥
नान्हूराम निकेवल लीया। जन गोपाल जानि जग जीया ॥

दासप्रयाग परम पद पाया। जैमलदास नितो नित ध्याया ॥
घडसी टीलमदास फकीरा। सन्तदास मिलिया सुखसीरा ॥
बखना बाजींदा हरिदासा। सदनै राम भज्या इक सासा ॥
शोभाराम रामगुण गाया। हरिव्यासी हरि मांही समाया ॥
परशुराम राम मतवारा। सब सन्तों से मिलिया प्यारा ॥
ततवेता निज तत्व पिछाना। घंमडीराम रामकूं जाना ॥
वीरम त्यागी तन मन त्याग्या। राम राम भजिया गुरु आज्ञा ॥
हरदासी हरि से हित लाया। राम नाम को निशिदिन ध्याया ॥
खोजी खोज पकडिया सेंठा। सब सन्तां माहीं मिलि बेठा ॥
केवल कूबा ब्रह्म विलासी। उलटा अलख मिल्याअविनाशी ॥
खेमदास की आशा पूरी। निशिदिन राखा रामहजूरी ॥
शंकर स्वामी सुमिरण कीया। अजपाजाप राम रस पीया ॥
गोपीचन्द भरतरी पूरा। अनहद अखंड बजाया तूरा ॥
गोंरखनाथ मछन्दर जोगी। रग रग भेद लिया रस भोगी ॥
कोटि निनाणू राजा हूआ। गाया राम अगम घर बूआ ॥
हरीदास पूरा गुरु पाया। नाम निरंजन पंथ कहाया ॥
बारह शिष्य मिले सुखमांई। पादू माता चेली क्राई ॥
द्वादस पन्थ सन्त बड भागी। छाप निरंजन माया त्यागी ॥
अंजन त्यागि निरंजन ध्याए। तातें निरँजन पन्थ कहाए ॥

जगजीवन तुरसी अरु सेवा। राम रसायन पीया मैवा ॥
भुवनै भेव भक्ति का पाया। खाँडे खेरतणे लोह वाया ॥
राजा जसू जुक्त करि जाना। ब्रह्म चीन्ह निज तत्व पिछाना ॥
जगतसिंह की प्रीति पियारी। राव पलटि चरणां मतिधारी ॥
देवे पंडे प्रीति लगाई। पत्थर मूरति मूँछ अणाई ॥
गूदड़ रूप होय हरि आया। सन्तदास सँत दरशण पाया ॥
किरपा करी नाम निज दीया। सास उसास एक ध्वनि लीया ॥
सन्तदास मिलिया सुख माई। तिरबेनी चढ ध्यान लगाई ॥
अनुभव शब्द सन्त बहु बोल्या। भक्ति पन्थ का पड़दा खोल्या ॥
गांव दांतडे का सँतवासी। चारों कोंट भक्ति परकासी ॥
बालकदास राम का प्यारा। प्रेम परम तत किया पसारा ॥
गिरधरदास 'रु खेमकुमारी। परमानन्द लगाई यारी ॥
जाहर जोगी जग में जीता। शूरवीर सँत भया वदीता ॥
दरियासा दिल माही दरसा। उलटा मिल्या अगमघर परसा ॥
सहज समाधी सन्त कहाया। प्रेम पियाला भरि भरिपाया ॥
किसनदास काम को मेट्या। उलटा चढ्या अगम घर भेट्या ॥
नाद बिन्द में संतजु सूरा। दशमद्वार निज परसत नूरा ॥
सुखरामा. सतशब्द संभाया। मनको ले खुरसाण चढ़ाया ॥
कर्म काटि सब काने कीया। दीठा जाए अगम का दीया ॥

नानकदास नाम निज पाया। श्वासोश्वास नितो नित ध्याया ॥
पूरणदास प्रेम रस पीया। सद्गुरु संग मिल जुग जुग जीया ॥
मोहनदास मिल्या सुख मांई। तिरवेनी चढ़ि ध्यान लगाई ॥
सेवादास मिल्या सुखमांही। वैकुंठां चढ़ि नौबत वाई ॥
सदाराम शून्य का वासी। परम ज्योति सहजां परकासी ॥
घमडीराम घमंड में रत्ता। रोम रोम में लागा तत्ता ॥
चरणदास चरणां चित लाया। सद्गुरु सेती प्रेम मिलाया ॥
जैरामा जन मिलिया जाही। काल जाल जमका डर नाहिं ॥
खेतादास खरा हुई लागा। उलटा मिल्या अगम घर आगा ॥
हेमदास हरि का हितकारी। सत्तशब्द से प्रीति पियारी ॥
हरीदास सन्त जु बडभागी। उलटी सुरति निरन्तर लागी ॥
सांवलदास मिल्या सुखमांई। पारब्रह्म परमानंद पाई ॥
दास पंचायन परिपक हूआ। हदको त्यागि वेहदको बूआ ॥
टीलमदास राम का प्यारा। रोम रोम विच लीया झारा ॥
पच्छिम दिसा मुसाफिर आए। जैमलदास भणत बतलाए ॥
ता सेती जैमल जल पाया। जब बालक को संग बुलाया ॥
सुण रे बालक बात हमारी। तोको दाखूं गुंझ हृदारी ॥
गेलै में गुरुज्ञान सुणाया। योग सहित निज नाम बताया ॥
जैमलदास जानि जुग जीया। आतम राम रसायन पीया ॥

पंचग्राही के महंत कहाये। सब सन्तन में सहज समाये ॥
ब्रह्मध्यान सुणियो सुधि पाई। एको नाम सत्य है भाई ॥
जबसे रसना राम धियाया। कंठकमल में प्रेम मिलाया ॥
हृदयकमल धमकार सुणीजै। चाली सुरति सद्गुरू कीजै ॥
जैमलदास सत्तगुरु पाया। जद मनवा मेरा पतियाया ॥
हरिरामा हरिका हितकारी। सहज समाधि बनी अतिभारी ॥
ब्रह्म विलासी हरिजन सूरा। शिष शाखा मिल हुआ पूरा ॥
सत्य शब्द ले किया पसारा। सप्तद्वीप नवखंड विस्तारा ॥
निज्ज नाम की नाव चलाई। तारक मंत्र भक्ति अति भाई ॥
चांपा माता चित करि पीथा। उलटे आइ अगम सुख लीया ॥
रोम रोम सहजां लिव लागी। दास बिहारी मिले बड़ भागी ॥
रुखियांबाई रामपियारी। अनहद अखंड लगाई तारी ॥
दासनरायण अमी धियाया। आदूराम राम गुण गाया ॥
लक्ष्मणदास राम लिव लागी। ज्ञान विचार भये वैरागी ॥
दईदास गुरुज्ञान संभाया। मनको ले गुरु चरण चढ़ाया ॥
सब सिक्खां संपति सुखदाई। सद्गुरु सेती प्रीति लगाई ॥
गाम सीहंस्थल सद्गुरु मिलीया। रामदास का अन्तर भिलिया ॥
सद्गुरु ब्रह्म एक है साधो। रामनाम निशिदिन आराधो ॥
रामदास सन्तां शरणाई। भक्तमाल ले शीश चढ़ाई ॥

भक्तमाल भगवद मन भाई। अनंत कोटि मिलिया इन माई ॥

साखी

रामदास रंग से मिल्या, सुन्दर सुख के माहिं ।
सद्गुरु है हरिराम जी (चांपा) माता सहज समाहिं ॥
सहज मिल्या गुरु घाट में, सुखसागर की तीर ।
सब सन्तन में मिल रह्या, चुग्या नाम निज हीर ॥

छंद अर्धभुजंगी

हंसै हीर पाया नितो सहज ध्याया। गदो कंठ लागी चलो धुन्न आगी ॥
हृदै जाय हिलिया मनोदेव मिलिया। लगी प्रीति प्यारी चलै गंगभारी ॥
नाभीद्वार आया सतो पद्द पाया। रोमा लिव्व लागा सोहं हंस आगा ॥
ररूं रंग राता मनो मग्न माता। पूर्व फेर भाया पताले लगाया ॥
उलटि मन्त्र आगा अगम देश लागा। वंकी रस्स पीया जुगे जुग्ग जीया ॥
तीनूं गढ्ढ जीता चौथे मन्त्रमीता। चँदै सूर मेला इके गेह भेला ॥
पंचू एक वाटी मिल्या ज्ञान घाटी। पंचू घेर आया मुक्ति द्वारा पाया ॥
अक्षय तूर बाजे गगन अंबु गाजे। वणी प्रेम वरषा मिल्या आदि पुरुषा ॥
मिले अव्विनासी टलीकाल पासी। अलक्षेक पाया टली काल छाया ॥
रमे सन्त सारा चलै सहस धारा। पिया नीर मीठा अगम सुख दीठा ॥
लिया पीव फेरा किया सहज डेरा। लगी प्रीति प्यारी सुषुम सहज यारी ॥

ब्रह्म भेव पाया अटल मट्ठ छाया। हुआ जीव जोगी लिया रस्स भोगी ॥
पंखा विन्न हंसा उड़े मिल्ल अंसा। विना चंचु मोती चुगे ओत पोती ॥
विना पेड़ तरवर बिना पात छाया। विना चंचु सूवे अगम फल्ल खाया ॥
विना पाज सरवर विना नीर भरिया। विना मेघ वर्षा अखंड इन्द झरिया ॥
विना वाग वाड़ी फुल्या वन्न सारा। विना घाट नदियां पिवै ढार भारा ॥
विना दोष देवा करी जाय सेवा। विना नीव देवल पुज्या एक देवा ॥
विना तेलबाती जगै महल दीया। विना हाथवाजा अखंड लाग रहिया ॥
विना नारि पुरुषा मिल्या गेहवासा। विना भोग सेजां बंधी जाय आसा ॥
विना मात पित्ता इकोराम राया। अनंत कोटि साधू सबे मांहि आया ॥
कहो वात ऐसी सुणो पुरुष नारी। सहजे मिलाय हुआ ब्रह्मचारी ॥
अनंत कोटि साधू सबे माहि आई। इकोनाम नित्यं निकैवल्ल ध्याई ॥

साखी

अनंत कोटि नर उद्धरे, रामनामं लिव लाइ ॥
भक्त पदी में रामदास, सहजां रहे समाइ ॥
ॐकार ते ऊपना, दृष्टि कोट आकार ।
वाके ऊपर रामदास, ररंकार ततसार ॥
ॐकार उत्पति भई, धर अंबर कैलाश ॥
वाके ऊपर रामदास, अलख पुरुष का वास ॥

अधर अखण्डी अलख है, रूप रेख नहीं रंग ।
रामदास जहाँ मिल रह्या, सद्गुरु हंदे संग ॥
अजब झरोखे अगम के, निरत ब्रह्म का वास ।
ॐकार अजपा नहीं, नाद बिन्द नहिं सास ॥
चन्द्र सूर नहिं संचरे, पाणी पवन न जांहि ।
धर अंबर भी वहँ नहीं, रामा जिस घर मांहि ॥

॥ इति श्री भक्तमाल सम्पूर्णम् ॥

साधू सहै कुजाब, धरा सह खूंद रे ॥
बाढ़ सहै वनराय, समंद सह बूंद रे ॥
सूरा झेलै बाण खड़ग की धार रे ॥
हरि हां यूं कहै रामादास, एह निज सार रे ॥
– श्री रामदासजी म० की वाणी

अथ श्री दयालुदास जी महाराज के अनुभव शब्द

(१) ग्रन्थ रक्षा बत्तीसी

साखी

नमो राम गुरुदेवजी, जन त्रिकाल के वन्द ।
विघ्न हरण मंगल करण, रामदास आनन्द ॥

दोहा

राम इष्टआधार बल, राम आस विश्वास ।
राम भरोसे राम रह्या निर्भय रामादास ॥१॥
राजतेज नटखट्ट में, मुड़ै न हरि का दास ।
चरण कमल छाड़ै नहीं, रहै सत्तगुरु पास ॥२॥
कहा दोखी सोखी कहा, कहा देश परदेश ।
रामदास के रामजी, रक्षक सदा हमेश ॥३॥
शस्त्र अस्त्र छल छिद्र जो, मूठ मंत्र रिपु घात ।
व्याल सिंह दामनि दमक, रक्षा राम सु नाथ ॥४॥

श्री १००८ श्री दयालुदासजी महाराज
रामस्नेहि सम्प्रदायाचार्य खैड़ापा (२)

भवन गवन परबत बनी, अवघट घाट अनेक ।
रामदास के राम जी, आसपास बल एक ॥५॥
कूप खाड़ ज्वाला अगनि, निशा चोर भय धाड़ ।
रामदास के रामजी, अंधधुंध मंद वाड़ ॥६॥
समयकाल पावक प्रलय, शीत उष्ण मुर ताप ।
रामदास के रामजी, रक्षक आपो आप ॥७॥
राहु केतु सूरज सुतन, अवनि पुत्र ग्रहघात ।
विगरी में सखरी करण, तिगरी मेंटण तात ॥८॥
तात मात हित प्रसन्नता, रामदास के राम ।
समर्थ प्रतिपालक सदा, खान पान आराम ॥९॥
चिंता दीनदयालु को, मोमन सदा आनंद ।
जायो सो प्रतिपालसी, रामदास गोविन्द ॥१०॥
विघ्न विदारण रामजी, आनंद करण अनेक ।
रामदास मन वच करम, तारण कारण एक ॥११॥
दिवस मास जोगिनि दशा, गज अंतर कृत सोंहि ।
नखत जोग वाहण असम, राम इच्छा सुख मोहि ॥१२॥
लगन दुघड़ियो शुभ अशुभ, रामवार व्रत मान ।
दिशाशूल सन्मुख चन्द्र, कहा साँवण पर ज्ञान ॥१३॥
ऊठत बैठत जागतां, सोवत स्वप्ने मांहि ।
राम धणी प्रेरक सदा, रामदास डर नांहि ॥१४॥

मंडप मंड अधार इक, घट विच आतम राम ।
प्रगट पिंड रक्षाकरण, रामदास विश्राम ॥१५॥
सब व्यापक पूरण कला, नमस्कार भगवंत ।
राम इच्छा विचरत जहाँ, राम राय के सन्त ॥१६॥
दशौं दिशा आनन्द अगम, चिदानंद भगवान ।
रामदास के रामजी, चितवन जीवन प्रान ॥१७॥
स्वर्ग मृत्यु पाताल जो, वा सुर नर अरु नाग ।
रामरक्षा सर्वज्ञ सुदृढ़, रामदास वड़भाग ॥१८॥
आधि व्याधि मेटण सकल अकल अखंडी देव ।
रामदास ता आसरै, सुर विरंचि कर सेव ॥१९॥
सेव देव मूरती धणी, हरि आचार विचार ।
मंत्र जाप पूजा परम, नित्य नियम गुणसार ॥२०॥
तीरथ व्रत एकादशी, रामदास के राम ।
रामपंथ संस्थान निज, क्षेत्रधाम परणाम ॥२१॥
रामधारणा राम मुख, राम हमारै ध्यान ।
राम संप्रदा वैष्णव, पूरण ब्रह्म ज्ञान ॥२२॥
तिलक छाप माला मंत्र, नर नारायण भेष ।
मन्दिर शालग्राम यह, पूजा परम विशेष ॥२३॥
राम बोलाऊ साथ मम, सदा संगी सुखरास ।
सजन बंधु बेली कुटुंब, रामरतन धन पास ॥२४॥

राम आसरो राम पख, दूजा बल नंहि कोय ।
पावन पतित दयालुजी, ता शरणै सुख होय ॥२५॥
शरणागत प्रतिपालना, पावन पतित कितान ।
रामदास विश्वास यह, करणी दिश हैरान ॥२६॥
आथी पोथी रामजी, उद्यम राम रमाय ॥
राम दिशावर देश मम, रामाज्ञा सोइ पाय ॥२७॥
रामाज्ञा आवत सोइ, रामाज्ञा सोई दास ।
रामभावना प्रसिद्धता, भवेत रामादास ॥२८॥
ज्ञान भक्ति वैराग्य सिधि क्रिया जोग गुण आद ।
रामा सता आसक्तिता, वाणी विमल अगाद ॥२९॥
मस्तक पर गुरुदेवजी, हदै विराजै राम ।
रामदास दोनूं पखां, सब विधि पूरण काम ॥३०॥
श्वास श्वास दम दम विचै, रक्षक राम दयाल ।
रामा राम उचारतां, कदै न व्यापै काल ॥३१॥
रक्षा बत्तीसी रामकी, जानत हरि गुरु दास ।
रामसनेही रामदास, आनंद अगम विलास ॥३२॥

-इति-

(२) ग्रन्थ करुणा सागर

साखी

नमो राम गुरुदेवजी, जन त्रिकाल के वन्द ।
विघ्न हरण मंगल करण, रामदास आनन्द ॥

दोहा

राम गरीब निवाज को, मोहि बड़ो विश्वास ।
जग जामी पालन जगत, सब की पूरै आस ॥१॥
शरणाई पंजर विजय, ऐसा समरथ साम।
दीनबंधु आनन्द ता, परमेश्वर परणाम ॥२॥
हूं बंदों जाकूं सदा, सब की सुणै पुकार ।
अज्ज कीट पर्यन्त लों, भय भंजन भरतार ॥३॥
निर्बल दुखित अराधियो, प्रगट्यो तहँ परमेस ।
वृद्धा तरुणा भेद नहिं, कहा ध्रुव बालक वेस ॥४॥

छंद सारसी

ध्रुव वन सिधार्‍यो वचन मार्‍यो ध्यान धार्‍यो एक ए ।
तजि पान नीरू महाधीरू परा पीरू पेख ए ।
सब ब्रह्म मंजू उरस मंजू सुरत रंजू ताम ए ।

ऐसा गोविंदू कृपासिंधू दीनबंधू राम ए ।
जी दीन बन्धू० ॥५॥

खुल्ले कपाटू विकट घाटू पवन वाटू थक्क ये ।
डुल्ले विराटू शोक काटू भक्त ठाटू शक्क ये ।
षटमास मांई मिले सांई अचल पांई धामये ।
ऐसा गोविंदू० ॥६॥

प्रह्लाद गायो असुर दाह्यो बहु रिसायो मार ये ।
सर्पां खवायो विष्ष पायो गिरि गुरायो जार ये ।
हाथी चुवायो सिंधु बुहायो जहँ जिवायो नाम ये ।
ऐसा गोविंदू० ॥७॥

कोपे करालू अंध जालू बंध बालू बोल ये ।
सबमें गोपालू है दयालू मारडालू कोल ये ।
थंभे विचालू तत्तकालू विरदवालू आम ये ।
ऐसा गोविंदू० ॥८॥

नक्खां विदारे उदर फारे असुर मारे आप ये ।
भक्ती वधारे संत सारे दुःख म्हारे काप ये ।
केतान तारे यों उबारे सर्व थारे काम ये ।
ऐसा गोविंदू० ॥९॥

देखो अरुण पंगू गिरि उलंगू मनी मंगू सिद्ध ये ।

कर नाश रक्खू किये नक्खू दीन अक्खू तद्द ये ।
"इक गिद्ध गाधू किये साधू दीध आदू धामये ।"
ऐसा गोविंदू० ॥१०॥

"शवरी सदाई भक्ति भाई ऋषि नँवाई शीस ये ।
शिल्ला तिराई नारि थाई नाव मांई बीस ये ॥
सूवा पढ़ाई पाप दाई गती वाई पाम ये ।
ऐसा गोविन्दू० ॥११॥

इक असुर बइयूँ शरण लइयूँ चिरंजइयूँ भाख ये ।
ता सुक्ख दइयूँ मोख भइयूँ दोष नइयूँ साख ये ।
"भृत कीश कइयूँ भालू सइयूँ प्रीति पइयूँ जाम ये ।
ऐसा गोविन्दू० ॥१२॥

"दुष्टी अशन्नू वेद छिन्नू बहु रुदन्नू अज्ज ये ।
हा हा विषन्नू हुय प्रसन्नू धारि तन्नू कज्ज ये ॥
मच्छा हयग्रीवूं भक्ति सीवूं निगम क्रीवूं ठाम ये ।
ऐसा गोविन्दू० ॥१३॥

वरदान पाए शिव रिझाए भस्म भाए विक्करू ।
महाकष्ट पाए ऊठधाए दीन थाए शंकरू ।
शिवा सवाए आप आए हत्यो ताए छाम ये ।
ऐसा गोविन्दू० ॥१४॥

क्रीड़ा समंदू गज्ज अंदू ग्राह फंदू रच्च ये।
करष्यो गयंदू डूब जिंदू शूंड मंदू सच्च ये।
ररो कहंदू हरि हरंदूं मेटि द्वंदू ब्राम ये।
ऐसा गोविन्दू० ॥१५॥

द्विज भयो वेलू अजामेलू कामकेलू बाम ये।
जमदूत खेलू कालवेलू कंठमेलू ग्राम ये।
सुत हेत हेलू नाम लेलू कर उबेलू साम ये।
ऐसा गोविन्दू० ॥१६॥

लाखा गृहाए जालदाए पांडुमांए राख ये।
द्रोही खपाए समरसाए विजयताए भाखये।
दोषण मिटाए पुराण गाए सखा स्वाए भाम ये।
ऐसा गोविन्दू० ॥१७॥

सभ्भा मंझारी दुष्ट ख्वारी कर उघारी काज ये।
हा हा पुकारी पांडु नारी लाज म्हारी आज ये।
अम्बर वधारी प्रीति पारी कष्ट टारी बाम ये।
ऐसा गोविन्दू० ॥१८॥

इक द्विज्ज दीनू रोर भीनू प्रीति कीनू कान ये।
मन वांछ लीनू पुर नवीनू अभय दीनू दान ये।
धिन सुरतदेवूं भक्तिभेवूं सिद्ध सेवूं काम ये।
ऐसा गोविन्दू० ॥१९॥

विद्दुर सदाई प्रेममाई भक्तिभाई शुद्ध ये ।
छिलका खवाई वाह लुगाई प्रसन्नताई तद्द ये ।
राजा भुंजाई तजी सांई यहां न लाई दाम ये ।
ऐसा गोविन्दू० ॥२०॥

भीषम सखत्तू अडिग मत्तू गही अत्तू राखये।
आयुद्ध हत्तू भक्तपतू दर्शनदत्तू पाख ये ।
मेले मुकत्तू रामरत्तू गोपगत्तू गाम ये ।
ऐसा गोविन्दू० ॥२१॥

ऑवान झालू अस्सरालू बीच बालू मित्रये ।
राख्या दयालू मृग्गबालू अरी कालू हन्न ये ।
खेचर करालू समर जालू रखे बालू जाम ये ।
ऐसा गोविन्दू० ॥२२॥

आरत्ति हरणू अभय करणू नमो शरणू सत्त ये ।
ऐसा अकरणू अतिरतिरणू वेद वरणू नित्त ये ॥
हम व्याधि जरणू धरा धरणू वचन फुरणू काम ये ।
ऐसा गोविन्दू० ॥२३॥

नमो नमामी अंतर्यामी सर्व स्वामी सृष्ट ये ।
वंदौं सदाई सुखदाई चित्त आई इष्ट ये ।
अन्नाथनाथां सदा साथां तोहि हाथां हाम ये ।
ऐसा गोविन्दू० ॥२४॥

दोहा

जैसे सूतर पूतली, चित्रकार चित्राम ।
मैं अनाथ ऐसे सदा, तुम इच्छा सोई राम ॥२५॥
खलखायक साहिक जनां, दीनबंधु देवाधि ।
द्यालबाल शरणागती, तुमसे पति हम व्याधि ॥२६॥
सहायक विश्वावीस हरि, गायक वेद पुरान ।
लायक पायक शरण सुख, यंह तव नीति निधान ॥२७॥
जुग जुग योही आसरो, तुम रक्षक महाराज ।
तारण विरद अनादि तव, यह मेरो अब काज ॥२८॥

छंद सारसी

काज मेरो तुम्हें चेरो मेटि झेरो दरद ये ।
करिहै न हेरो शरण केरो सदा तेरो विरद ये ।
''नामा न घेरो सदन फेरो गउ उबेरो साज ये ।
भक्ती वधारू विरद वारू संत सारू काज ये ॥
जी संत० ॥२९॥

जमुना गहीरू झड जंजीरू झाल खीरू नां जले ।
बालद वहीरू धर शरीरू नीर नीरू हरि मिले ॥
निर्भय कबीरू ब्रह्मधीरू शब्दशीरू गाजये ।
भक्ती वधारू० ॥३०॥

कोपे दुर्वासा अहूं ख्वासा हतूं दासा राज ये ।
सुदर्श जासा प्राण ग्रासा कंप व्यासा भाजये ।
मुरदेव पासा भई हासा जन निवासा वाजये ।
भक्ती वधारू० ॥३१॥

करि यज्ञ राजू ऋषि समाजू, वेद गाजू गाव ये ।
नहिं शंख वाजू पडंवकाजू संतराजू आव ये ।
ले पंच क्राजू भई वाजू भ्रम्म भाजू राजये ।
भक्ती वधारू० ॥३२॥

प्रतिमा बुलाई सांच पाई गंग आई भवन ये ।
तन में दिखाई नौगुणाई जर्द साई सबन ये ॥
रैदास सांई देह थांई जीम जांई ब्राज ये ।
भक्ती वधारू० ॥३३॥

पीपा समरत्तू अगम गत्तू भक्त चरित्तू नैक ये ।
इच्छा फिरत्तू सोई सत्तू आप रत्तू एक ये ।
मृगराज कामी शिष्य स्वामी मुक्तिगामी जाजये ।
भक्ती वधारू० ॥३५॥

सूतर खड़ग्गू सार नग्गू जन प्रतग्गू राखये ।
"कर माग दग्गू जिये जग्गू दुष्ट अग्गू खाखये ।"
"फिर अश्व अग्गू" "चढ़े सग्गू समर लग्गू बाजये ।"
भक्ती वधारू० ॥३६॥

नृप दुष्ट खख्खी गरल दख्खी इष्ट पख्खी सो लये ।
धिन प्रेम छक्की राम रख्खी निर्भे थक्की बोलये ।
मीरां सरख्खी गोपि अख्खी जगत नख्खी लाजये ।
भक्ती वधारू० ॥३७॥

हूंडी माहेरो करि घणेरो सुतन केरो ब्याव ये ।
सभ्भा मंझारी भूप नारी लियां झारी आव ये ॥
नरसी सदारी माल थारी नीर प्यारी पा जये ।
भक्ती वधारू० ॥३८॥

हाथी चुवाए पर्यो पाए असुर थाए दास ये ।
पाती फिराए दरशधाए सांच आए जास ये ।
दादू दयालू हुय कृपालू जीव जालू भाज ये ।
भक्ती वधारू० ॥३९॥

वाली सवाई तुले ताई प्रीति भाई दास ये ।
भैस्यां मंगाई और थाई व्याज मांई छाँस ये ।
बलदां जिसाई जसू वांई राम राई न्वाजये ।
भक्ती वधारू० ॥४०॥

जग नृप्प वादू कौन सादू मिट मर्जादू काढ़ ये ।
जन कह्यो आदू राम सादू इच्छा तादू छाड़ ये ।
कुण देश माया झूठ काया राम राया राज ये ।
भक्ती वधारू० ॥४१॥

इच्छा पुरारी शीश धारी है मुरारी साथ ये ।
राखो जहांरी सींव थारी मैं न म्हारी नाथ ये ।
कुण बलाकारी गर्वहारी अकल वारी गाज ये ।
भक्ती वधारू० ॥४२॥

तपस्या ठकुराई छीन थाई मिट दुहाई देश ये ।
चाकर दुजाई पाप माई सुद्ध आई वेस ये ।
करुणा बढ़ाई पुनि बुलाई जन सहाई आज ये ।
भक्ती वधारू० ॥४३॥

संताँ सहाई राम राई सदा आई प्रत्त ये ।
समरथ सदाई रख्या माई कौन ताई द्रुत्त ये ।
मुरलोक मांई गंज न जाई प्राणि भांई माज ये ।
भक्ती वधारू० ॥४४॥

कहा देश देशू रम परदेशू है परमेशू संग ये ।
दुष्टी विचेसू करि अनेसू खोस लेसू कंग ये ।
सोई मरेसू जन निर्भेसू सुखावेसू आज ये ।
भक्ती वधारू० ॥४५॥

कहा घाट वाटू सुख्ख ठाटू मुज वैराटू राम ये ।
गुरु रामदासू चरित गासू नित निवासू नाम ये ।
लज्जा सदासू आदि आसू कली कासू राज ये ।
भक्ती वधारू० ॥४६॥

दोहा

सदाकाल समर्थ धणी, रक्षक राम दयाल ।
कठिन कली कारण कृपा, हरि बिन कौन संभाल ॥४७॥
नमो नमामी नाथ तूं, निर्धारां आधार ।
लज्जा राखण रामजी, आनंद अगम अपार ॥४८॥
प्रसन्नजना अपवर्ग सुख, शरणै प्रतिपालंत ।
द्यालबाल शरणागती, क्यों नहिं अरि जालंत ॥४६॥
कर्म बड़ा कि हरि बड़ा, यह अचरज मोहि आय ।
हरि तो लेख अलेख है, साधु वचन यों जाय ॥५०॥
नारि पलट नर तनु भयो, जन तुरसी के हेत ।
अकरण करण दयालु धिन, अपना को सुख देत ॥५१॥
जुग जुग पालत जन पखो, साचा करण सवाल ।
सो निर्बल या जगत में जाके बल गोपाल ॥५२॥
राम सदा सुख रंजना, भय भंज़न भरतार ।
करुणामय कारणकरण, वारक वारणवार ॥५३॥
वुहोजात भवसिंधु में, मोहादिक जल पार ।
व्याधि ग्राह मोंकू गह्यो, अब हरि करण उधार ॥५४॥
हूं संताँ के शरण को, तूं संताँ आधीन ।
लायक पायक सांच तब, दीनसहायक दीन ॥५५॥

माधोदास दयालु के, प्रसन्न भये धिन राम ।
क्यों नहिं वंदत जगत यश, भैरव सेवक ताम ॥५६॥
जन नरहरियानंद के, कर दुर्गा आधीन ।
नितका ढोया ईंधणा, अकरण करण नवीन ॥५७॥
चन्द्रहास को राखियो, केती कष्ट दयाल ।
मात आंदि चरणां परी, महिपति भक्त विशाल ॥५८॥
नंददास के हेत जो, गऊ जिवाई राम ।
भये खिसाने विप्र सब, जनके सारे काम ॥५९॥
दग्घ देह कमध्वज तणी, किवी पारषद आन ।
चारु चलावो शरण सुख, जनमहिमा भगवान ॥६०॥
हरिपुर से आये जनां, पायगये परसाद ।
लालाचारज प्रसिद्ध जग, चकित रहे असाद ॥६१॥
करमांबाई के सदन, भाव मई परसाद ।
नाम लुगाई प्रगट जग, अकरण करण अगाद ॥६२॥
कहँलों वरणूँ संतयश, गति अगाध परमेश ।
मो बल यो ही आसरो, निर्भय गुरु उपदेश ॥६३॥
नवग्रह चौसठ जोगिणी, बावन वीर पर्जंत ।
काल भक्ष सबको करै, हरि शरणै डरपंत ॥६४॥

ताकी दासी तापत्रय, मो घट व्याधि जराय ।
जानराय जानौ सबै, यह विरद केरो जाय ॥६५॥
तुम पालक सागे सदा, आगे अबै अनंत ।
कर्म विडारण तारणा, नमस्कार भगवंत ॥६६॥
व्याध एक मार्‌यो मिरग, व्याल डस्यो तरु छांय ।
तृषां मरत शुक सुनि गिरा, नाम प्रकट उरमांय ॥६७॥
उभय वार श्रवणां सुणे, उभय वार मुख गाय ।
अंतकाल ऐसो भयो, ततछिन भए सहाय ॥६८॥
जमकिंकर बंधे महा, बन्ध छुड़ाई ताय ।
हरिपुरवासी आयके, लेखै न्याव चुकाय ॥६९॥
एके चेलै अघ सबै, एके चेलै नाम ।
ऐसी विधि भवतारणा, निर्भय दीधो धाम ॥७०॥
मेरी विरियां कहा भयो, दीनबन्धु दातार ।
करहु कृपा अब औरसी, विगरत कौन वुहार ॥७१॥

सोरठा

उलटा समझे राम, औखाणो साचो कर्‌यो ।
शरणागत दुख ताम, यो कारण अबही भयो ॥७२॥

आगै अबै न कोय, अजहूं मैं नाहीं सुन्यो ।
यह तो कदे न होय, रार गमावण रामजी ॥७३॥
बोल न जाणूं कोय, अल्प बुद्धि मन वेगते ।
नहिं जाके हरि होय, यातो मैं जाणूं सदा ॥७४॥
तव जन शरणै आय, हनूवंश इक डावरो ।
नाभा नाम सहाय, चश्मा खुल संजय सही ॥७५॥
जन पद पंकज "धूर" चख उर मन मंजन कर्‌यो ।
राम शब्द भरपूर, ताहि नेत्र ऐसे खुले ॥७६॥
मुरवेलां सूझंत, अद्‌भुत वरण्यो ब्रह्म पद ।
हरि शरणे जूझंत, ग्यालबाल यह आसरो ॥७७॥
पावन पतित अनेक, समरथ याही चोज है ।
पापी हुलस विशेष अबकी वेर उबारिये ॥७८॥
यह जानत महाराज, शरणागत मेटण अदा ।
राम गरीब निवाज, विघ्न हरण मंगल सदा ॥७९॥

दोहा

भक्ति रैंस जामें सकल, छंद सारसी जान ।
हरि सरवर हंसा जनां, मुक्ता नाम निधान ॥८०॥

भावनीर निरमल सदा, परिमल भवसिंधु पार ।
रामदास जन रमरह्या, लह्या अखै सुख सार ॥८१॥
मन कलि़यो मोह सिंधु में, काल ग्राह अघ तंत ।
अब लायक स्हायक सदा, नमस्कार भगवंत ॥८२॥

छंद रोमकंदी

नमो भगवंत संभारण कारण गत्ति अपारण कोण लही ।
भव दुःख विडारण काज सुधारण पार उतारण एक सही ॥
बल बांह बधारण अघ्घ निवारण जीव जिवारण वप्पुधरो ॥
भव के दुःख टार उधार अपंपर पार गजेंदर जेम करो ॥हरि॥
महांमत्त मंनगय रत्त अनंगय अंध कुसंगय में मतयूं ।
ता पंच प्रसंगय वाम भुवंगय काम कमंगय से हत यूं ॥
विष अंग तरंगय ग्रीषम अंगय मोह सुरंगय होय गरो ।
भव के दुःख टार० ॥८४॥

प्रकृति पचीस तेतीस प्रचंडय मंड समंडय पिंड इता ।
हुय थंड विहंडय जीव स डंडय सूर प्रचंडय मत्र मता ॥
तत्काल विकराल विहाल सझंपण व्याधि गिराह सनाह वुरो ।
भव के दुःख टार० ॥८५॥

जग जाल असराल संभाल छले इन भक्ख सदा भवसिंधु मही ।
नभ नाल तंताल धराल मिले त्रयलोक सुरप्पति विद्धि सही ॥
कइ रस्स डाढ़ाल ढ़ींचाल उगालण होय अभै खल खाण नरो ।
भव के दुःख टार० ॥८६॥

जग जंतु जनम्मय अनंत कषट्टय महा दुषट्टय ह्वाल हुआ ।
ज़िव अघ्य करष्षय मृत्यु हरष्षय पूर वरष्षय आयु दुआ ।
अंत नाड़ि तटक्कय प्राण सटक्कय छोड़ि घटक्कय़ सीर टरो ।
भव के दुःख टार० ॥८७॥

इस श्वास दमोदम दुःख हमोहम राम रमोरम जान सवे ।
ग्रह ग्राह गमोगम जीव भमो भम एक तमोतम और नवे ॥
यह दीन समो सम क्यों न करो कम राज नमोनम धीर धरो ।
भव के दुःख टार० ॥८८॥

परिवार न वारण सार संभारण तारण कारण आयलियो ।
आरोह खगारण धाय धरारण चक्र चलारण काज क़ियो ॥
धिन आप अपारण सोई विचारण टेर उचारण एक ररो ॥
भव के दुःख टार० ॥८९॥

गोविंद आनंद नमो चंद वंद पुरंद सुखंद समंद सदा ।
मो मंद मनंद गमो सिध तद्द लयंद शयंद उरंद मुदा ॥

हद जिंद निकंद सकंद सदोगति अंद समंद दुरंद हरो ॥
भव के दुःख टार० ॥९०॥

छंद छप्पय

द्वंद हरण गोविंद तरण भवसिंधु विश्वंभर ।
नमस्कार आधार भूल नहिं परत निशंभर ॥
ग्राह दुखाह अथाह अबै शरणागति तेरी ।
दीनबंधु आनंद टेर यह सुनिये मेरी ॥
निराधार आधार हरि परवार पावन पतित ।
द्यालबाल शरणागती करी सरी सो मुनि कथित ॥९१॥

दोहा

नांहि न दूजो आसरो यह दुख मेटण आप ।
दाझत जग माया दुखद तीन लोक त्रयताप ॥९२॥

छंद रोमकंदी

त्रय ताप संताप दुखाप दुखंकर पाप कियंकर लार लगा ।
जिय छाप कलाप विलाप भयंकर बाफ हुतंकर मृत्यु अगा ॥

मन सांप शराप विशेष कायापर मोह मया धर वेश तरै ।
मनते सिध सार अधार रमारम आप विनां कुण ताप हरै ॥६३॥
अंतकाल अकाल भूताल स डाकण मूठसनाखण प्राण लिया ।
कुवै खाल जुराल खोगाल फसावण मारग जावण मारविया ॥
अधिभूत जरावण तामस खावण और न आवण जोणिधरै ।
मनते सिध सार० ॥६४॥
ज्वर व्याधि असाध्य नारु तन दूखण डैरु सहूकणरोगकिता ।
कफजादि रजादि फियादि स सूकण वायु गठूगण भोगजिता ॥
यह जासु रजोगुण दाझ अध्यातम लाज प्रमातम काज करे ।
मनते सिध सार० ॥६५॥
बयाल सियाल उनाल वयाकुल वारि वर्षाल खुधाल सयूं ।
वत्राल विचाल गिराल असाकल ज्वाल मयाल सखाल लयूं ॥
सुराल विचाल झपट्ट सतोगुण यह अधिदैव से बाल टरै ।
मनते सिध सार० ॥६६॥
क्रियमान मिलान भोगान संचित्तय प्राणि बसान सुथानजका ।
तपतीन विधान समान दसत्तिय मान अज्ञान सुजान धका ।
तब आन अचानक हानि करे जिव बानक एक भगवान सरै ।
मनते सिध सार० ॥६७॥
उर चाय उपाय भमाय सबै घट लाय अथाय जलाय दिया ।
मुरझाय दिखाय जमाय तबै शठ ताय बंधाय धकाय लिया ॥

कइ खाय सिराय पचाय जठागनि दाय सहाय सवाय मरै ।
मनते सिध सार० ॥६८॥

गुरु ज्ञान घटा वरसान सदा संग दूरि अदा उन प्राणि मिटे ।
उर आन मिटा हरि ध्यान सदा रंग नूर तदा तनु जान हटे ॥
उर जाल सेवाल मिटाय के उज्ज्वल प्रेम सुखाल अमिट्टझरै ।
मनते सिध सार० ॥६९॥

दयाल कृपाल संभाल करै जिव झाल कराल विचाल रखै ॥
जठरमाल उधाल खुधाल मरे नभ नाभिनभाल रसाल भखे ।
जनमाल धुराल दुधाल सिरज्जत काल में क्यों न गवाल करै ।
मनते सिध सार० ॥१००॥

छप्पय

काल दुकाल संभाल करै करुणा के सागर ।
झाल असराल त्रिकाल टरै हरि जासु कृपा कर ॥
जन्माजन्म अनंत कहा वरणत दुख जीवस ।
अब स्हायक महाराज राज तारण धिन पीवस ।
राम इन्द हरिजन घटा यह वर्षा अब कीजियै ।
द्यालबाल शरणागती अपनो करिके लीजियै ॥१०१॥

॥ इति ग्रन्थ करुणासागर संपूर्णम् ॥

(३) ग्रंथ अरदास बत्तीसी

दीनबन्धु अशरणशरण, करुणा सागर राम ।
सदा संगाती जीव के, ध्यालबाल परणाम ॥१॥
करुणासागर रामजी, कहत दया के नाथ ।
अबलों विरद पूरो करयो, हम बिलखत दिनरात ॥२॥
कर्मों के रक्षक भये, जीवां रक्षक नाहिं ।
आप आसरे रामजी, हमको लीयां जाहिं ॥३॥
मो कर्मनकी झोंपड़ी, दया पठाई जेथ ।
पैदाकर न्यारे भये, औ कैसो अब हेत ॥४॥
कुण ऊरबो रंक को, भूपति करै न कान।
साधु वचन मुनिवर ग्रन्थ, उलट करो आख्यान ॥५॥
यो जिव दीन अनाथ को, कर्म महाबलवान ।
राम गरीब-निवाज हो, औ कैसो वर्तमान ॥६॥
कूक सुणी मो कर्मकी, महरवान महाराज ।
शरणपणो प्रतिपालणों, छोड़दियो तुम आज ॥७॥
मै अजहूं नांही सुण्यो, शरणेतणों विगाड़ ।
रामदास शरणागती, रामरक्षा की बाड़ ॥८॥
सहाय करो कर्मां दिशी, अकरण करण दयाल ।
जीवां प्रति पालन तज्यो, मो मन भलां विहाल ॥९॥

यह शोभा जग में कवन, देकर फिर उरलेत ।
हरिसो दाता को नहीं, ए सब मोपर नेत ॥१०॥
व्याधि लगी ऐंचत नयन, वयन हरीजन जाय ॥
मेरो यहाँ जावत कहा, तेरो विरद लजाय ॥११॥
घटिये को घटसी कहा, तुम नहिं करो उबेल ।
धणीपणो पूरो भयो, यह कर्मन को खेल ॥१२॥
प्राप्त हुए सो पायेगा, तो कहा निवाजो राम ।
तुम हो दाता मोक्ष के, सुखकारण सुखधाम ॥१३॥
इन वपुरे की क्या गमी, सदा जीव की लाज ।
समर्थपणों ईश्वरकला, कहा करसो महाराज ॥१४॥
शरण तुम्हारी रामजी, आनन्द अगम अपार ।
आधि व्याधि मोपर लगी, ओ कैसो अनुसार ॥१५॥
यों करतां जासी नयन, वयन समासीकेत ।
विरद वधारण रामजी, पिता पुत्र पर नेत ॥१६॥
जोरावर जालिम दुस्सह, वैरी लागा मोय ।
राम अरज मानी नहीं, तो कैसी गति होय ॥१७॥
और दिशा दीसे नहीं, जिनसें करूं पुकार ।
करूणासागर रामजी, कीजें वेगि संभार ॥१८॥

सर्व प्रकाशी रामजी, असंख्य सूर परकाश ।
घट बीच अघटा ज्योति तव, कतविध चखको नाश ॥१९॥
मो लायक सारी सजा, तो लायक यह नांहिं ।
लायक पायक शरणसुख, गायक ग्रन्थां मांहि ॥२०॥
यह अरदासहि जंपना, राम बड़ो विश्वास ।
अबकी वेर उबेल अब, इण मौसर इन श्वास ॥२१॥
औषधि वैद्य हकीम सिध कारीगर कर्तार ।
आश वास विश्वास सत, एकाएक अधार ॥२२॥
अंतरजामी अंतरंकी, जानतहो महाराज ।
जतन जाबतो रामजी, द्यालबाल की लाज ॥२३॥
हांर्यां का भीड़ी भया, आगे भारत मांय ।
मनवच क्रम अरदासता, दीजै बन्ध छुड़ाय ॥२४॥
बन्ध छुडावण रामजी, आद अन्त के मांहिं ।
सन्त साख तारण तरण, कारण करण सदांहि ॥२५॥
प्राण पिंड सूरत अजब, कर्ता आप दयाल ।
तुमते कौन जोरावरी, खंडन करण कुचाल ॥२६॥
सूर अग्र रज़नी कहाँ, हुत आगे कहाँ घास ।
मोमन निज विश्वास यह, रामशरण अघनास ॥२७॥
पतितां पावन रामजी, सुणज्यो यह अरदास ।
द्यालबाल आतुर अधिक, वस्यो रावरे वास ॥२८॥

आणवणी मोटा धणी, घणी भई जिव मांय ।
समरथ सब दुख भंजना, नमोनमो हरि राय ॥२६॥
हम सम नहिं अनाथ को, तुम सम कोइ न नाथ ।
आप विनां सुरलोक में, कुण पूछै कुशलात ॥३०॥
रामदास महाराज को, खानाजाद गुलाम ।
प्रतिज्ञा राखण नमो, श्वास श्वास विश्राम ॥३१॥
शिशु रोवन को जोर है, यह अरदास बत्तीस ।
द्यालबाल के प्राणपति, जग जामी जगदीश ॥३२॥

॥इति॥

अथ श्री पूरणदासजी महाराज कृत

ग्रन्थ जन्म लीला

हरिरामा रामा नमो, द्यालबाल मुझ साम ।
मन वच क्रम करिये सदा, पूरण ताहि प्रणाम ॥

दोहा

वदन श्री परब्रह्म को, पुनि गुरु को परणाम ।
सब सन्तां सिर नाय हूं, खानाजाद गुलाम ॥१॥
रामदास महाराज के द्याल शिरोमणि शिक्ख ।
जन्म सुलीला वरणि हूं, निज गुण रूप प्रत्यक्ष ॥२॥

दया रूप धरि प्रग्गटे, पूरण के शिरताज ।
जीव अनेक उधारणे, प्रकट किये यह साज ॥३॥

छप्पय

निर्गुण निज निरकार दृष्टि कहूं, मुष्टि न आवै ।
अपरमपार अलेख नेति तिहि निगम सु गावै ।
जोगधारणा धार ध्यान कर ध्यावत कोई ।
दुर्लभ दुष्कर कठिन ताहि दर्शन नहिं होई ।
स्वयं ब्रह्म अवतार धर द्याल अवनि प्रगटे प्रत्यक्ष ।
ऐसो न कोई देख्यो अवर देख्यो दीनदयाल इक ॥४॥
अविगत आज्ञाकरी प्रगट मम भक्ती कीजै ।
कलीकाल विकराल ताहि को शिक्षा दीजै ।
कामी कुटिल कुजात अधम अघगामी सारा ।
दो भक्ती उपदेश राम निज मंत्र हमारा ।
तब आयसु शिरपर धारिके द्याल लिए अवतार इल ।
रामदास पितु पाय धिन सुन्दर माता कूंख भल ॥५॥
वडू गांव शुभ वास जहां इक सदन कहीजै ।
नमो द्याल तहां जन्म प्रथम परचो सु लहीजै ।
सुरपति घन वरसाय गड़ा जहां पड्या अपारा ।

सदन निकट ही नाहिं दूर धरनी दलगारा ।
चरणामृत गुटकी दई महाप्रसाद गुरुदेव भल ।
द्याल जन्म उच्छव भयो नर सुर कीरति करत कल ॥६॥
समत अठारह जान बरष षोड़श परवानो ।
ता मध मिगसर मास शुक्ल एकादशि जानो ॥
भृगू वार परसिद्ध रेवती नखत भणीजै ।
अमृत पुल सिधि जोग गुरू लगनेश गिणीजै ॥
सब सोम ग्रह शुभ ठौरपर द्याल लिए अवतार तब ।
कहूं सुक्षम स्थूल जिव चर अचर हर्षमान हुय मुदित सब ॥७॥
आनंद अगम अपार अंनत जहां वाजा़ वाजे ।
अनंत उदित अंकूर सकल शुभ मंगल साजे ॥
सर तरु नदी निवान वनी परबत घन धारा ।
वापी कूंप तड़ाग अमी अमृतरस सारा ॥
उद्योतकार जीवां सकल संत प्रगट अवतार हरि ।
नरदेह धर्यां विन हरिहुते संत भये नरदेह धरि ॥८॥
भरतखंड परसिद्ध द्वीप जांबू सुखकंदन ।
देश मरूधरा नमो गांव खेड़ापौ वंदन ॥
गामधणी पति नाम पदमसिंह प्रोहित राजे ॥
विजयसिंह नरनाथ वार परताप सदाजे ॥

नरनारि सकल धरधाम धिन तहां संत अवतार धर ।
आनंद अपार उच्छव अनत मंगल परम विनोद कर ॥६॥
ज्यों दशरथ के राम सूर कश्यप के राजे ।
परशुराम जमदग्नि कपिल करदम के छाजे ॥
कृष्णजन्म वसुदेव व्यास के शुक मुनि त्यागी ।
उद्दालक के प्रगट नासकेतं जु बड़भागी ॥
हंसरूप हंसा घरे भिन्नभेद नहिं सार है ।
परब्रह्मपूरणकला सागे अंश अवतार है ॥१०॥
उदित वंश मध सूर मिटे अज्ञान अंधारा ।
कमलरूप निजदास उत्तम सिख चकवा सारा ॥
विमुख कमोदनि जान इन्द्री उड़गन सब मुरझे ।
वाद उल्लू भ्रम भूत चंद्रमन तामें उरझे ॥
शिशुमारचक्र प्राणसु प्रगट काम क्रोध मोह चोर हे ।
वेद पहरवा सुय रहे संत सूर वड़ जोर है ॥११॥
सतजुग सतव्रत सार तप्प त्रेताजुगमांही ।
द्वापर दान विशेष क्रिया कर्म सब वरतांही ।
तीन जुगन को धर्म प्रगट सारे वरतायो ॥
कलीकाल विकराल नीति गत माग दुरायो ।
अवसान कोई एको नहीं कलीराज थाणा थपै ।

तब द्याल संत करुनाअयन नीशांन भक्ति निश्चल रुपे ॥१२॥

दोहा

ठौर ठौर सब ठांम पर, भक्ति प्रगट परभाव ।
चंकवे राज नरेश पद, गुरुधर्म सुमरण चाव ॥१३॥

छंद पद्धरी

नृप भए चक्रवर्ती सुजान। जिन प्रगट कर्‌यो गुरुधर्म ज्ञान ॥
उपदेश जीव दे मुक्तिदान । थिर भक्ति राज अविचल निशान ॥१४॥
कलि रह्यो नाहिं कहूंठां प्रवेश। शुभ जाग माग ज्ञानोपदेश ॥
तब भगे चोर जारा न मार। तपतेज नीति थिर थपे वार ॥१५॥
मुख अग्र आन कोउ जुर्‌यो नाहिं। परमानंद उपज्यो आप माहिं ॥
महाज्ञान ध्यान धीरज अपार। गम अगम बचन आगम उचार ॥१६॥
गुरुधर्म टेक धारण सधीर। गिरिगोम व्योम गंगा गंभीर ॥
सोभायमान गुरु गुरां मांय। सब ग्रन्थ अर्थ निरणै बताए ।।१७॥
अरि मित्र सबे धिन धिन उचार। कर नाम संज्ञा साचे प्रकार ॥
कहुं नैनां नहिं देखे दयाल। सब नख चख देखो दासद्याल ॥१८॥
जिन वचन द्याल तन मन दयाल। चख श्रवन हृदय बाहू विशाल ॥
सोभायमान शिर उतुंगभाल। कप्पोल पूर बिम्बौष्ठ लाल ॥१६॥
भ्रू वंक अंक नक तीख जान। चिब्बूक अंब कंबू प्रमान ॥

उर बड विशाल नाभी गंभीर। कटि जंघ जानु गुल्फां अमीर ॥२०॥
पदकंज रज्ज अलि शिष सुचाय। रजचरण परस मिल मोक्ष मांय ॥
अनुभव प्रकाश उद्योतकार। अविरल अनूप नहिं वार पार ॥२१॥
धन धारां पहुमी रह न पार। यों अनुभव बाणी तत्व सार ॥
उबक्यो पयाल गरज्यो समंद। फाट्यो आकाश बरष्यो सुछंद ॥२२॥
घनछिनवे क्रोड़ां मेघमाल। गिरि मेरु झड़ी अमृत रसाल ॥
कूद्यो आकाश हनुमंत वीर। उड्डयो खगेश कन चक्रधीर ॥२३॥
तूटो वज्राक रूठो महेश। कीनो भ्रम खंडन काम देश ॥
छूठो रघुपतिकर बान पानि। सोख्यो सर मोहा आदि मानि ॥२४॥
उचक्यो डढाल मुचक्यो मराल। सुचक्यो सुरेश रसनाबयाल ॥
उछल्यो छीरोद हाल्यो समीर। घन घटा घोर भादौ गंभीर ॥२५॥
कर वेद चार निरणै विचार। दश आठ पुराण षट भाष सार ॥
व्याकरण नष्ट निरताय सोय। षट् शास्त्र भिन्न भिन लियेजाय ॥२६॥
रस रामायण शिर मौरे सार। भागवंत वचन भगवत उचार ॥
भारत भगवद्गीता विशेष। सो सार सार सब लियो देख ॥२७॥
करि प्रश्न दियो निर्णय बताय। अनघन नहिं ऊणत रखी काय ॥
दत दान मान करुणादि आधि। दुखिया दे औषद मेट व्याधि ॥२८॥
जाके शिर कर धर कह्यो सोय। अजरामर आनंद तुरत होय ॥
दैत्यादि भूत डाकिनी नार। मरजाद सींव नहिं पांव धार ॥२९॥

हिड़क्यो तन मिरगी अबुध होय। फीयो लिप बहुविधि रोग कोय ॥
नर नारि पशू जो शरण आय। जल पियां तृषा ज्यूं रोग जाय ॥३०॥
जाच्यां नहिं ऊणत रखी कोय। लघु दीरघ भिन्न न भेद होय ॥
अनवी नुय लागे आन पाय। कर दरशन चरचा पोष थाय ॥३१॥
उपदेश राम निज मंत्रसार। दशहूं दिशि सिषसाखा अपार ॥
कर रामत मालागर मंझार। नृप गूंड देश दक्षिण सुढार ॥३२॥
गुर्जर धर पावन करी सोय। थलवट मरुधर धिन धन्य होय ॥
दिग्विजय अगंजी भक्ति साज। कहुं जगत भेख तप तेजराज ॥३३॥
निःशंक सदा आनंद सोय। औघट विन घाटी विकटहोय ।
सुख दुःख हरष नहिं शोकमान। शत्रूज मित्र सब एक जान ॥३४॥
निजधर्म सनातन सारसार। गहिलयो हंस ज्यूं खीर वार ॥
अज चींटी कुंजर एक जान। कहूं हानि वृद्धि नहीं भेद मान ॥३५॥
सब विश्व ब्रह्ममय दृष्टि देख। उर उपज महा उद्योत एक ॥
रत ब्रह्मवाद विद्या प्रकाश। मद मोह द्रोह कर कामनाश ॥३६॥
रह प्रसन्न सदा समभाव दास। विज्ञान ज्ञान पूरण प्रकाश ॥
मत अडिग सदा कूटस्थ जान। मिथ्या भ्रम ग्रंथी हृदय भान ॥३७॥
मन वाच काय पीयूष प्रवीन। त्रय भवन सबै उपकार कीन ।
सब बूझ साधुपद गमन कीन। पापान मान मद सजादीन ॥३८॥
मान्यान मान संत सेव कीन। अति दुखी दरिद्री सार लीन ।
लूले कहुं पंगू मुक सोय। चषहीन बधिर पुनि वृद्ध होय ॥३९॥

कहूं ठीक ठौंर ताके न काय। बल विनां निबल चाल्यो नजाय ॥
निरधारां आधार जान। सबही के रक्षक ढाल मान ॥४०॥
बुधिभल क्षम मति चित उक्तसार। बानी विवेक अविरल उचार ॥
अनुभव रस छोला जुगति जोर। नित बधे पंचाली चीर कोर ॥४१॥
दीरघ वपु दरशन दीपमान। उद्योतकार ज्यों प्रगट भान ॥
सोभंत सभा के रूप सार। मोहंत करत चरचा उचार ॥४२॥
काव्य जु बंद कविता छंदसार। ततकाल कहत नहिं लहत पार ॥
सरस्वति गनपति शुक वेदव्यास। शिव बालमीकि कवि शुक्र जास ॥४३॥
यह भए कवी आगे प्रत्यक्ष। देख्यो दयाल संशय न चिक्ख ॥
नहिं हुते प्रगट पहुमी दयाल। कलि दावदेत भक्ती पयाल ॥४४॥
निज राममंत्र प्रग्गट प्रताप। घट घट प्रति व्यापक ब्रह्म आप ॥
कुन जानत निर्गुन सगुन जोत। कलिकाल द्याल संत नाहिं होत ॥४५॥
दधि मथ कर काढ्यो घृत्तसार। लीनो तत छोई दई डार ॥
फल कतक करत करदम विछोर। निरमल जल करिहे शक्ति जोर ॥४६॥
गुनमयी ज्ञान भक्ती विरोल। यों भिन भिन कीन्हो तोल तोल ॥
सब जुक्ति चेताए जठर जीव। मिट गये दोष सुखिया सदीव ॥४७॥
कटिगये करम सब भरम भाज। डूबत ले तारे नाम ज्याज ॥
तिर आप और तारे कितान। तरणी दृष्टान्त गुरु साचमान ॥४८॥
कर भजन प्रथम निर्मल शरीर। रसना रस अमृत लहे सीर ॥
परकार चार सुमरण विधान। अधमधं उतम अति उतम जान ॥४९॥

मुखकमल पंखड़ी चार भास। कंठ कमल पंखड़ी षट प्रकास ॥
खुल अष्ट पंखड़ी उर मंझार। नाभी खुल षोड़श पंखसार ॥५०॥
मन पवन मिले दोनों प्रकार। हुब थुब हुय भेला कर गुंजार ॥
फिर शब्द गमन आगे चलाय। भिद मूलचक्र पाताल जाय ॥५१॥
उलटा सु पलट यह अगम खेल। जीता गढ वंकी मेरु पेल ॥
मिणिया इकबीसूं छेद जाय। निकसे गज नाके सुई मांय ॥५२॥
वहां कमल पंख बत्तीस होय। शत्रू सब मित्री भया सोय ॥
आगे चल त्रिकुटी तखत मांय। तहाँ जीव शीव मिल एक थांय ॥५३॥
सहस्रादि पंखड़ी कमल भास। जहां जन्ममरण की मिटी त्रास ॥
जहां सुरत शब्द मिल करत केल। मिल हंस परमहंस अगम खेल ॥५४॥
नवधाम परे अपरम अपार। सो सता समाधी संत सार ॥
महामाया ज्योती प्रकृति सार। शुन आतम इच्छा भाव पार ॥५५॥
परभावे केवल ब्रह्म होय। जहां जीव शीव मिल नहीं दोय ॥
आया जहां मिलिया संत जाय। कर केवल भक्ती मुक्ति मांय ॥५६॥
कर विष्णु उछव वैकुंठ मांहि। मम प्राणबलभ लीजे वधांहि ॥
लक्ष्मी ले परकर सर्व साथ। धन धन्य करत वैकुंठनाथ ॥५७॥
कर भक्ति प्रगट मम नाम सोय। वंशोंधर सुत सम नहीं कोय ॥
यों ऊर्ध्वलोक उच्छव आपार। यहां द्याल आप निज सुरत धार ॥५८॥
दे सैन प्रथम सबको जनाय। इक पद फरमायो राग मांय ॥
हम हैं परदेशी लोक साध। कब आन मिलेंगे मेटि व्याध ॥५६॥

ततकाल दई पत्री लिखाय। निज गुरुद्वारे सूं महंत आय ॥
सब भाई बाई मिले जाय। कर दरशन परसन पोष पाय ॥६०

दोहा

इह प्रकार निरधार करि, आदि अंत मध सोय ॥
दीनदयाल दयालु विच, भिन्न भेद नहिं कोय ॥६१॥

छंद गीतक

धिन द्याल सतगुरु प्रगट इल पर मनुज तन धर आविया ॥
अंकूर जीवां उदय कारन भूर मोसर पाविया ॥६२॥
अरु समत एके आठ ऊपर वर्ष षोडश सारही ॥
पुनि मास मिंगसर तिथि उजाली अग्यारस भृगुवारही ॥६३॥
तादिवस धर अवतार नर तनु जगत सारो जीतिया ॥
महां अगंजी दिग्विजय करके वरष गुनंतर बीतिया ॥६४॥
इकमास ऊपर प्रगट पुनि ता दिवस पनरे पर भए ॥
तब करी इच्छा मोक्ष की निज लोक की चितवन ठए ॥६५॥
तहां माघ वद तिथि भई दशमी मध्य दिनमणि आवियो ॥
तब स्पर्शन उर्धा खैंचिके निज सुरत शब्द मिलावियो ॥६६॥
सब भये विलखे रामजन किमु दर्श बिछुरन सहिसके ॥
बिन नीर मच्छी कमल दिन विन बचन बानी सब थके ॥६७॥

है नैन सरजल हियो भर भर रुदन कर कर उच्चरे ॥
इक बेर द्याल कृपालु दरशन देहु सब संकट टरे ॥६८॥
पुनि सभा मंडन भर्म खंडन तार ग्रन्थां कुन करे ॥
ऐवास सर तरु नारि नर अरु सकल दुख दूभर भरे ॥६९॥
निज जान अनुचर कृपा कर कर हात शिर धर दाखियो ॥
वरदान पूरणदास मांगै सदा चरणां राखियो ॥७०॥

सोरठ

रटके मनके मांहिं, चित भटके दशहूं दिशा ॥
किनके खटकेनांहि, द्याल तणा दुख दरद की ॥७१॥
तटके तूटो नांहिं, फटके नहिं फूटो हिया ॥
अटके किम उरमांहि, लटके लोह लंगर जड्यो ॥७२॥
शरणागत की लाज, आन परी है आपकूं ॥
ले वंहियो महाराज, पतती पूरणदास कूं ॥७३॥

दोहा

लीला जन्म दयालु की, को करि करे विचार ॥
बुधि प्रमाण वर्णन करी, सद्गुरु अगम अपार ॥७४॥

॥इति॥

अथ श्री अर्जुनदास जी महाराज कृत

ग्रन्थ पूर्वजन्म

श्री हरिगुरु हरिराम धिन, रामदास मुझ साम ।
द्याल पुरुष पूरण प्रती, अर्जुन की परणाम ॥

दोहा

पूर्वजन्म की वार्ता, श्रीमुख कही सुनाय ।
जिहि कारण यहँ अवतरे, वरण सुनाऊं ताय ॥१॥

छंद भुजंगी

हुते नागर मेहता जूनागढ़ मांही। तिन्है इष्ट धारे दंडी मत्त ताहीं ॥
नित्य प्रति नेमं करै दर्श स्वामी। लही मत्ति ऐसी धरै चित्त धामी ॥२॥
भई एक वारं बहुत भीर भारी। तहां संत गेही मिले वर्ण चारी ॥
तबै रामकृष्णं मनां आनि भित्रं। महाराज दंडी प्रति कीन्ही प्रशत्रं ॥३॥
इन्हैं दर्श दीजै रखो दूर नाथा। द्विजां शुद्र भेला वनै नांहि वाता ॥
सुनी बात ऐसी तबै बोल स्वामी। नहीं भक्ति चीन्हीं पड़ी तोहिखामी ॥४॥
हरी गर्वअशनी तुम्हे नांहिं जानी। धरो जन्म यामें भई एम बानी ॥
सुने वाक्य दंडी तबै वीक लागे। क्षमो नाथ चूकं हमैं हैं अभागे ॥५॥
अहो प्राण प्यारे तज्यां नाहिं जीऊँ। तुम्हैं अंश आऊं कृपाऽमृत्त पीऊं ॥
तबै है कृपालं कह्यो तुज्झि इच्छा। फलै भाव सत्यं करै राम रिच्छा ॥६॥

सदा दास हेतूं धरी देह ऐसी। वाराह मीन नरसिंह हयग्रीव जैसी ॥
हमें तुज्झि हेतूं धरूं देह आई। करो सोच नांहि लेहौं मो मिलाई ॥७॥
हुयो दास निश्चय भयो मन्त्रभायो। राधाकृष्ण गावै पदां में लिखायो ॥
सदा श्रेष्ठ आशय दृढं मत्ति भारी। करै जन्म लेखै आगमं विचारी ॥८॥

छंद गीतक

श्री पुरुषोत्तम ध्यान धरि मन धर्म द्वारा जा सही ।
दूकान अहमदावाद जाकी पुत्र स्त्री तहँ वास ही ॥९॥
अच्युत्त गोत्रं सुखी दाता मांग उत्तर नां दयं ।
जलपान भोजन वस्त्र सब करि संत सेवा सुख लयं ॥१०॥
कई काल बीतां कह्यो स्वामी तजो इनपुर विघ्न ही ।
तब मांगि आज्ञा वास कीन्हो बड़ौदै शुभ लग्न ही ॥११॥
अति प्रेम युक्तं कर्त कीर्तन रासलीला महँ छके ।
पुनि गिरा गद्गद पुलक सब तनु नयन जल भर अकबके ॥
इक दिवस वापी मात्रियां मध दर्श मनमोहन दए ।
सब जान परिचय संत पूरण राजपूज्य सु जन भए ॥१३॥
धन धाम तन मन पुत्र सुन्दरि सकल हरि चरणन धरै ।
हरि भक्ति सरसी दुतिय नरसी गुर्जरधर पावन करै ॥१४॥

दोहा

ता सुत हरिशंकर भये, सखाजु परमानन्द ।
भक्ति अनन्यहि मिल करी आदि अन्त सुखकन्द ॥१५॥
संवत सत्रह से गुणन्तरै दशों भाद्र वदि जान ।
रामकृष्ण तन त्याग करि मरुधर प्रगटे आन ॥१६॥
माता सुन्दर कूंख भल द्याल लियो अवतार ।
रामदास पितु पाय धिन जीवां करण उधार ॥१७॥

छंद पद्धरी

वय बाल गई पौगंड आय। धुरजन्म आपनी सुरति लाय ।
गुरु रामदास प्रति विनय कीन। निज ज्ञान गुंझ बकसो जुगीन ॥१८॥
फिर जन्म मरण से रहित होय। साधन अबहीं मैं करौं सोय ।
हुय प्रस्न कह्यो गुरुदेव एम। बिन पूछे दाखां गुंझ केम ॥१९॥
यह मन्त्र अगम जानत महेश। सो सती प्रती नाहिन कहेस ।
हम प्रेम समझि तेरो विशेक। कहुं राम नाम दृढ़ धार टेक ॥२०॥
रट रसन प्रथम मन पवन साध। सुख देखहुं ताको अति अगाध ।
चित धार गुफा बैठे एकन्त। मन हर्ष पाइके परम तन्त ॥२१॥

दोहा

प्रथम रसन में स्वाद ले, द्वितिये कंठ हुलास ।
तृतिये हिरदै फुरकतनु, चतुरथ नांभि प्रकास ॥२२॥

सिम्रण (जु) चार प्रकार सिद नाभि थके ममकार ।
सुरति पवन मन मेलकर चले रकार अगार ॥२३॥

चौपाई

पूरब से पाताल सिधाया। पश्चिम घाट हुइ मेरु चढ़ाया ।
आकाशां सुख रहा लुभाई। सुरति शब्द मिल केलि कराई ॥२४॥
मच्छी सात समंद तजिदीया। ब्रह्मवृच्छ चढि सो रस पीया ।
वृक्ष अदृष्ट दृष्टि नहिं आई। मूल न डाल न पात न छाई ॥२५॥
मुक्ती फल आगै अद्‌भुता। चाख्या तिके अमर अवधूता ।
माया के गुण रहे जुलारे। सुरति शब्द गत दशमें द्वारे ॥२६॥
इड़ा पिंगला सुषमन मेला। त्रिकुटी संत करै नित केला ।
ररंकार ध्वनि शून्य समानी। पंच तीन चत सप्त थकानी ॥२७॥
महमाया ज्योती प्रकृत्तं। सुन आतम इच्छा परसत्तं ।
भाव प्रभाव निकेवल हूआ। जोगी जन्म मर्ण से जूआ ॥२८॥
मिली बून्द सायर के माहीं। लोन पूतली गत मिल ताहीं ।
हद बेहद द्वै भेद न रहिया। अवरण ताहि वरण किमि कहिया ॥२६॥

दोहा

सद्‌गुरु अविरल वचन सुनि, उर धरि सो विधि कीन्ह ।
घट विच औघट प्रकट हुई, त्वंतत तजि असि चीन्ह ॥३०॥

छंद पद्धरी

इक दिवस गुफा मध विराजमान। सुर पठइ अप्सरा छलन जान ।
तिन हाव भाव अति करै आय। नहीं दृष्टि खोल देखी जु ताय ॥३१॥
फिर भेट धरी बहु मिष्ट चीज। नहि संत वस्तु उन हाथ लीज ।
इमि अडिग मत्ति देखे दयाल। कर नमस्कार चाली सकाल ॥३२॥
जन भयो ज्ञान केवल प्रकास। पर आप और कै जन्म तास।
सूझत सब कर की रेख तेम। गुरु पास उचारे वचन एम ॥३३॥
वहां वृथा पड़ी धुर आथ सोइ। यहँ सदावर्त करि सुफल होइ ।
श्रीस्वामी उचरे सुनो दास। तुम सूझत कैसे सो प्रकास ॥३४॥
श्रीरामभजन अरु कृपा आप। तो काहै कीजै दुख संताप ।
जिन दियो जन्म सो कर संभाल। कण कीड़ी कुंजर मणहिआल ॥३५॥
विश्वासनाहिं तिन दुख अपार। सुनि वचन द्याल मन समझिधार ।
सो प्रसिद्ध भई के दिवस पाइ। गुर्जर धर पावन करी जाइ ॥३६॥

दोहा

सम्वत् अठारहसे प्रसिध, वर्ष तैंयास्यो मान ।
मिगसरवदी त्रयोदशी, रामत करी निधान ॥३७॥

छंद पद्धरी

पूरण सुत राखे रामधाम। तन व्याधि भई नहिं संग स्वाम ।
गुरु सहर वड़ोदे पहुंच जाय। वहाँ द्विज पति पत्नी पद सुनाय ॥३८॥

सो रामकृष्ण के शब्द जानि। आगूं झड़ उचरे आप वानि।
इक दिवस शिष्यतन कष्ट जान। चिन्ताकर सुमरे परम प्रान ॥३९॥
जब दंडी दीन्हों दर्श आय। क्यों सोचत हरिशंकर सुखाय।
सुनि वचन भयो आनंद अपार। सब शिष्यां प्रती कहि दुःख निवार ॥४०॥
तिहि दिवस प्रसिद्धी भई एह। सों हम बरणी जो सुनी तेह।
हम हैं अति बालक बुद्धि हीन। गुरु चरित अमित कुल लहहि चीन ॥४१॥

सोरठा

व्राजे दीन दयाल, गुर्जरधर पावन करन।
पाछी सुरति संभाल, फागण सुदि पूनम सरस ॥४२॥

दोहा

जो अधिकी ओछी बनी, झड़कहूं अक्षर मात।
अर्जुनदास गुलाम तव, क्षमा करहू तुम तात ॥४३॥

॥इति॥

बैद मूंवा रोगी मूंवा, मूंवा जुग जेहान।
हरिया हरिजन नां मूंवा, हिरदै हरि का ध्यान॥
अनन्त श्री हरिरामदासजी महाराज

॥ॐ नमः श्रीमते हरिरामदासाय॥

श्रीअनारामजी महाराज (दासूड़ी) कृत
अनुभव शब्द

साखी

नमस्कार गुरु देव कूँ, करुं पुनि हरि सब सन्त ।
अनाराम कर जोड़ के, बन्दन बार अनन्त ॥१॥
अनाराम की वीनती, हरि गुरु सन्त हमेश ।
अवगुण गुण कर लीजिये, अपणो विड़द महेश ॥२॥

छप्पय छन्द

नमो निरंजन देव, नमो है सतगुरु स्वामी ।
नमस्कार सब सन्त, लिखत है सदा गुलामी ॥
भक्ति दिया निज भेव, भर्म की भींत भंगाई ।
जपूं निरंजन जाप, आन की पूज उठाई ॥
हरि गुरु सन्त प्रणाम है, मन वच कर्म विचार कर ।
अनाराम गुरु बगसिया, एक निकेवल नाम हर ॥३॥

॥साखी॥

भर्म-कर्म सब भांज के, नाम दिया निज तत्त ।
अनाराम सहजां कटे, लख चौरासी खत्त ॥४॥
रटे सदा शिव राम, शेष पयालां उच्चरे ।
ध्रुव को अविचल धाम, राम लिख्यां पर्वत तिरे ॥५॥
मूरख मति को हीण, रसना राम न उच्चरे ।
माया विष प्रवीण, भवसागर कैसे तिरे ॥६॥
रसना भजे न राम, सुकृत कोऊ नां करे ।
बहु कर्मन को ठाम, चौरासी भरमत फिरे ॥७॥

॥इति॥

अथ श्री जीयारामजी महाराज की अनुभववाणी

साखी

परब्रह्म गुरु वन्दना, नमस्कार कर जोड़ ।
जन जीयाराम की वीनती, लीज्यो अनंत करोड़ ॥१॥
हरिं हरि मोतीरामजी, जय जय श्री रघुनाथ ।
अनाराम के चरण में, जियाराम धरे माथ ॥२॥

दोहा

मन पवना को सम करो, सुरत शब्द में पोय ।
जन जिया सतगुरु बिना, ओर न दीसे कोय ॥१॥
मारग-मारग (सब) सत्य है, नहीं मारग में दोस ।
पेण्डो कोस करोड़ रो, पेण्डो करे न कोस ॥२॥
बडप्पन बातां करे बडाई, आतम कूं नहीं सारे ।
जन जीया आप तेरूं नहीं, औरा ने काई तारे ॥३॥
आधो मास आषाढ़ को, इम्रत वूठा नीर ।
कर सम्पत खेती रची, कर सतगुरुं सूँ सीर ॥४॥
सावण साखां सारिये, निरभय करो निदाण ।
भादरियो रलियावणों, उणरो करो बखाण ॥५॥
आसोजा कण नीपज्या, क़ाति भर्‌या भण्डार ।
कर करषण निर्भय भया, भूला फिरे गंवार ॥६॥
जूण-जूण जिव जाय, ओ अवसर नहीं आवसी ।
लख चौरासी जूण भटकने, मानखो पावसी ।
लख चौरासी जूण भटकता, बहुत पड़ेगी मार ।
जन जिया इण जुग में, बहज्यो सोच विचार ॥७॥
थे कांई जाणों बापड़ा, मोथां भक्ति सार ।
जनम अमोलख पाय के, हीरो जास्यो हार ॥

हीरो जस्यो हार, फेर हाथ नहीं आवे ।
घर-घर फिरता जूण, भजन बिन बिरथा जावे ॥
लख चौरासी जूण भटकताँ, बहुत पड़ेगी मार ।
जन जिया इण जुग में, बहज्यो सोच विचार ॥८॥
भक्ति करसी सूरवाँ, ज्याँरा सन्त स्वभाव ।
हरि गुरु से लागा रहे, दिन-दिन दूणा भाव ॥
दिन-दिन दूणा भाव, जिकाँरी सुरता लागी ।
हिरदे प्रेम हुलास, अन्तर में भक्ति जागी ॥
जन जिया बैठे रहे, नाम री सुद्रिढ़ नाव ।
भक्ति करसी सूरवाँ, ज्याँरा सन्त स्वभाव ॥९॥
माया मेरे राँम की, मोह्या सब संसार ।
भेष पहर भक्ताँ ने मोह्या, संन्यासी गृहचार ॥
पढिया गुणिया पण्डित मोह्या, राव रंक क्या राजा ।
तीन लोक में फिरगई माया, एक न छोड्या साजा ॥
माया मेरे राँमरी, वह तो बड़ी अपार ।
जन जिया सतगुरु के शरणे, बिरला उतरे पार ॥१०॥
गायाँ गोविन्द ना मिलें, कह्याँ सरे नहीं काज ।
सुन माहीं धुन लागसी, (जिया) जद मिलसी महाराज ॥११॥

॥इति॥

अथ श्री परसरामजी महाराज कृत
ग्रन्थ संजीवन बोध

साखी

नितप्रति गुरुवंदन करूं, पूरण ब्रह्म प्रणंत ।
परसराम कर वंदना, आद अन्त मध सन्त ॥

दोहा

रामदास गुरु वंदकर, जिंद करूं कुरवाण ।
कहूं ग्रन्थ उपकार हित, सुरता (श्रोता) सुणो सुजान ॥१॥
रामनाम सत औषधी, सतगुरु संत हकीम ।
जगवासी जिव रोगिया, स्वर्ग नरक कर्मसीम ॥२॥
करमरोग कटियाँ विना, नहीं मुगति सुख जीव ।
चौरासी में परसराम, दुखिया रहे सदीव ॥३॥
नाम जड़ी पच सहित मैं, देऊँ जुगति बताय ।
परसराम रच पच रहै करम रोग कटि जाय ॥४॥

चौपाई

मुख हमाम दस्तो कर रसणा। ररो ममो बूंटी रस घसणा ।
घस-घस कंठ तासक भरपीजै। यों अठपहरी साधन कीजै ॥५॥
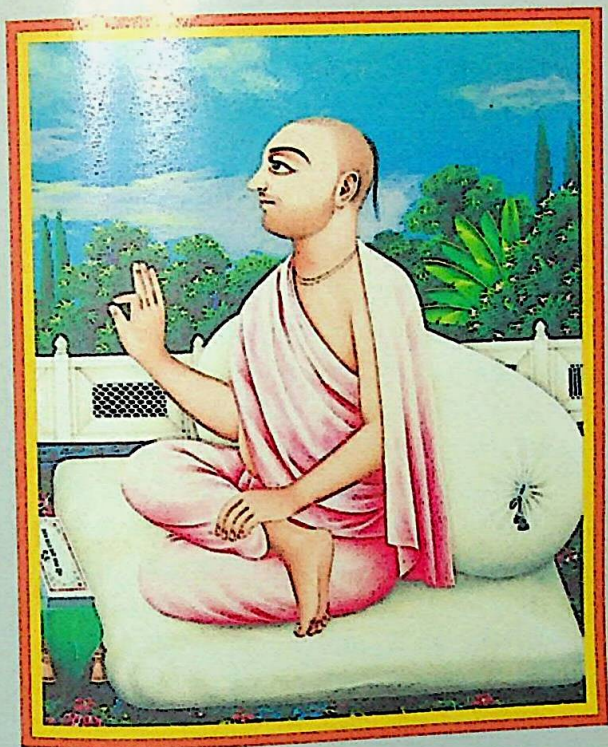
विरक्त शाखा प्रवर्तक श्री परसरामजी महाराज
सूरसागर (जोधपुर)

अब सतगुरु पच देत बताई। गुरु आज्ञा शिष चलो सदाई ।
प्रथम कुसंग पवन बंद कीजै। साध संगति घरमाहिं वसीजै ॥६॥
समता सेझ शयन कर भाई। अहूं अगनिमत तापो जाई ।
भोजन भाव भक्ति रुचि कीजै। लीन अलीन विचार करीजै ॥७॥
तामस चरको दूर उठावो। विषरस चौकट निकट न लावो ।
कपट खटाई भूल न लेणा। मीठे लोभ चित्त नहिं देणा ॥८॥
कुटिल कुटकता दूर करीजै। दुविधा द्वन्द दूध नहि पीजै ।
लालच लोंन लगन मत राखो। मुखते कबू झूठ मत भाखो ॥९॥
आपा बोझ शीश नहिं धरणा। हुय निर्मल मुख राम उचरणा ।
जगत जाल उद्यम परत्यागो। राम भजन हित निशदिन जागो ॥१०॥
निर्गुण इष्ट सिथरता गहिये। आन उपास लाग नहीं वहिये ।
धातु पाषाण काठकी मूरत। लेपी लिखी होई जो सूरत ॥११॥
मणिमय रतन मिनख ठहरावै। सब प्रतिमा की पूज उठावै ।
प्रतिमा पूज उच्छिष्ट उतारा। चरणोदक लूं लैन विचारा ॥१२॥
प्रेम सहित परमातम पूजा। भरम करम छिटकावै दूजा ।
भैरू भूत शीतला माता। कुल का दैव पितर विख्याता ॥१३॥
देवधर्म पाबू अरु गोगा। रामदेव की सेव वियोगा ।
मोगा मडा थापना जेती। रामसनेही त्यागे तेती ॥१४॥
चेतनदेव साध कूं पूजै। राम नाम विन सत न सूजै ।
अडसठ तीर्थ व्रत नहि करहै। एकादशी आदि परिहरहै ॥१५॥

जोग जज्ञ तप विविध विधाना। काती माघ वैशाख सनाना ।
जंतर मंतर तांती डोरा। अणत चोथ आदिक तज भोरा ।।१६॥
अस्थि शीश ले गंग न जावै। गया क्षेत्र नहिं पिंड सरावै ।
करै कनागत पित्र न मांडै। भज भगवन्त भरमना खांडे ।।१७॥
माला जाप तजे कर सेती। ररो ममो रट रसणा सेती ।
पांच नाम पणबंध मिटाजै। केवल राम मंत्र लिवलाजै ।।१८॥
ज्योतिष का मत सत्त न जाणे। राम भरोसे उलटी ताणे ।
सात वार सोले तिथि समता। भद्रा भरम तजै भज रमता ॥१६॥
नवग्रह पूज करै नहिं कोई। हाण वृद्धि एकण सम दोई ।
दिशाशूल जोगण कहां चंदर। राम भजन कर मैटै द्वन्दर ॥२०॥
लगन दुघडिया मुहुरत जेता। राम भरोसे छोड़े तेता ।
जीव जन्तु का सगुन न माने। ज्ञान विचार भरम भय भाने ॥२१॥
साधन सिद्ध सरोदा काचा। हरिजन छोड़े मनसा वाचा ।
ये सब भ्रम कर्म कर दूरा। निरगुन पंथ चले जन सूरा ॥२२॥
अब सुण कुविसन कुपच बताऊं। रामजनां की चाल जताऊं ।
भांग घतूरा अमल न खाजै। तुरत तमाखू व्यसन उठाजै ।।२३॥
मांसमद्द वारांगण संगा। परनारी को तजो परसंगा ।
चढ़ शिकार तृणचर मत मारो। चोरी चुगली चित्त न धारो ।।२४॥
जूआ खेल न खेलो भाई। जन्म जुवा ज्यूं जात विलाई ।

द्यूत कर्म ते दूरा रहिये। कुमती कुटली संग न वहिये ॥२५॥
अणछाण्यो जल पीजै नांही। सूक्ष्म जीव नीर के मांही।
गाढ़ा पट कूं दुपट करीजै। निर्मल नीर छाण कर पीजै ॥२६॥
जुंगत जिवाणी जल में डारो। महीं दया की चाल विचारो।
सार सार गुण लेत उठाई। देख असार देत छिटकाई ॥२७॥
चार वरण को उत्तम धर्मा। राम नाम नहचै नह करमा।
ब्राह्मण षट कर्म वन्धे नांहीं। सब आचरण नामके मांही ॥२८॥
छत्री राजनीति मथ चालै। जन्मत कन्या घात न घालै।
लालच लोभ वैश्य तजदेवै। अनन्य भांति संतन कूं सेवै ॥२९॥
शुद्र उदर उद्यम करि भरिये। नीच कर्म सभी परिहारिये।
उज्जल किरिया लेत संभाई। कुल करणी के निकट न जाई ॥३०॥
चार वर्ण में भक्ति करावो। सो सत्गुरु के शरणे आवो।
सत्गुरु बिनां भक्ति नहिं सूझै। भर्म कर्म में जीव अलूझै ॥३१॥
ये सब कुपच करीकर टालै। पल पल अमृत जडी संभालै।
सत्गुरु वैद कहै ज्यूं कीजै। अग्या मेट पांव नहिं दीजै ॥३२॥

दोहा

पच सच राखे परसराम, चाखे प्रेम प्रकास।
यूं अठपहरी साधतां, सकल करम का नास ॥३३॥

चौपाई

भर्म कर्म कछु रहण न पावै। नाम जडी का निश्चय आवै ।
राम नाम औषध ततसारा। पीवत पीवत मिटै विकारा ॥३४॥
कंठ कमल ते हिरदे परवेसा। तीन ताप मिट काम कलेसा ।
उर आनंद हुय गुण दरशावै। नाभ कमल मन पवन मिलावै ॥३५॥
नाभी रगरग रोम रंकारा। नख चख बिच औषध विस्तारा ।
वंक पछिम हुय मेरू लखावै। दशवैद्वार परम सुख पावे ॥३६॥
तिरवेणी तट अघट अणंदा। सुन घर सहज मिटै दुख द्वंदा ।
शून्य समाधि आदि सुख पावै। सद औषध गुरु भेद बतावै ॥३७॥

दोहा

सब घट में सुख ऊपजै, दुख नहिं दरसै कोय ।
परसराम आरोग्यता, जीव ब्रह्म सम होय ॥३८॥
महारोग जामण मरण, फिर नहिं भुगते आय ।
अमर जडी का परसराम, निरणय दिया बताय ॥३९॥

॥इति॥

अथ श्री सेवगराम जी महाराज कृत झूलणा

साखी

प्रणम्य राम गुरुदेवजी, सब सन्त शीश निवाय।
सेवग तीनों बंदियां, विघ्न विलय हुय जाय ॥१॥

अथ श्री गुरुदेव को अंग
झूलणा

परसा गुरुदेव मोसिर तपै, निज नांम निसांण रुपावता है ।
सब भांज भरम करम दूरा, जीव जमकी पास छुड़ावता है ॥
रियाव दुखन सूं काढ़ लेवै, सुख सागर मांहि झुलावता है ।
कर सेवगराम हि सेव सदा, उर ग्यांन वैराग उपावता है ॥१॥
बंदे चेतन होय चेतार सांई, सतगुरु दे ग्यांन चेतावता है ।
नित निरभै अति आनन्द करै, काल कीर तें जीव बंचावता है ॥
सचा सैंण सो सांई मिलाय देवै, जग झूठा को झूठ बतावता है ।
कहै सेवगराम समझ नीकै, सब सुखदे दुःख छोड़ावता है ॥२॥

अथ उपदेश को अंग

नर जाग जगावत सतगुरु अब, सोय रह्या कैसे सझिये रे ।
सठ आग गिरै मांहि काहि जरै, चल साध संगत मांहि रंजिये रे॥

नित लाग रहौ निजनांम सेती, इक संग विषयन का तजिये रे ॥
तेरा भाग बड़ा भगवंत भजौ, कहै सेवगराम समझिये रे ॥१॥
सब दानव देव पुनंग कहा, एहै धरम च्यारूं वरणका रे ।
पुन नर अरु नार अंतज एही, फिर मुसलमान हिन्दुन का रे ।
तुम पैंडा पिंजर मैं पेस करो, नर ये ही है रहा रसूल का रे।
कहै सेवगरामहि राम रटो, निज जानिये मिंतर मूलका रे ॥२॥
नित सांम के कांम सधीर रहै, सोई हक हजूर में पावता है ।
देख नेकी नीके क़र भर देवै, फिर बदी न बीसर जावता है ॥
कोऊ राव'रु रंक अमीर हुवौ, जिसा करै तिसा भुगतावताहै ।
कहै सेवग हक हिसाब करै, तहां पखा पखी न चलावताहै ॥३॥
नेह जोड़िये जगत ईश सेती, तेरी बहै भली बारता है रे ।
प्रीत तोडिये पंच विषैनकेरी, इनमें न कदै भलाकार हैरे ॥
मन मोडिये आय मूरख मिले, वां तो मूंन गह्या ही विचार है रे ॥
नाम लौड़ियें नित एकंत रहो, कहै सेवग योमत सार है रे ॥४॥
नर नांव निज कण छाड़ दिया, कण कूगस कूट्यां न पायगा रे ।
फिर सांई की सेव विसार धरी, सेयां संबल हाथ क्या आयगा रे ॥
मुख अमीं अचवन नांहि किया, नीर ओसहु नांहि अघायगा रे ।
कहे सेवगराम समझ बिनां, नर वार बीतां पछतायगा रे ॥५॥

अथ चेतावनी को अंग

इन देख दया मोय आवत है, नर मार मुगदर खायगा रे ।
यांहां तो किये करम निशंक मार्नी, वहाँ तो जाब कछू नहिं आयगा रे ॥
हक पूछै हिसाब हजूर मांहि, जब लेखा दिया नहिं जायगा रे ।
कहै सेवग सांम सूं चोर भया, नर जम के हाथ विकायगा रे ॥१॥
देखो देखो दुनियन की दोस्ती रे, मोय देख अचंभाई आत है रे ।
कछु सार असार विचार नहिं, सठ छाड़ अमी विष खात है रे ॥
नित भोगत भोग अघाय नहीं, फिर वेही दिनां वेही रात है रे ।
सुन सेवगराम हैरान भया, कछु बात कही नहीं जात है रे ॥२॥
धिग धिग जनूं हंदा जीवीया है, सोई आतम राम बिसार सोया ।
मन तन इन्द्री सुख चित दीया, दिन रैण विषे रस मांहि भोया ॥
सठ मोह माया मांहि राच रह्या, देख नैन नारी हंदै रुप मोया ।
कहै सेवगराम समझ बिना, नर तन रतन अमोल खोया ॥३॥
दरियाव दुःखन के झूल रह्या, सुख सागर नाहिं संभारिया है ।
अरू बैरीयन के बस होय रह्या, चित सैण सनेही सूं टारिया है ॥
सठ झूठ सू मूंठ सधीर गही, टुक सांच को नाहिं संभारिया है ।
कहै सेवगराम क्यूं सुख लहै, गुरु राम जु संत बिसारिया है ॥४॥
कोउ जात न पांत कुटुम्ब तेरा, धन धांम धर्या रह जायगा रे ।
अरु मात न तात न भ्रात संगी, सब सुत दारा न्यारा थायगा रे ॥

जब जम जोरावर आय घेरे, तब आडा कोउ नहिं आयगा रे ।
कहै सेवगराम संभार सांई, ए तो जीव अकेला ही जायगा रे ॥५॥
यहु सुख संसार सुपन जैसा, सो तो जागत जाय विलायगा रे ।
जैसे छाहं बादल की जोर बनी, सो तो नेक न थिर रहायगा रे ॥
पुनि सीत का कोट सूरज उदै, नीर अंजरी नाहिं ठैरायगा रे ।
कहै सेवगराम संभार सांई, अैसे जिंद तेरी चल जाएगा रे ॥६॥
यहु रूप जोबन तो थिर नहीं, दिन च्यार की बार बजायगा रे ।
इक रंग पतंग सुरंग बन्या, सो तो देखत ही उड़ जायगा रे ।
तिण ओस का नीर केतिक वेर्‌यां, सूर उदै हुवां सुस जायगा रे ।
कहै सेवगराम संभार सांई, ऐसे जिंद तेरी चल जाएगा रे ॥७॥
नर जोवंत कहा संभार सांई, यहु बार बीतां पिछतायगा रे ॥
जब जोबन जाय विलाय सबै, सिर जुरा बुढ़ापाई आयगा रे ॥
सिर हाथ रु पांव कंपण लगै, देख पीछे क्या काम सरायगा रे ।
कहै सेवग मंदिर द्वार लगै, जब काढ्या कछु नहिं जायगा रे ॥८॥
नर रटले राम सताब सेती, यहु बार न बीतण दीजिये रे ।
सिर जुरा बुढापाई आय घेरै, काल सीस गह्यां कहा कीजिये रे ॥
जब लागी है लाय बुझावणे कूं, सठ कूप कदै न खिंणीजये रे ।
कहै सेवगराम समझ प्यारे, पाल पाणी पैला बांध लीजिये रे ॥९॥
नर करणा हो सो कर लेवो, यहुं मौसर जाण न दीजिये रे ।

तुम सांझ करत सवेर करो, दिन मांहि करो जाम कीजिये रे ॥
मोहोरत करत घटी जु करो, पल छिन मांहि कर लीजिये रे ।
कहै सेवग कियां न ढील वणै, ए तो सास उसासां छीजिये रे ॥१०॥

अथ काल चेतावनी को अंग

देखो जाल पड्या जोखा मान रह्या, काल डाढ़ में कैल पिछानता है ।
कछु भाखसी का भय नांहि रखै, खौड़ा खील की मील न मानता है ॥
चौकीदार चहुं दिस घेर रह्या, टुक उनकी संक न आनतां है ।
कहै सेवगराम ध्रिकार सोई, ऐसे दुख कोही सुख जानता है ॥१॥
यहु जग है जाल कुटुम्ब कालादिक, भाखसी ग्रेहै प्रवांनियै रे ।
पुनि कांमण खोड़ो है खील भया, सुत मोह का ताक पिछाणिये रे ॥
परिवार पोरायत संत कहै, सब सुनही के सत मानिये रे ।
कहै सेवग इनका संग तजो, अब जान के काहि बंधानिये रे ॥२॥
देखो दल अठारे पदम हुता, सो तो सबही काहां समायग्या रे ।
पुन कुल कैरव हंदा जोर भया, सो तो रज में रज मिलायग्यारे ।
जमी छप्पन क्रोड यादव हुता, सुन लीजिये सब विलायग्या रे ।
कहे सेवगराम न बंच सक्या, काल सींग सपूंछाई खायग्यारे ।३॥
ऐसी रावण की रजधानी दुती, जाका खुर न खोज न पायबी रे ।
महि चकवै रु मंडलीक भया, ज्यांका रह्या न बीज बीजायबीरे ॥

धर धार औतार विलाय गऐ, ज्यांकी रही है कीरत गायबी रे ।
कहै सेवगराम संभार सांई, नर तेरी केती इक सायबी रे ॥४॥
यहु मंडिया मंड मंडाण सबै, सो तो आखर जाय विलायगा रे ।
सब दानव देव पुनंग कहा, देख काल चुने चुन खायगा रे ॥
बप दीसत दिष्ट आकार सबै, तेतौ समो समा हुय जायगा रे ।
कहे सेवग जाय अंजन सबै, थिर एक निरंजन थायगा रे ॥५॥
आप नट नारायण होय रह्या, विध विध का खेलण रचिया है ।
कोउ गावत है कोउ रोवत है, कोइ नाटक नाचहि नचिया है ॥
फिर आखर लेह समेट सांई, कोउ काल आगे नहिं बंचिया है ।
कहे सेवगराम समझ नीकै, बाजी झूठ सबै सांई सचिया है ॥६॥

अथ साच को अंग

देखौ कुल कबीर न राह चल्या, जिन रोजा निवाज न ठांनिया है ।
जन दादूई नांम संभार नीकै, कलमाह कुरांन न गानिया है ।
इक बाजिन्द पूत पठाण हन्दा, जिन मका मसीत न मांनिया है ।
ऐ तो मुसलमान तें हिन्दु भया, कछु आपना नफा पिछांनिया है ॥१॥
औजूंद अंदर में सुच करै नर मांही निवाज गुदारता है ।
फिर मका मकर कों दूर करै, दिल भीतर बांग पुकारता है ॥
सब जीव जंतन पै मैहर करै, कलमाह करद न पावता है ।
कहै मुसलमान सोई मुल्ला, अल्ला अलेप को पावता है ॥२॥

अथ त्याग को अंग

नर नार नाहारी सूं राच रह्या, या तौ देखत आंखियांमीचहै जी ।
नर सुर असुर पुनंग कहा, इन खाय बड़े बड़े मीच है जी ॥
तहां खुर न खोज रह्या कछू, फिर ऐसी बलाय को ईछ है जी ।
कहै सेवग इनका संग तजौ, ए तौ महानीचन का नीच है जी ॥१॥

अथ त्याग भुगतण को अंग

देखो कुंजर चढिया कूद पड्या, नगर रासब वांहण चित दिया ।
कर डारत सार असार गहै, सठ छाड़ अभीरस विष पिया ॥
फिर किनक कामण होय रह्या रत, त्याग निरभाग मिलापकिया ।
कहै सेवगराम ध्रिकार तिनै, जिन स्वांन सभाव संभायलिया ॥१॥

अथ साध को अंग

रत रांम रह्यावत और नहीं, इक गुण गोविन्द का गावता है ।
गत काम किया गुरु ग्यांन सेती, जत सत को नित निभावता है ॥
मत सन्तन का सब धार लिया, उर और कुमत न लावता है ।
दत देत है राम रत्तन जैसा, सोई सेवग को संत स्वावता है ॥१॥

अथ साध महिमा को अंग

धिन धिन जनहू की जननी है, जिनके जन उदर आइया है ।
अरु धिन जनु हंदा तात है जी, जिनके जन वंस कहाईया है ॥

फिर धिन है कुल कुटुम्ब सबै, जिन जन को गोद खिलाइया है ।
कहै सेवग संत सो धिन है जी, हरि को रट हरि समाइयाहै ॥१॥

अथ विरक्त को अंग

गहै ग्यांन वैराग भक्ति सदा, जत सत संतोष उपावता है ।
गलि घाट का चीरड़ा लेत सोधी, कंथा जोड़ गुजर चलावता है ॥
कर अटन लेह अहार भिख्या, टुका टेरां सूं देह निभावता है ।
कहै सेवगराम इसा जन को, अज सुख अलप लखावता है ॥१॥
गलै गूदड़ा हाथ में ठीकरा है, निज जग सूं रहै उदास है जी ।
वाके संगी तौ एक शरीर रहै उनकी ऊ रखै नहिं आस है जी ॥
परबत पहाड़ कै वन मांही, वाड़ी बाग मसांण में वास है जी ।
कहै सेवगराम है संत सोई, नित करे फकीरी विलास है जी ॥२॥
चढ्या ग्यांन के गज घूमत डोलै, इक चेतन ब्रह्म को ध्यावता है ।
लारै कूकर जग अनेक लेवो, उनकी ऊ शंका नहिं लावता है ॥
कोई निंदत ताहि विरोध नहीं, अरचै ताहि न नेह लगावता है ।
कहै सेवगराम विरक्त सोई, हर्ष शोक न उर उपावता है ॥३॥
उनमत डोलै मुखां नहिं बोलै, चलै आपन सैज सभांय है जी ।
कोउ राव'रु रंक अमीर हुवो, उनके तो सभी इक भाय है जी ।
काच कंचन कंकर हीर बीचे, कुछु भिन न भेद लखाय है जी ।
कहै सेवगराम विरक्त सोई, चित राम रह्या लिव लाय है जी ॥४॥

अथ ग्यांन गरीबी को अंग

सब राम गरीब नवाज कहै, कहाँ धींग निवाजहि देखियै रे।
तातैं ग्यांन गरीबी विचार रहो, जोग जुगत या मेंहि लेखियै रे ॥
उर और अग्यांन विध्वंस करौ, बाकी रह्या कछु इक रेखिये रे ।
कहै सेवग हरिजी होय रह्या, दीना दीन कै बस बसैखिये रे ॥१॥
गज होय गरीब पुकार करी, तज कमला कर धियाइया वे ।
जन टेर प्रह्लाद अनाथ भया, नाथ वेर केतिइक लाइया वे ॥
जब द्रोपदी दीन आतुर भई, हरि उनका चीर बधाइया वे ।
कहै सेवगराम अैकाज किया, जब निवाज गरीब कहाइया वे ॥२॥

अथ अष्टक

छंद त्रिभंगी

गुरु मुख पूरा सुमरण सूरा ज्ञान जहूरा घन लूरा ।
कामहि चक चूरा कर भकपूरा क्रोध करुरा नंहिं मूरा ॥
जग सेती दूरा हरी हजूरा परस्या नूरा प्राणपती ।
यह लच्छन होई फक्कर सोई फिकर नहीं है एकरती ।
जी फिकर नहीं है एक रती ॥१॥
करिया वन वासा तज तन आसा रहै निरासा निज दासा ।
काटी मोह पासा आनन्द खासा दोष तिरासा नंहिं मासा ॥

वे करै विलासा हरिजन पासा मान निवासा इन वरती ।

यह लच्छन० ॥२॥

सर ज्यां बिचराई सलित बहाई नीझर जाई भरलाई ।
गिरि कन्द वसाई देवल रहाई छत्री ताई बन मांई ॥
कबु घाट उँहाई हाट थिराई शून्य लहाई तज वस्ती ।

यह लच्छन० ॥३॥

है जर जर कन्था ज़ोड़म जन्था आदि न अन्ता सो सन्ता ।
तन ढाक लयन्ता शीत निवृन्ता कोमल अन्ता नहिं चहन्ता ॥
पुर अटन करन्ता भिक्षा लयन्ता देह निभन्ता उनसेती ।

यह लच्छन० ॥४॥

कुंजर ज्यों डोले मुखां न बोलै पलक न खोलै मद झोलै ।
कोई धूम धकोलै दण्ड दिरोलै गारी बोलै मति तोलै ॥
कोई वस्तर खोलै छीन उरोलै नहीं रिसोलै उन सेती ।

यह लच्छन० ॥५॥

भिनसार असारी कर निरधारी ज्ञान विचारी उरधारी ।
ब्रह्मा तृन हारी राजा नारी रंक निहारी समसारी ॥
कर कंचन डारी त्यागी नारी इन्द्रयां जारी जीत जती ।

यह लच्छन० ॥६॥

विधि आदि अन्ताई जानि सवाई गौप्य कहाई नहिं वाई ।

इच्छा विचराई बन्धन नाई हुकुम सदाई हरि माई ॥
जीवन मुक्ताई या तन ताई रम मिलाई छाँड तती ।
यह लच्छन० ॥७॥
रौरव पूराई कसर न काई केवल ताई सुख पाई ।
वे मरजी बाई रहै सदाई अन्तर माई लिव लाई ॥
पद शीश नवाई सेवग ताई धिन धिन साई निरवरती ।
यह लच्छन० ॥८॥
अष्टमी दिन अष्टक भया, महिमा जनकी जान ।
सेवगराम वर्णन किया, यह फक्कर का ज्ञान ॥
॥इति॥

अथ सन्त भजनावली

● रे तुझे आय मिलेंगे, रसना राम पुकार ॥टेर॥
मन समझाय लायचित चरणे, तोहि करेंगे पार ॥१॥
सुमरण साझि उदास उलटि ध्वनि, है सारां निज सार ॥२॥
सत करिमान असत करि कानै, कर गहि देगा तार ॥३॥
जैमलदास हरि भक्ति विहुणी, बाजी बणी असार ॥४॥
● अवधि सिराणी तेरी, हरि सुमरे क्यों नाहिं ॥टेर॥
आयु गयी तूं चेते नाहीं, औसर बीतो जाहिं ॥१॥

नरपति भूपति ऐसे जानों, संपति स्वप्रे माहिं ॥२॥
हय दल हस्ती दास घणा संग, ऊठि अकेलो जाहिं ॥३॥
झूठे सुख में राचि रह्यो है, हरि सुख विसरै काहिं ॥४॥
जैमलदास भव नीर तिरन को, राम नाम घट मांहि ॥५॥

● अजहूं चेते नांहीं, आयु घटंती जाय ।टेर॥
ज्यूं तरु छाया तेरी काया, देखत ही घट जाय ॥१॥
ऐसो दाव बहुरि नहिं लाभै, पीछे ही पछिताय ॥२॥
जैमलदास काच करि काने, तत ही लैणा ताय ॥३॥

● क्या परदेशी की प्रीत, जावतो वार न लावै ।टेर॥
आत न देख्यो जात न जाण्यो, क्या कहियां वनि आवै ॥१॥
ऐसे वास फूलन तें विछुरे, मांहो मांहिं समावै ॥२॥
जैसे संग सरायको मेलो, दिन ऊगां उठि जावै ॥३॥
जैमलदास अगम रस घट में जो खौजे सो पावै ॥४॥

● मेरी जिंद कुरवाण, सांईदी सूरत पर वारी हो ।टेर॥
सांईदी सूरत मेरे दिल विच वसदी, लागै मोहि पियारी हो ॥१॥
दरसन तेरो जीवन मेरो, मेटो भरम अंधारी हो ॥२॥
आसन तेरो सहज सिंघासन, पांचू प्रेम पुजारी हो ॥३॥
जैमलदास करै अरदासा, राखो शरण तुम्हारी हो ॥४॥

● मैं देख्यो दिल मांही, झूठो मोह पसारो रे ।टेर॥

रंचियक सुख के कारणे, हीरो सो जन्म न हारो रे ॥१॥
बंधन बेड़ी है जम पेड़ी लागू काल तुम्हारो रे ॥२॥
मैं तैं तोड़ मोड़ दल पांचू, हुय मन तूं हुसियारो रे ॥३॥
जैमलदास भजन कर वेलो, आखिर होत अवारो रे ॥४॥
● मुरधर को पार पाई रे ॥टेर॥
शंभू शेख विष्णु ब्रह्मादिक राम नाम लिवलाई रे ॥१॥
सुर नर नाग निगम मुनि नारद, नाम निरंजन ध्याई रे ॥१॥
आदि जुगादि अगम सूं आगै, ज्ञान ध्यान गुण गाई रे ॥३॥
जन हरिराम राम निसदिन में, सुमर-सुमर सुखदाई रे ॥४॥
● पाणी में मीन पियासीरे, मोहि देखत आवै हांसी रे ॥टेर॥
गुरु बिन ग्यान ध्यान बिन चेला, निस दिन फिरत उदासी रे ॥१॥
जल विच मींन मीन बीच जल है, निस दिन रहत पियासी रे ॥२॥
किसतूरी मृग नाभ बसत है, बन बंन सूंघत घासी रे ॥३॥
आतम ज्ञान बिना नर भटकत केइ मथुरा केइ कासी रे ॥४॥
कहै कबीर सुणी भाई साधो सहज मिल्या अविनासी रे ॥५॥
● कारण तौरे, म्हारा सदा संगाती राम ॥टेर॥
गिरिवर वासी गुंफा निवासी, चढ़ शिर मेरु पुकारूं मेरा राम ॥१॥
कंथा पहरूं भस्मि रमाऊं, हुय जोगण जग ढूंढूं मेरा राम ॥२॥
यो मन मारूं यो तन जारूं, करवत सीस धराऊं मेरा राम ॥३॥

शीश उतारूं तुम पर वारूं दादू बलि बलि जाऊं मेरा राम ॥४॥

● वाला म्हांरा मैं तो थारी शरण रहेस ॥टेर॥
शरणे आयो बहुत सुख पायो, अंतर ताप दहेस ॥१॥
वीनतडी बालेजीसे करतां, अनंता सुक्ख लहेस ॥२॥
मैं अवला तुम बलवंत राजा, थारे वने वहेस ॥३॥
दादू ऊपर दया मया कर, आवोनी इणही वेस ॥४॥

● करलो रामसनेही प्राणी करलो रामसनेही ।
विनस जायगी एक पलक में या गंदी नर देही ॥टेर॥
रातो मातो विषय स्वाद में, प्रफुल्लित मन मांही ।
जीव तणा आया जम किंकर पकड़ ले गया बांही ॥१॥
मूरख मगन भयो माया में, मेरी करि करि माने ।
अन्तकाल में भई विडाणी, सूतो जाय मसाने ॥२॥
राग रंग रुप नर नारी, सब हुयजाहिंगे खाखा ।
जन हरिराम रहेगा अम्मर, एको नाम अल्लाका ॥३॥

● या घरमें क्या तेरा रे नर, या घर में क्या तेरा ।
जीवजंत न्यारा घर मांही, सोई कहै घर मेरा ॥टेर॥
चींटी चिड़ी कमेड़ी ऊंदर, घर ही में घर केता ।
आया ज्यूं सबही उठ जासी, वासो दिन दश लेता ॥१॥
मेडी मंदिर महल चिणावै, मारै ऊंडी नीवां ।

दिन पूगै नर छोड़ चलेगा, ज्यूं हाली हल सीवां ॥२॥
नव रंग रूप सोले सिणगारा, माया विषय विलासा ।
जन हरिराम राम बिन दुनिया, होसी खास रु फाँसा ॥३॥

● काहेकूं गरबानारे नर काहेकूं गरबाना ।
तलब लिया आया सिर तेरे द्वार खड़ा दरवाना ॥टेर॥
तन झूठा जोवन भी झूठा झूठी सैण सगाई ।
मात पिता सब ही सुत झूठा, आडा कोइ न आई ॥१॥
मरना ऊंच नीच भी मरना, मरना राव रु रंका ।
छाड़ अनीति नीति कछु करियै, मान मरन का शंका ॥२॥
चंगा चीर चढ़ण को चंगा, चंगा खाना पीना ।
एक पलक में छाड़ चलैगो, जंगल वासा कीना ॥३॥
उतहू न लायो नां इत चालै, मूरख माया काची ।
जनहरिराम कहै सो कीजै, भक्ति राम की सांची ॥४॥

● आयजा राम हबोला में रे नर आयजा राम हबोला में ।
साधु संगति मिल ज्ञान परापति, भक्ति मुक्ति की छोला में ॥टेर॥
नर नारायण सूंज मिली है, मत खो टाला टोला में ।
बालपणों हंस खेल गमायो, तरणापो रस रोला में ॥१॥
खान पान अरु मान बडाई कामनि काम किलोलां में ।
स्वप्न देख मत भूल दिवाने, यो जग झामरझोला में ॥२॥

मरता देख तुंही मरजासी, काल नीर तन ओला में ।
देह जीव के होय विछेवा, सासा खूट खटोला में ॥३॥
अवसर अजब राम भजलीजै जीतब सफल सबोला में ।
रामदास निरभै घर यो ही आनन्द हरिजन खोला में ॥४॥

● चेतन राम शरण मैं तेरी, अबकी बेर अरज सुन मेरी ॥टेर॥
जे रीझो तो भक्ति मोहि दीजै, अपनो जानिकृपा हरि कीजै ॥१॥
आदि अन्त मध सकल पसारा, सोई आतम राम हमारा ॥२॥
अचरज देख अचंभो मांहीं, तेरे जन को संसो नांही ॥३॥
जिके बात तनहीं में पाया, जैमलदास सरण तेरी आया ॥४॥

● हरि वेमुख नर जन्म गमायो, कंचन बदलै काच बसायो ॥टेर॥
एकण उदर भरण के काजा, कोटि कंरम नर करत अकाजा ॥१॥
पाहन पूज आनको ध्यावै, आपो आतम देव न पावै ॥२॥
वेद पुराण पढै पढ़ गीतां, राम भजन बिन रहगया रीता ॥३॥
जन हरिराम शब्द गुरु भेट्या जनम मरण का संसा मेट्या ॥४॥

● राम सरीसा अवर न कोई, जिन सुमर्यां सुख पावै सोई ॥टेर॥
राम नाम से अनेक उधरिया, अनत कोटका कारज सरिया ॥१॥
जो हरिसेती लावै प्रीता, राम नाम ताहीका मीता ॥२॥
राम नाम जिनहीं जन लीना, जिन जनवास ब्रह्म में कीना ॥३॥
रामदास इक राम धियाया, परम जोति के मांहि समाया ॥४॥

● मैं मानव तन काहे को धार्यो, हरिजी को अन जल खाय बिगार्यो ।।टेर।।
नव दस मास माता को दुख दीनो, उनको काज कछू नहिं कीनो ।।१।।
पिता को अंश न वंश पिछान्यो, मैं मेरी ममता मन मान्यो ।।२।।
गांव धणी को बंट न दीनो, वास वस्यो जहाँ अनरथ कीनो ।।३।।
कमज्या करण कौल कर आयो, मूल खोय सिर व्याज बधायो ।।४।।
हरिराजी सो दिवस गमायो, सपने सुख संसार लुभायो ।।५।।
राम राय परसण किम होसी, जनम जनम लग ओ जिव रोसी ।।६।।
गुनहगार बहु लूण हरामी, द्याल बाल में है बहु खामी ।।७।।

● दिल में जागत रहिये बंदा ।।टेर।।
हेत प्रीति हरिजन सूं करिये परहरिये दुख द्वन्दा ।
तन जीवन आपा धन सेती, गर्व न करिये गंदा ।।१।।
पद बोलै तन मन के परचै, करणी साच करंदा ।
बरसै भूमि चक्कर षट भेदै अम्बर उलटि भरंदा ।।२।।
ज्ञान गहो गरवा तन साझो आपा अजर जरंदा ।
पच पच काँय मरै पडपंच में सहजां ध्यान धरंदा ।।३।।
राम नाम सत्गुरु परतापै, कापै करम कुरंदा ।
संशय शोक विघ्न नहिं व्यापै, अनहद नाद घुरंदा ।।४।।
निराकार निरभै पद भेदै, कट्या कालका फंदा ।
जन्म मरण मेट्या जग मांही पाया परमानंदा ।।५।।

ऐसा यार न को आतम सा जिन्हां घडी है जिंदा ।
जन हरिराम भरमना भागी, गुरु मिलिया गोविंदा ॥६॥

● संतो है हक मरणा सबको ।
जो कुछ किया जाए अब करणा बेग सुमरणा रबको ॥टेर॥
धंधे मांहि भयो नर अंधो मनवो माया सेती ।
एके राम नाम विन टेरे, मुखां पडेगी रेती ॥१॥
घूंघा गोली ज्यूं धन गैला, खिण-खिण ऊंडी घालै ।
जब तें जीव पकड़ ले जावै, तन धन साथ न हालै ॥२॥
वेद पुराण पढे पढि पंडित खंडित करे न कोई ।
अक्षर एक अखंडित ही विन, जावै दोझक सोई ॥३॥
बाला तें तरणा भयो बूढो, तोहियन आपे चेती ।
जन हरिराम बीज विन वाह्यां कहा निपावै खेती ॥४॥

● गुरु मेरे ऐसी कदर बताई, तातें सुरत शब्द घर आई ॥टेर॥
रसनां नाम नेम कर लीया, निशि दिन प्रीति लगाई ।
हिरदा मांहि प्रेम परकास्या, आतम की गम पाई ॥१॥
नाभी मांहि नाद परकास्या सबही बन गुंजाणा ।
पछिम दिशा की वाटी खुल्ही, मेरुदंड हुय जाणा ॥२॥
सहजां उलट आद घर आया, त्रिवेणी की तीरा ।
रामदास सुन सागर मांही, चुगत हंस जहां हीरा ॥३॥

● जोबन धन पावणा दिन चारा, जाको गर्व करै सो गंवारा ।टेर॥
पशू चाम की बनत पनहिया, नौबत मंढत नगारा ।
नर तेरी चाम काम नहिं आवै, बल जल होसी छारा ॥१॥
हाड चामका बन्या पींजरा, भीतर भर्या भंगारा ।
ऊपर रंग सुरंग लगाया, कारीगर करतारा ॥२॥
दश मस्तक वाके बीस भुजा है, पुत्र बोहो परिवारा ।
मरद गरद में मिल गया वे भी, लंकारा सरदारा ॥३॥
यो संसार औस को पानी, जातां लगै न वारा ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, हरि भज उतरो पारा ॥४॥

● परम सनेही प्यारा प्रीतमो देख्यो म्हारै दिलड़ारै माहिं ।टेर॥
बादल बादल बीजली, ऐसे घट घट राम ।
मूरख मरम न जाणियो पायो नाम न ठाम ॥१॥
सतगुरु तो वोहोरा भया सिख सौदागर जान ।
हरि सोदो चित चौहटो तोल न मोल प्रमान ॥२॥
सत्गुरु बोहोरा होय के वस्तु अमोलख देत ।
सिष सांचा गाहिक मिलै तन अरु मन कर लेत ॥३॥
विषम सरोवर नीर की अति ऊंडी बहु धार ।
एक मना तिर जावसी दूजा डूबणहार ॥४॥
अगम देश अमरापुरी जहां हरिजन का वास ।

हरिरामै जहाँ घर किया जन्म मरण मिट त्रास ॥५॥

● मनरा तीरथ न्हायलै, क्या भटकण से काम।
अड़सठ तीरथ सब किया एक कह्या मुख राम ॥टेर॥
मन मांही मथुरा वसै, दिल हि द्वारिका जान।
काया काशी न्हायले, आठों पहोर सिनान ॥१॥
बारै सोलै सहेलडी, मिलकर न्हावण जाय।
त्रिवेणी के घाट में नितही स्नान कराय ॥२॥
पांचुंई पाखर पहिरके चढे पचीसू लार।
नोबत बाजै गैबकी, मारलियो अहंकार ॥३॥
हद छांडी बेहद गया अगम रह्या लिवलाय।
जीव सीव मेला भया, सुख में रह्या समाय ॥४॥
दशमें देवल परसिया, जागी अन्दर जोत।
रामदास जहाँ रमरह्या, पाप पुण्य नहिं छोत ॥४॥

● भरम कोइ सतगुरु भांजै रे, साचो नाम सुणाय ॥टेर॥
सतगुरु मेरे शिरघणी, मैं सतगुरु को दास।
वाके पाय विलूंबिये, काटै जम की पास ॥१॥
जोग जिग्ग जपतप करै, अड़सठ तीरथ न्हाय।
उर आतम इक तार बिना, जग के गेलै जाय ॥२॥
वेद कथा सुन सीख कै, बांचै देवे विचार।

नाम नियारो रहिगयो, करि करि लोकाचार ॥३॥
बिन गुरु गम निश्चै बिनां कहै कहावै कूर ।
हरिरामा उन जीवसूं, देखत रहिये दूर ॥४॥

● मनरे गुराँ का उपकार। बिनां कूंची खोल ताला मुक्ति का भंडार ॥टेर॥
वेद बिन इक भेद भैद्या, कह्या सुणिया नाहिं ।
सहज ब्रह्मा पढै पोथी, एक अक्षर माहिं ॥१॥
उलट हद को चढ्या बेहद, बंकनाली पूर ।
इला पिंगला बीच सुखमण, निरख आतम नूर ॥२॥
बिनां बाती जोत झिलमिल, अखंड दीया लोय ।
देह बिना विदेह पुरुषा लहै महरम सोय ॥३॥
पंख बिन इक जानि भंवरा, बिना बाड़ी बीच ।
हरिरामा रह रास न्यारा, कमल कदंब न कीच ॥४॥

● कोइ प्रीतम राम मिलावै रे ।
प्यास लगी चातक ज्यूं सजनी और न कछू सुहावै रे ॥टेर॥
सहज शृंगार भयो पावक सम, दिन दिन विरह सतावै रे ।
है कोई ऐसो पर उपकारी, हरिजी ने आन मिलावै रे ॥१॥
सो साधू सो पर उपकारी मो उर साल मिटावै रे ।
स्वाती बूंद ज्यों सींच सनेहा, अब मोहि मरत बंचावै रे ॥२॥
कहा करो करुणानिधि स्वामी अब कछु कहत न आवै रे ।

जन तुलसी विरहिन व्याकुलता बिन दर्शन विललावै रे ॥३॥

● कब राम पिया घर आवै रे ।
तलफत प्राण दुखी मन मेरो जलती अग्नि बुझावै रे ॥टेर॥
है कोइ ऐसो परम सनेही, जाय संदेश सुनावै रे ।
विरहिन को अति आतुर ऐसी जागत रैण विहावै रे ॥१॥
तलफ तलफ तन ताला बेली स्वास कल्प सम जावै रे ।
नीर बिनां मछली नहिं जीवै, बीछडियाँ दुख पावै रे ॥२॥
अब तो कृपा करो मनमोहन, दर्शन बेग दिखावै रे ।
जग पूरण व्रैहन अति व्याकुल, मरतक आन जिवावै रे ॥३॥

● सोई जन रामजी को भावे हो ।
कनक कामनी परहरै, नहिं आप बंधावै हो ॥टेर॥
सब ही से निरवैरता, काहू न दुखावै हो ।
शीतल वाणी बोलके, अमृत बरसावै हो ॥१॥
कै तो मौनी होय रहै, कै हरिगुण गावै हो ।
भरम कथा संसार की, सब दूर भगावै हो ॥२॥
पांचूं इन्द्री वस करै, मन ही मन लावै हो ।
काम क्रोध मद लोभ को, खिण खोद बघावै हो ।
सुंदर ऐसे साधु के ढिग, काल न आवै हो ॥४॥

● जिवड़ा थारो कोण संगाती रे ।

छोड़ चलैगो बावरे, कुटुम्ब कुल नाती रे ।टेर॥
राम भजन की वेर है, मत सोय नचीतो रे ।
काल अचानक मारसी, जैसे मृगा कूं चीतो रे ॥१॥
तन धन जोबन झूठ है, कूड़ा कमठांणा रे ।
प्राण सनेही को नहीं, सब लोक विराणा रे ॥२॥
बोहो परिवारो एकलो अंतही उठजाणां रे ।
संग बोलाऊ को नहीं, घर दूर पयाणा रे ॥३॥
करना सो कर लीजियै, अवसर है नीको रे ।
सहजराम भज लीजिये कारज कर जीको रे ॥४॥

● जिया जग जाग न जोयो रे ।
नर देही हरि नां भज्यो यों ही तन खोयो रे ।टेर॥
स्वारथ का सब कोइ सगा, बादल की छाँही रे ।
सुपने का सुख छोड़दे जागै क्यूं नाहीं रे ॥१॥
झूठा सुख संसार का, सांचा कर लीया रे ।
मोह नदी में बह गयो, माया मद पीया रे ॥२॥
मूरख को समझावतां, औगुण कर बूझै रे ।
आपै की आंटी पड़ी, सत साच न सूझै रे ॥३॥
परम सनेही रामजी, सांचा सुखदाई रे ।
हरीदास गोविंद भजो, भरमो मत भाई रे ॥४॥

● समझ मन मूरख गेलारे ।
बाहिर धोयां क्या भयो, घट भीतर मैला रे ॥टेर॥
काम दिवानो यों फिरैं, जैसे छाल्यां में छैला रे ।
बड़ी बड़ी कर छीलसी, छुरियां घाव सहेला रे ॥१॥
मन कहै मीठी जीमले, माणीजै महेला रे ।
सुख जेता दुःख ऊपजे, चौरासी सहेला रे ॥२॥
ठकुराई दिन चार की, सुखपाल गहेला रे ।
नाम बिनां पहुंचे नहीं, यांको यांही रहेला रे ॥३॥
पांच संगाती संग में, गुरजां बाण सहेला रे ।
कहै कबीर समझ्यां बिना, कांई उत्तर देला रे ॥४॥

● कृपानिधान करियो कछु कृपा दीन माथै ॥टेर॥
मैं आदि तुम को अंसा, अब विसर गयो निज वंसा ।
सांसे में आयु विहावै, प्रभू तोहि दया सुख आवै ॥१॥
तुम जीवां के प्रतिपाला, निज देवां देव दयाला ।
सब के जो अंतरजामी, अब मोहि दया कर स्वामी ॥२॥
हम दीनाँ दीन पुकारै, तुम सुणो सिरंजन हारे ।
अब तारण विरद विचारो, सो वेग मुझे तुम तारो ॥३॥
हम सूं कछु नाहिं लहीजै, तुम देव दया नित कीजै ।
हरिदेव सदा हरि तेरो, चित चरण कमल को चेरो ॥४॥

● करुणानिधान सुणियै कछु करुणा कान मेरी ।टेर॥
प्रह्लाद के हितकारी, खंभ फाड देहधारी ।
नरसिंह रूप पायो, सब संतन के मन भायो ॥१॥
गज की अरज तुम मानी, सोतो बदत वेद बानी ।
ग्राह के जो फंद काटे, अघ कोटि कोटि दाटे ॥२॥
तुम केते पतित उधारे, सोतो कविजन गिन गिन हारे ।
अब मेरी बेर राघो, तुम सूता हो के जागो ॥३॥
मैं बेर बेर टेरूं पिया बाट तुम्हारी हेरू ।
महाराजा अवध बिहारी, जन रामसखे बलिहारी ॥४॥
● बिरहिन कूं दर्शन दीजै, साहिब अपनी करलीजै ।टेर॥
मैं राम पिया बलिहारी, प्रभु मेटो तपत हमारी ।
टुक दया दृष्टि भर देखो, जीवन के तारण लेखो ॥१॥
जिव जनम जनम को झूरै, आशावन्त आशा पूरै ।
हरि आदू बिरद बिचारो, अब पलकां पलक पधारो ॥२॥
मोहि स्वास कल्प सम जावै, कब प्रीतम दरश दिखावै ।
जन द्यालबाल बलि जावै, कब रामपिया घर आवै ॥३॥
● पिया क्यूं नहिं अबै पधारो, घर आदू रीति विचारो ।टेर॥
है अबला के बल सांई, धृग् जीव बिनां देह कांई ।
हो अबला प्रांण अधारा, बलिजाऊं प्रेम पियारा ॥१॥

पृथुरोम सुधामन भावै, एक नीर बिनां मरजावै ।
धिन हरिजन दर्शन तेरा, याही में जीवन मेरा ॥२॥
विरहन मन वच क्रम प्यासी, पिया जीवन जीव जियासी ।
तुम ग्वालबाल के स्वामी, अब आवो अंतरजामी ॥३॥
● कब देखूं दरशन तेरा, तुम जीव के जीवन मेरा ।टेर॥
मुझ तुझ बिन चैन न आवै, मोहि पलकां कलप विहावै ।
निशि वासर झुरतां जावै, मोहि और कछू न सुहावै ॥१॥
मेरे जिवड़ा में जक नांहीं, यह कठिण व्यथा मन मांहीं ।
पिया विन दूभर दिन जाहीं, मोहि कैसे रैण विहाहीं ॥२॥
मेरे अंतर अगनि जगाई, मै तो कहूं क़ौन से जाई ।
कोइ आन मिलावे सांई, जाकूं देवूं लाख बधाई ॥३॥
व्रेहन ठाढी मग जोवै, सुख निद्रा सैहज न सोवै ।
लोचन भरे भर रोवै, पिव मिलियां ही सुख होवै ॥४॥
पिव प्यारा ऐसी कीजै, ब्रैहन की आय सुध लीजै ।
पूरण को दर्शन दीजै, प्रभु अपनो विरद वहीजै ॥५॥
● मति देखो करणी हमारी, तुम लेखो विरद मुरारी ।टेर॥
कहा गजराज कियो ध्रम नेमा, डूबत मुख ररर प्रेमा ।
सुनतां ततकाल पधारे, वाके फन्द काट दुःख टारे ॥१॥
कहा अजामेल कियो आचारा, वाकी करणी नांहिं लिगारा ।
सुत हेत नरायण गायो, जमदूतां पास छुड़ायो ॥२॥

कहा कुबजा कियो तप भारी, वाकूं सूंज परापति सारी ।
वाकी कीरति मुख मुख गावै, शुक श्री भागवत बतावै ॥३॥
कहा गनिका पतिव्रत धारी, सो बैठ विमान सिधारी ।
तुम पतित उधारण देवा, सुर नरमुनि लहत न भेवा ॥४॥
शरणागत लेत उबारी, यह आदू रीति तुम्हारी।
गुरु द्याल दरस बलिहारी, ज़न पूरण तनमन वारी ॥५॥

● शब्द गुरु बाण भर मार्‌या, कलेजा छेद कर डार्‌या ।
सूती इक विरहिनी जागी, आरत पिव मिलन की लागी ।।टेर॥
रोम रोम फैल गई पीरा, चलत है सास अति सीरा ।
गल गद गद्द चैनां, बोलत है अटपटे बैना ॥१॥
बदन पर पान ज्यूं पीरा, चलत है नैन में नीरा ।
दिवस कछु धान नहिं भावै, रैण टुक नींद नहिं आवै ॥२॥
नहीं कोई महरमी मेरा, ताहि से दाखिये वेरा ।
कहो दुख कौन से कहिये अपने आप तन सहिये ॥३॥
तलफे ज्यूं नीरबिन मीना, बेदरदी मरम नहिं चीना ।
व्यावर की पीरकूं बंजा, करै क्या ग्यान कूं गंजा ॥४॥
बीती सौ वैद पुन होई, न जाणै दूसरा कोई ।
दीनी सो महरमी होई, भेदी उर जानसी सोई ॥५॥
दरद की पीर अति भारी, लगे नहिं दूसरी कारी ।
सेवगराम व्रेहनी गावै, मिल्यां पिव प्राण सुख पावै ॥६॥

● जगत सब रैण का स्वप्ना, समझ दिल कोई नहीं अपना ।
कठिन है मोह की धारा, वुहो सब जाय संसारा ॥टेर॥
सजन परिवार सुत दारा सबै उस रोज है न्यारा ।
निकल जब प्राण जावेगा, नहिं कोई काम आवेगा ॥१॥
पता जिमि डाल से टूटा, घड़ा जैसे नीरका फूटा ।
इसी नर जान जिंदगानी, चेते क्यूंनि फेर अभिमानी ॥२॥
भूले मत देख तन गोरा, जगत में जीवणा थोरा ।
तजो मद लोभ चतुराई, रहो निशंक जग मांई ॥३॥
सदा मत जान या देहा, लगावो राम से नेहा ।
कटे जम जालदा घेरा, कहै गंगादास जन तेरा ॥४॥

● पाऊं मुझ पीतम प्यारा हो ।
तन मन सोंपू तुझ कूं मिल यार हमारा हो ॥टेर॥
जो दम अहला जात है, सुमरन विन सारा हो ।
आपा उलट विचारिये, व्रहवारंवारा हो ॥१॥
तन जोबन हुइ जावसी, छिन मांहि छारा हो ।
सासोसास संभारिये आतम आधारा हो ॥२॥
सुख दुख सब संसार का, अकरूर अकाश हो ।
अघर विनां घर को नहीं, भर दूभर भारा हो ॥३॥
जन हरिराम प्रकाशिया अंतर उजियारा हो ।

दर्शन हरिदीदार का, दशवे हुय द्वारा हो ॥४॥
● साजन सुखदीजै न्यारा हो ।
रोम रोम में रम रहे, पीरन के प्यारा हो ॥टेर॥
अबला अति आतुर भई, आपनपो दीजै हो ।
सांइयां तुझ बिन ना सरै, मुझ बेग मिलीजै हो ॥१॥
तन मन तेरा तूँ घणी, मेरा नहीं सारा हो ।
भली बुरी सब जीवकी, तूंही जानन हारा हो ॥२॥
मैं मिद्धम तन हीनता, तुम उत्तम यारा हो ॥३॥
आपा अंतर मेटके, अपनी कर लीन्ही हो ।
जन हरिरामे दोसती, आतम सूं कीन्ही हो ॥४॥
● अंखियां नीझर लांई, पीव मिलन के तांई ॥टेर॥
पिउ प्यारे को पंथ निहारत, तन मन सों भई ठाढी ।
आवेंगे अपने घर साजन मिलूं बांह भर गाढी ॥१॥
पीव मिल्या सब संसा भागा, सुख दुख मेट शरीरा ।
उलटा नीर भर्या सुन सरवर, जहाँ निपजै हरि हीरा ॥२॥
हाव भाव करी आधा लेऊं अन्तर सांई ।
जन हरिराम राम रमतासूं, अधर महल रमां आई ॥३॥
● माई मोरी हरि नहीं पूछी बात ।
पिंड मांहिलो प्राण पापी निकस क्यों नहीं जात ॥टेर॥

पाटन खोलै मुखां न बोले, सांझ नहीं परभात ।
अबोलबे में अवध वीती, काहे की कुशलात ॥६॥
स्वप्ने में हरि दरसण दीन्हीं, मैं न जाण्यो हरि जात ।
नैन हमारे उघरि आए, मरोंगीं विष खात ॥२॥
रैण अंधेरी बिरहने घेरी, तारा गिणत विहात ।
काढ खडग कंठ कापलोंगी, करोंगी अपघात ॥३॥
आवन आवन कहि गये, मोहि मिलन की बात ।
दासी मीरां भई व्याकुल, बालक ज्यों विललात ॥४॥

● एरी सुख सुन्दरी श्याम मिलावे ।
मारी लगी आतम सूं ओर भई निरदावे ॥टेर॥
प्रेम भाव का पहर पटोरा सुरत निरत कर नाचूं ।
अनहद तार तत्त झणकारा, एक अखण्ड धुनि राचूं ॥१॥
अमल कमल का सझ सिणगारा, जागू संजमराती ।
तन मन जोड़ करूं दासा तन, रहूं रामरंग राती ॥२॥
जाग्या भाग भये जग न्यारा, पीव पुरातन पाया ।
जन हरिराम श्याम अरु सुन्दर, अरस परस लिव लाया ॥३॥

● हरि विन ये दिन जात दुखारे ।
सज-शृंगार सकल सुख त्यागे, जादिन तें भये न्यारे ॥टेर॥
सुणरी सखी सावण ऋतु आई, बरषै सब वन प्यारे ।

हमरी देह अजूं तइं ऊन्ही, विरह अनेसा जारे ॥१॥
कौन सुने कौन या माने, उर विच करवत मारे ।
मनही माहिं विसूरै ब्रैहन, मुरछ नैन जल डारे ॥२॥
आरतवंत सदा चातक ज्यूं, सारी रैन पुकारे ।
जन तुलसी प्रभु प्रीतम जनके, घन ज्यूं आन गिलारे ॥३॥

● प्रभुजी प्रेम भक्ति मोहि आपो ।
मांग मांग दाता हरिआगै जपूं तुम्हारो जापो ॥टेर॥
आठ नवे निधि रिधि भंडारा क्या मांगूं थिर नांही ।
दै मोकूं हरिनाम खजाना, खूट कबू नहीं जांहीं ॥१॥
इन्द्र अप्सरा सुख विलासा, क्या मांगू छिन भंगा ।
दीजै मोहि परम सुख दाता, सेवतही रहुं संगा ॥२॥
तीन लोक राज तप तेजूं क्या मांगूं जम ग्रासा ।
दीजे राज अभै गुरुदेवा, अटल अमरपुर वासा ॥३॥
आठ पोहोर औलंग अणघड़ की, ता सेती विसतारूं ।
जन हरिराम स्वामी अरु सेवग, एक मेक दीदारू ॥४॥

● प्रभु एक अरज सुनो अब मेरी ।
मन तन वाच सहित उरसाचे गरज हमारे तेरी ॥टेर॥
मो मन चिंत हरो हरि सबही, तो तन सहज समापो ।
अंतर मुझै उठै विष लहर्‌यां सार शब्द करी कापो ॥१॥

अहनिशि मोहि दहै दिल दाहक, सौ दुःख कह्यो नजाई ।
संकट एह मेट अब समरथ, तुमहो सब सुखदाई ॥२॥
दीन वचन अब सुनो दयानिधि, तुम प्रतिपाल हमारो ।
अघ सोह हरौ करो उर आनन्द, है हरिदेव तुम्हारो ॥३॥

● कोई मन मिरगा कूं मोरे रे ।
तन खेती में चर चर जावै नहिं हे मेरे सारैरे ॥टेर॥
मिरगो एक पांच है हरिणी लार पच्चीस लवारै ।
भरम करम इनका है संगी, जे कोई दूर विडारै रे ॥१॥
निशिदिन नाम करत रुखवारी ज्ञान ध्यान सर धारे रे ।
उलटी सृष्टि मुष्टि बिन संधे सुरत निरत नहीं टारै रे ॥२॥
शील की बाड़ चहूं दिस करकै, प्रेम की फांसी डारै रे ।
जन हरिराम मार मन मिरगो, सबही काज सुधारै रे ॥३॥

● मिरघे ने खेत उजार्‌यो भजन बिन मिरगै ने खेत उजार्‌यो ॥टेर॥
मिरघो एक पांच है हरिणी, जामे तीन छिकारा ।
अपने अपने रस के लोभी, चरत है न्यारा न्यारा ॥१॥
आंबा खाय आंबली खाई, खाई केसर केरी बाडी ।
काया नगर में कछु नहीं राख्यो, ऐसो मृघो उजाड़ी ॥२॥
मन मिरघे ने किसविध राखूं विडरत नांही विडारी ।
जोगी जंगम जती सेवड़ा, पंडित पच पच हारी ॥३॥

शील संतोष की वाड़ कराय लो, गुरू शब्द रुखवारी ।
कहै कबीर सुणो भाई साधो, विरियां भली संभारी ॥४॥

● जोगिया ने ढूंढत जुग भयो कहूं देख्योरी माई ।
कोई रे बतावे जोगी आवतो जाने लाख बधाई ॥टेर॥
पानां छाई रे जोगी रावटी, फूलां सहज विछाई ।
आयो जोगी रमगयो, भिक्षा देण न पाई ॥१॥
जोगियारी झोली हीरां जड़ी, मांहे माणक भरिया ।
जो मांगै जाकूं देत है, ऐसा दिल दरिया ॥२॥
एक जोगी दूजो मित्र हैं तीजो मस्त दिवाना ।
चौथे तकिया रालकै, धरती असमाना ॥३॥
शैषनाग सेवा करे, चंद्र पूरे चराकी ।
लेखण बाके हाथ है, कछु काढै बाकी ॥४॥
देखो जोगीरी करामातड़ी, मनसा महल बणाया ।
बिना थांभा बिन थोबली, असमान रचाया ॥५॥
कहै कबीर मैं क्या कहूं, क्या कहि के गाऊं ।
अलख निरंजन राम है, बाका पार न पाऊं ॥६॥

● अब तो नाथ दया करो समृथ दाता ।
जीव तड़फै दरशन बिना, किनसो कहुं वाता ॥टेर॥
आठ पहर नहीं बीसरों, नित डगर निहारों ।

हों तेरे नाम के ऊपरै, मेरा तन मन बारौ ॥१॥
मेरा घट में तलफना, जैसे घन बिन मोरा।
लगन पियारा मित्रसों, जैसे चंद चकोरा ॥२॥
वरषा विन दादुर दुखी, निरधन धन काजा।
जिनकी या गति जानके, बुझाओ बाझा ॥३॥
करणी दिस नहीं देखियो, पूरण अविनासी।
शरणै की प्रतिपालियो, नहीं विरद लजासी ॥४॥
धीरज दे अपना करो, विरहा विश्वासो।
कनीराम कूं दरश दो, मेटो सब सांसो ॥५॥

● श्री गुरु राम दास निज दर्शन ऊठत उदै प्रभाते हो।
अष्ट अंग दण्डोत सदाही त्रिविधि ताप मिटाते हो ॥टेर॥
गुरुप्रेम भाव परिक्रमा दीजे, चौरासी मिट फेरा हो।
दर्शन पर्सन मुक्ती ग्रामी, जनम-जनम का चेरा हो ॥१॥
भूरि भाग सिष राम सभा में, आनन्द उदै सदाई हो।
त्रय विधि पूजन करिये सदगुरु, श्रद्धा भाव बढ़ाई हो ॥२॥
ये ही नेम प्रेम उर मेरे, चरण शरण जिव रीज्यो हो।
द्याल बाल पर परशन हुय कर, भक्ति दान मोंहि दिज्योहो ॥३॥

● रामदास गुरु चरणां मांही, रहज्यो चित्त हमारा हो।
यह वरदान जनम भर चाहूं, परचै प्राण अधारा हो ।टेर॥

गुरु सेवा मौसर बडभागी, धिन-धिन आज्ञा मांही हो ।
आये साधु धर्म द्वारा सिघ, भाग बड़े ओलखांही हो ॥१॥
चलता तीरथ अपव्रग हरिजन, राम कृपा तें परसे हो ।
जग अशमेधा फल इक पाँवड़े, बड़भागी उर दरशे हो ॥२॥
भाव वधावा साधु उछावा, जावै लावै द्वारै हो ।
द्यालबाल उधरण यह नाको, गुरु मुख ज्ञान विचारे हो ॥३॥

● चौथे भाग रहे जब रजनी, राम सनेही जागो हो ।
सतगुरु श्रूप ध्यान उर धरिये, राम भजन में लागो हो ॥टेर॥
कारज ये ही राम सनेही, गर्भ का कौल सुधारे हो ।
या जग में केता दिन रहणो, मोह अज्ञान मिटारे हो ॥१॥
स्वपने सुक्ख जगत सब रचना, भूल भरम नहीं परिये हो ।
राम सन्त गुरु रीझै तेरा, सोई कारज करिये हो ॥२॥
मन वैराग लाग गुरु चरणां काया माया झूठी हो ।
लेखै हरि अर्पण अब करिये, मनसा फेर अफूटी हो ॥३॥
जन्म सफल सोई बड़भागी, राम नाम लिव लावै हो ।
द्याल बाल सतगुरु के शरणे, साचा हरिजस गावै हो ॥४॥

● रात गयी परभात भयो है, जागो जागण हारा रे ।
सत गुरु ज्ञान दृष्टि दिखलावै राम उदोत अपारा रे ॥टेक॥
सार असार पदारथ भासै, ब्रह्म शक्ति उर मांही रे ।

उत्तम सुमरण सास उसासा, काल तणा डर नांही रे ॥१॥
अघ अज्ञान भूत भ्रम भागे, शंका डाकण दूरै रे ।
ममता नींद मोह जग सुपनो, दोऊ दुखां कूं चूरे रे ॥२॥
बीजक दोय अंछर उर साचा, जीव आद पितु पावेरे ।
जनरामा अब जेज न कीजै, सतगुरु ज्ञान जगावे रे ॥३॥

● आवो मिलो भल राम सनेही, सतगुरु दर्शन जइये हो ।
उदै अंकूर भक्ति उर उपजै, राम अमीरस पइये हो ॥टेर॥
जामण मरण रोग दोय मेंटै, कल्मष जीव मिटइये हो ।
गंगा अड़सठ तीरथ जातरा गुरूधाम परसईये हो ॥१॥
उधरण घाट सत्तगुरु आज्ञा, हरिजन ज्ञान झुलइये हो ।
प्रेम प्रवाह गलै मन जब ही, भरम अज्ञान नसइये हो ॥२॥
अनत कोटि हरिजन नित न्हावण, परा परायण एही हो ।
द्याल बाल मौसर बड़ भागी साचै भाव सनेही हो ॥३॥

● चेतन चित्त में प्यारा जी
तन मन शीश चरणां में वारुं, कबहु न राखूं न्यारा जी ॥टेर॥
उन्मुनी ध्यान अगम गम गरुआ, ऐसी उनमुन धारा जी ।
सूरज तेज शशी सम शीतल, हृदय ज्ञान विचारा जी ॥१॥
यो संसार विषय जल भरियो, किस विध उतरूं पारा जी ।
जहाज स्वरूपी सतगुरु कहिये, जीवां तारण हारा जी ॥२॥

मो अनाथ की कोई नहीं आशा, तुम चरणां शरण अधारा जी ।
भाग भलो नित दरशन पाऊं, अरस परस दीदारा जी ॥३॥
सींथल धाम विराजे समरथ, सतगुरु सिरजण हारा जी ।
'जन-जीया' दर्शण के ऊपर, बार-बार बलिहारा जी ॥४॥

● बातड़ियां जी बातड़ियां, म्हारे सतगुरु कहवी बातड़ियां ॥टेर॥
मिनखा जनम पदारथ पायो, सोय न सारी रातड़ियां ।
छिन में छूट जाय तन तेरो, फेर न आवे हाथड़ियां ॥१॥
जब लग हंस बसे काया में, हिल मिल हुये सब साथड़ियां ।
मनवो फिरे मिरग ज्यों भूल्यो, काल करे सिर घातड़ियां ॥२॥
मात पिता त्रिया सुत बन्धु और कुटुम्बो जातड़ियां ।
अन्त काल में कोई नहीं तेरो, जम कूटेला लातड़ियां ॥३॥
शेष महेश सन्त सनकादिक, वेद पुराणां में गातड़ियां ।
"जन-जीया" भज राम सनेही, कर सतगुरु री साथड़ियां ॥४॥

एक विनय गीत

कठण जीव बड़ो बहुत करमी, धरमी नहीं हिरदा में धेष ।
कोऊ जाचक कीरत कर आगे, श्रवणाँ सुन पग ठाम्बे विशेष ॥१॥
अन पाणी दे पूरे आशा, देवो दान करो सन्मान ।
चार जुग कीरत जस गाऊँ, सुणों नहीं नन्द रा कान ॥२॥

बहु नामी बहरा हुय बैठा, सामहलो नीं हमारी बेर ।
लिक्ष्मि संग सूता सुख भर, गज री सूणी अर्ध में टेर ॥३॥
फँटे रह्यो कठे ही फाटो, धोतियाँ तणाँ उड गया धोड़ ।
तज्यो गरूड़ प्यादे पथ धायो, नहीं मायो भगवत रे होड़ ॥४॥
डूबे भक्त हुवे कोई भूण्डी, ऊण्डी छोलाँ बहे अथाह ।
चक्र चलाय मच्छ ने मार्‍यो, तारलियो समरथ गजराज ॥५॥
तार्‍यो गज किनारे लाया, पशु जीव री करी प्रतिपाल ।
"जीयो" पतित आपरे शरणें, कर कृपा गोविन्दभोपाल ॥६॥

॥इति॥

रामस्नेही लक्षण

छप्पय

मिलतां पारख प्रसिद्ध विमल चित्त राम सनेही ।
उर कोमल मुख निर्मल प्रेम प्रवाह विदेही ॥
दरसण परसण भाव नेमनित श्रद्धा दासा ।
साच वाच गुरु ज्ञान भक्ति प्रणमत इक आसा ॥
देह गेह सम्पति सकल, हरि अर्पण परमानिये ।
जनरामा मन वच कंर्म रामसनेही जानिये ॥१॥
खान पान पहिरान निर्मली दशा सदाई ।
सात्विक लेत आहार हिंसा करिहै न कदाई ॥

नीर छाण तन वरत दया जीवां पर राखे ।
बोले ज्ञान विचार असत कबहूं नहिं भाखै ॥
साधु संगति पणव्रत सुदृढ़ नैम प्रेम दासां लियां ।
रामस्नेही रामदास तन मन धन लेखे कियां ॥२॥
श्रद्धा सुमरण राम मीन मन रामस्नेही ।
गुणग्राही गुणवन्त लाय लैखे हरिदेही ॥
अमल तम्बाखू भांग तजै आमिष मद पानं ।
जुआ द्यूत का कर्म नारि पर माता जानं ॥
सांच शील क्षमा गहै राम राम सुमरण रता।
रामा भक्तिभाव दृढ़ रामस्नेही ये मता ॥३॥

॥इति॥

सबही कूं डर काल का, निडर न दीसैकोय।
'हरिया' जाकूं डर नहीं, रामसनेहीहोय ॥
अनन्तश्री हरिरामदासजी महाराज

नियम पंचदशी
अर्थात्
रामस्नेही सम्प्रदाय के नियम

(१) निर्गुण निराकार एक राम जी का इष्ट रखना और उन्हीं निर्लेप निरंजन परमेश्वर की पराभक्ति से उपासना करनी।

(२) वेद, श्रुति स्मृति, गुरुवाणी, शास्त्र, आर्षग्रन्थ, पुराण, आप्त-वाक्यों को मानना और सद्विद्या का प्रचार करना।

(३) पाठ पूजा संध्या वंदनादि नित्य कर्मों का पालन करना और शरीर के सारे सुखों को छोड़कर निरन्तर रामस्मरणपूर्वक योगाभ्यासी होना।

(४) सद्गुरु और सन्तों की आज्ञा मानना, उनको ईश्वररूप जानना और सत्संग को परम लाभ समझना।

(५) अपने सर्व व्यवहारों को ईश्वराधीन जानना और हिंसा रहित सत्य धर्म युक्त सात्विक उद्यमी होना।

(६) भोजनाच्छादन की चिन्ता न करना, न किसी से याचना करना, केवल सर्वशक्तिमान् एक ईश्वर का ही विश्वास रखना।

(७) ईश्वर के अर्पण किया हुआ प्रसाद ग्रहण करना, आन देवताओं के प्रसाद का स्पर्श तक नहीं करना और न आन देवताओं को देवत्व बुद्धि कर मानना।

(८) शील, सन्तोष, त्याग, वैराग्य, क्षमा, सरलता, धृति आदि धारण करना और हित मित सत्य भाषी होना।

(९) काम, क्रोध, लोभ, मोह, राग, द्वेष, अभिमान, ईर्ष्या, निन्दा आदि का त्याग कर अन्तःकरण शुद्ध रखना, संयम नियम से रहना और स्त्रीमात्र को माता बहिंन समझना।

(१०) जल छान कर पीना, रात्रि में भोजन न करना, जीव रक्षार्थ पांव देखकर धरना और चातुर्मास में विहार न करना अर्थात् एक जगह रहना।

(११) दूसरों के सुख–दुःख लाभ हानि को अपनी ही तरह समझना और सबकी उन्नति में अपनी उन्नति मानना।

(१२) मानापमान रहित होकर तन मन वचन से परोपकार करना और सम्पूर्ण प्राणिमात्र को एक ही आत्मरूप से देखना।

(१३) भांग, तम्बाकू, अफीम, पोस्त, गांजा, चरस, सुल्फा आदि नशों से तथा मांस, मदिरा, जुआ आदि सर्व व्यसनों, से रहित होना और व्यसनी बुरे पुरुषों की संगति से बचना।

(१४) बाह्याडम्बर में रत न हो, शुक्ल अथवा सात्विकी रंगरंजित वस्त्र धारण करना और हर समय ईश्वर को याद करना।

(१५) भ्रमात्मक भीरुता में न फंसकर सद्गुरु द्वारा प्राप्त वेदानुकूल सत्पथ का अनुसरण करना।

(गुरुवाणी से उद्धृत)

श्री सम्प्रदाय परिचय लक्षण

कवित्त

घूणी गिरनार मन्त्र तारक धाम रामनाथ
विलास है चित्रकूट इष्ट सीता जान है।
ऋषि वशिष्ठ वेद ऋग देव हनुमान तीर्थ
क्षेत्र है धनुष बीज अग्नी बखान है।
रामाचरज शाखा है अनन्त मुक्ति सामीप्यक
अच्युत सुगोत्र वर्ण शुक्ल सुख खान है।
राघव उपासी धर्मशाला अयोध्या है, पर
दक्षिणा गोदावरी अखाड़ा निर्वाण है।

॥इति॥

श्री गुरु प्रणालिका स्तोत्र

छन्द चित्त इल्लोल

सम्प्रदा मुख चार मांहीं, प्रकट रामानन्द।
कठिन कलियुग मांहिं कीनी, भक्ति पूरणचन्द।
तो सुखकंद जी सुखकंद, सब सुखसार को सुखकंद ॥१॥

नमो अनन्तानन्द स्वामी, अनंत हरिगुन गाय ।
संत परचे भया सारा प्रकट परचो ताय ।
तो गुणराय जी गुणराय, जन जस गावणो गुणराय ॥२॥
दास कर्मचन्द करणकारण, किये कर्म सब दूर ।
ताप त्रिविधा मेट तन की, पंच कर चक चूर ।
तो भरपूर जी भरपूर भक्ति भाव से भरपूर ॥३॥
अवनि दुतिये जन दिवाकर, भरम निशि चकचूर ।
अखंड जोत उद्योत अविचल काल तस्कर दूर ।
तो भलसूर जी भलसूर मंड में ऊगिया भल सूर ॥४॥
दास पूरण मालवी, धिन किये पूरण काम ।
लाज जग की मेट शंका, लियो मन विसराम ।
तो सतनाम जी सतनाम, पूरणदास है सतनाम ॥५॥
दामोदर कर दमन इन्द्रिय, पंच वश कर लीन ।
शील साच संतोष शमदम, दांत पद को चीन ।
तो परवीन जो परवीन, हरिरस भजन में परवीन ॥६॥
दास नारायण नाम नीको, लियो द्विज अँतवार ।
सकल प्रायश्चित भये छिन में, कियो पेलै पार ।
तो बलिहार जी बलिहार, नारायण नाम की बलिहार ॥७॥
दास मोहन मोह माया, दई सकल निवार ।

ध्याय अपणों धणी निश्चय, लियो उर में धार ।
तो सिधसार जी सिधसार, सारी बात कर सिधसार ॥८॥
ध्यान माधवदास धार्यो, मंडै जाय मैदान ।
आकाश औढ़ण भूमि पोढ़ण, दशों दिश वस्त्रान ।
तो परवान जी परवान, त्याग वैराग में परवान ॥९॥
किये नख शिख सर्व सुन्दर, ध्यान सुन्दर धार ।
वाद विरोध विकार परिहर, दिये द्वन्द्वर मार ।
तो चिताचार जी चितचार, निरमल कियो मन चितचार ॥१०॥
चरण दास विचार वाणी, राम चरणांचित्त ।
अल्प सुख संसार को, निजनाम साचो वित्त ।
तो बड़कृत जी बड़कृत, संतांचरण की बड़कृत ॥११॥
नमो जैमलदास स्वामी, बड़े धीर गम्भीर ।
धार जन अवतार अवनी, मेटणा परपीर ।
तो सुखसीर जी सुखसीर, अमृतधार की सुखसीर॥१२॥
दास ज्यूँ कबीर चकवै, लियो निर्गुण नाम ।
कियो निर्णय नीरक्षीरं, हंश ज्यूं हरिराम ।
तो विश्राम जी विश्राम, जीवां कारणै विश्राम ॥१३॥
दास विहारी विमलबाणी, जासु शिष हरदेव ।
तासु मोतीराम धिन, रघुनाथ सतगुरु ∴ सेव ।

तो निजभेव जी निजभेव, पायो भक्ति को निजभेव ॥१४॥
हरिराम सिष थिन रामदास जु, और नहिं कोई आज ।
निरख सब्र निरताय निरणय, करण जीवां काज ।
तो महाराज जी महाराज, मंड में अवतरे महाराज ॥१५॥
तासु गादी आन विराजे, प्रकट दूजे द्याल ।
बोल अनुभव गिरा वाणी, व्यास जेम विशाल ।
तो किरपाल जी किरपाल, जीवां उपरै किरपाल ॥१६॥
शरण आयां सहाय कीजै, दरस दीजै द्याल ।
लाज पूरणदास की अब्र, काटियै कर्मजाल ।
तो रिछपाल जी रिछपाल, अपने जीव की रिछपाल ॥१७॥

॥ इति ॥

अथ श्री सींथल खेड़ापा आचार्य परम्परा

श्री रामस्नेही सम्प्रदाय सींथल आचार्य परम्परा

(१) श्री हरिरामदास जी महाराज (संस्थापक आचार्य वि. सं. १८००) (निर्वाण-चैत्र शुक्ला ७ सं. १८३५)

(२) श्री हरिदेव दास जी महाराज (वै. कृ. ८ सं. १८३५ से) (निर्वाण-फाल्गुन कृष्ण ५ सं. १८६४)

(३) श्री मोतीराम जी महाराज (फाल्गुन शु. ६ सं. १८६४ से) (निर्वाण आषाढ़ कृ. १० सं. १८६६)

(४) श्री रघुनाथदास जी महाराज (आषाढ़ शुक्ल ११ सं. १८६६ से) (निर्वाण-मार्गशीर्ष कृ. १०, सं. १९०९)

(५) श्री चेतनदास जी महाराज (मार्गशीर्ष शु. ११ सं. १९०९ से) (निर्वाण-आश्विन कृ. १४, सं. १९५०)

(६) श्री रामप्रताप जी महाराज (अश्विन शु. १५ , सं. १९५० से) (निर्वाण-ज्येष्ठ कृ. १, सं. १९९६)

(७) श्री चौकसराम जी महाराज (ज्येष्ठ शु. २, सं. १९९६ से) (निर्वाण-भाद्रपद शु. १५ सं. १९९८)

पूज्यपाद अनन्तश्री हरिरामदासजी महाराज, सिंहस्थल
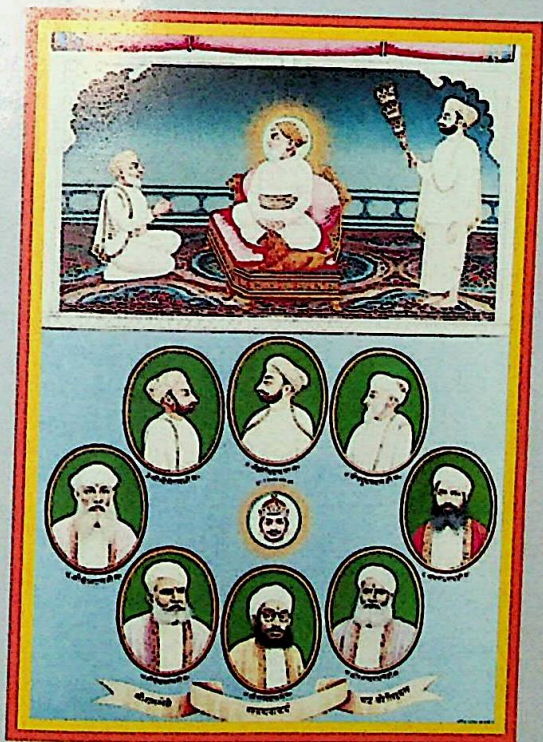
श्रीरामस्नेहि सम्प्रदांयाचार्य पाट श्री सिंहस्थल

(८) श्री रामनारायण जी महाराज (आश्विन शु. १, सं. १९९८ से) (गद्दी त्याग-भाद्रपद शु. १५, सं. २००५) (निर्वाण-मार्गशीर्ष कृ. ११, सं. २०२१)

(९) श्री भगवद्दास जी महाराज (भाद्रपद शु. १५, सं. २००५ से) (निर्वाण-चैत्र शु. १३, सं. २०३८)

(१०) श्री क्षमाराम जी महाराज (वै. कृ. १४, सं. २०३८ से वर्त्तमान)

श्री रामस्नेही सम्प्रदाय खेड़ापा आचार्य परम्परा

(१) श्री रामदास जी महाराज (संस्थापक आचार्य वि. सं. १८०९) (निर्वाण-आषाढ़ कृ. ७, सं. १८५५)

(२) श्री दयालुदास जी महाराज (आषाढ़ शु. ८, सं. १८५५ से) (निर्वाण-माघ कृ. १०, सं. १८८५)

(३) श्री पूरणदास जी महाराज (माघ शु. ११, सं. १८८५ से) (निर्वाण-कार्तिक शु. ५, सं. १८९२)

(४) श्री अर्जुनदास जी महाराज (मार्गशीर्ष कृ. ६, सं. १८९२ से) (निर्वाण-वैसाख कृ. ७, सं. १९५०)

(५) श्री हरलालदास जी महाराज (वैसाख शु. ८, सं. १९५० से) (निर्वाण-पौष कृ. ४, सं. १९६८)

(६) श्री लालदास जी महाराज (पौष शु. ८, सं. १६६८ से) (निर्वाण-भाद्रपद कृ. ४, सं. १६८२)

(७) श्री केवलराम जी महाराज (भाद्रपद शु. ४, सं. १६८२ से) (निर्वाण-पौश शु. ३, सं. २००६)

(८) श्री हरिदास जी महाराज (माघ कृ. ४, सं. २००६ से) (निर्वाण-फाल्गुन शु. ८, सं. २०२२)

(६) श्री पुरुषोत्तमदास जी महाराज (चैत्र कृ. १०, सं. २०२२ से वर्त्तमान)

॥ इति ॥

अथ रामरक्षा स्तोत्र

[श्री रामानन्द जी महाराज कृत]

ऊं अखंड मंडलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

आत्मगुरुभ्यो नमः। परमात्मगुरुभ्यो नमः। आदि गुरुदेव अन्त गुरुदेव शरण गुरुदेव के चरणारविन्द पादुका नमोस्तु ते हरन्ते सर्व व्याधि सकल सन्ताप दुःख दारिद्र रोग पीड़ा कलह कल्पना सकल विघ्न खंड खंडा।

श्रीरामस्नेहि सम्प्रदायाचार्य पाट श्री खैड़ापा
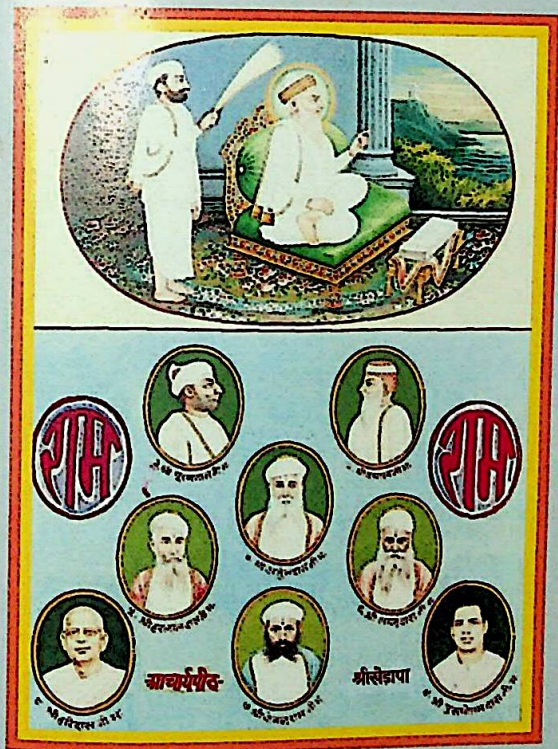
ॐ तस्मै श्री राम रक्षा रंकार वाणी ।
अनुभव तत्त्व निर्भय मुक्ति जाणी ॥
बांधिया मूल देखिया स्थूल गगन गर्जन्त धुनि ध्यान लगा ।
रहित तीन गुणां शील सन्तोष में रामरक्षा हिये आकार जागा ।।
पंच तत्व पच्चीस प्रकृति पंच भूतात्मा पंचवाई ।
समदृष्टि साम घर आणि प्राण अपान उदान ।
व्यान समान अनहद शब्द मिल खबर पाई ॥
उलटिया सूर ग्रह डंक छेदन किया पोखिया चन्द्र तहां कला सारी ।
अग्नि प्रकट भई ज़रा वेदन टरी डाकिनी शाकिनी घेर मारी ॥
धरणि अम्बर विचे पन्थ बहता रहे प्रेत अरु भूत दानव संहारा ।
वज्र की कोटड़ी वज्र का दंड ले वज्र का खड़्ग ले काल़मारा ॥
गरुड़ पक्षी उड्या नाग नागिनी डस्या विष्ष की लहर निद्रा न झाँपै ।
पिंड निर्मल भया पींजरै पढत सूवा रोग मथवाय पीड़ा न व्यापै ॥
रोम-रोम रंकार उचरंत वाणी श्रवण सुणत कर चित्त भेला ।
झिलमिलै ज्योति झणकार झणकत रहै नाद विन्दे मिल्या रंग रेला ॥
शून्य के नेहरे शून्य सजता रहै आपसे आप मिल आप लागा ।
शरीर से शरीर मिल शरीर निरखत रहै जीव से शीव मिल ब्रह्म जागा ॥
नैन से नैन मिल नैन निरखत रहै मुख से मुख मिल बोल बोला ।
श्रवण से श्रवण मिल नाद सजता रहे शबद से शबद मिल शब्द खोला ॥

निरत से निरत मिल निरत लागी रहे सुरत से सुरत मिल सुरत आवे ।
ध्यान से ध्यान मिल दम्भ सजता रहे, रंग से रंग मिल रंग गावै ॥
ज्ञान से ज्ञान मिल ध्यान से ध्यान मिल जाप अजपा जपै सोई दम जाय सो लाय लेखे। चित्त से चित्त मिल चित्त चेतन भया उन्मुनी दृष्टि से भाव देखै। द्वार से द्वार मिल शीश से शीश मिल देह विदेह मिल भेद भेदा। तिहुं लोक में घोर अंधार सब मिट गया श्वेत ही स्फटिक मणि हीर बेधा। उधरे नैन उच्चरै वैन चन्द अरु सूर राखिया थीर थीरं। हनुमतं हुंकार मचती रहै यों सोखिया पकड़ बावन वीरं। गंग उलटी चलै भानु पश्चिम मिलै निकसिया बिम्ब प्रकाश किया। आत्मा मांहि दीदार देखत रहै यों अजर अमर हुय आप जीया। खुणखुणी रुणझुणी नादरी नाद नादं। सुषुम्ना का छकै स्वाद स्वादं। चाचरी भूचरी खेचरी अगोचरी उन्मुनी पंच मुद्रा साधन्त सिद्धा योगेन्द्रा डरै। डूंगरे जले थले घाटे अवघटे तस्मै श्री रामरक्षा करै। बाघ बाघणी का क्रोध जाला। चोसठ योगिनी का काट कुटका करों खेचरा भूचरा क्षेत्रपाला। नवग्रह दूत पाखण्ड टारों। दुहाई फिरती रहे अलख निरंजन निराकर की, चक्र फिरिबो करै। वाट में घाट में पंथ में घोर में शोर में देश विदेश में राज का तेज में सांकड़ै पैसतां तस्मै श्री राम रक्षा करै। जागतां सोवतां खेलतां मालतां संत का शीश पर हस्त फिरिबो करै। चक्र लीयां रहे आप रक्षा करै। गुप्त का जाप ले गुप्त सेवा। चन्द अरु सूर घर एक रहिबो करे जीतिया संग्राम देवाधि

देवा। फेर सुधा किया उलट अमृत पिया विषका ज़हर सब दूर भागा। कमल दल कमल दल ज्योति ज्वाला जगै भंवर गुंजार आकाश लागा। रमत सार सोखन्त रुधिर बिन्दू रोम नाड़ी गरजन्त गगन वाजन्त वेणु शंख शब्द ध्वनि त्रिकुटि दास रामानन्द ब्रह्म चीन्हन्ते ब्रह्मज्ञानी। रामरक्षा भणंते उद्धरे प्रानी। लागिया विचार पारंगता पंथे घोरे राजद्वारे संग्रामे संकटे संध्याकाले मध्याह्ने श्रीरामरक्षा उचरन्ते उद्धरे प्रानी पापे न लिपन्ते पुण्येन आहारन्ते जे जपन्ते जनार्दनं मोक्ष मुक्ति फल पावन्ते।

रसनां निसदिन फरेत पीछी, रांम नांम को झाड़ौ।
'जनहरिरांम गुरु झाड़ीगर, भरम भूत कूं ताड़ौ॥
अनन्तश्री हरिरामदासजी महाराज, सींथल

श्री हरिरामदास जी महाराज कृत रेखता

नाम परतापतें कालकंटक टलै नाम परतापतें कर्म खोया ।
नाम परताप डर डाकणी नां डसै नाम परताप मन मैल धोया ॥
नाम परतापतें ताप त्रिविधा गई नाम परताप ग्रह नाहिं ग्रासै ।
नाम परताप भव भर्म भागा सबै नाम परताप दु:ख दूर नासै ॥
नाम परताप जल जोगिणी चंडिका भैरवा भूत छल छिद्र नाहीं ।
नाम परताप तैं विघ्न व्यापे नहीं नाम परताप तिहुं लोक मांही ॥
नाम परताप की सन्त महिमा करै विष्णु शिव शेष ब्रह्मादिसारा ।
दास हरिराम कहै नाम परतापते जगत जल माहिं जन होहिंपारा ॥
राम निज औषधी भव व्यथा कर्म को शब्द का ध्यान ईमानधारै ।
साधु सधीर को विघ्न व्यापै नहीं प्रेमका पच्च दे कुपचगारै ॥
वायु गम्भीर विष रोग हरजाहिंगे पित्त परिवार सब दूर पीरा ।
कफ तनु कास अरु श्वास आधो फिरै इहरवा नहरवा ज्वर जाहिं तीरा ॥
ताव तनु तप वेलाज एकान्तरो पच्च गड़ गूंब गोहान फोड़ी ।
दास हरिराम कहै बात ऐसी बणी तत्त के नाम वेदन्न तोड़ी ॥

श्री रामदासजी महाराज कृत रेखता

राम रिछक नवखण्ड सप्त द्वीपां डर नाहीं ।
राम रिछक तिहुंलोक भवन चवदै सुख थाहीं ॥
राम रिछक तन माहिं गेह क्या बनमें बारै ।
राम रिछक तिहुंलोक कहो कुण जनको मारै ॥
राम रिछक छल छिद्र भूत डाकण डर नाहीं ।
राम रिछक परताप तेजरो तनुते जाहीं ॥
राम रिछक तें काल दूरसेती कर जोड़े ।
राम रिछक तिहुंलोक वचन कुण पूठा मोड़े ॥
राम रिछक नवदेव साधुका रक्षक होई ।
राम रिछक तेतीस साधुको बन्दै सोई ॥
राम रिछक ऋधि सिद्धि साधु के चरणां दासी ।
राम रिछक परताप पड़ै नहिं जम की पासी ॥
राम रिछक गुरुदेव सन्त सो शीश विराजै ।
राम रिछक परताप अगम जहां वाजा बाजै ॥
राम रिछक परताप से सन्त सुमरि निर्भय भया ।
रामदास रट राम को अगम देश आघा गया ॥१॥
राम रिछक परताप काल दूरे ही भागै ।
राम रिछक परताप जम्म का दूत न लागै ॥

राम रिछक परताप जक्ष जोगण डर नाहीं ।
राम रिछक परताप संत निर्भय जग माहीं ॥
राम रिछक परताप मूठ छल छिद्र न लागै ।
राम रिछक परताप विघ्न दूरे ही भागै ॥
राम रिछक परताप भैरवा भूत नसावै ।
राम रिछक परताप वीर वेताल न आवै ॥
राम रिछक परताप ताव तनु व्यापै नाहीं ।
राम रिछक परताप रोग दुःख दूर नसाहीं ॥
राम रिछक परताप नवग्रह निकट न आवै ।
राम रिछक परताप इन्द्र पूजा ले थावै ॥
राम रिछक परताप चौकियां चारों जीता ।
राम रिछक परताप जगत में भया बदीता ॥
राम रिछक परताप चढ़्या गढ़ ऊपर जाई ।
राम रिछक परताप नौबतां निर्भय वाई ॥
राम रिछक परतापते सुन सागर में रमरह्या ।
रामा राम प्रतापतें काल विघ्न दूरे गया ॥२॥

श्री दयाल जी महाराज कृत रेखता

राम ररंकार तें निजर लागे नहीं अग्घ मोचन करै अनंत केरा ।
राम ररंकार तें ताप व्यापै नहीं जम्मका दूत तहां दै न घेरा ॥
राम ररंकार से अग्घ दूरां डरे राम ररंकार तें काल थरके ।
राम ररंकार तें उक्कडाकण डरे राम ररंकार तें प्रेतसरके ॥
जंत्र अरु मंत्र लोह लाठ लागे नहीं राहु अरु केतु शनि रहतदूरा ।
डर डफर तंतार संचार व्यापै नहीं, पनग नव नाथ कहै संतपूरा ॥
असुर सुर नमि चलै शेश घिन घिन कहै शंभु अरु विष्णु कहै सुजन मेरा ।
सप्त पाताल उच्छाह उच्छव करै नमो ररंकार परताप तेरा ॥
भजन परताप भय काल सबका मिट्या सुमर ररंकार की शरण आया ।
जन्न रामा किया आपसा सहज में अहो अप्पार अप्पार गाया ॥१॥
शरण गुरुदेव की राम रिच्छक सदा विघ्न भव काल जंजालदूरा ।
स्वर्ग पाताल आकाश मृत्यु लोक में सदगुरुं बाल निरभैस नूरा ॥
देश परदेश घट घाट वट वाट में रिच्छक रमतीत सबमें दयाला ।
भोर कहा संझ पुल मंझ आनन्द कर हरण अन्नेक अघ मन्न माला ॥
असुर सुर पक्षि जल जीव चर अचर सब नवग्रह आदि सहायक सदाई ।
एक संवला जहां अनन्त संवला सदा अदा जम चोट विघ्न न कदाई ॥
चौदह लोक पर लोक निर्भय रमत राम रमतीत बल निर्भय सादू ।
जहां विचरत तहां मगन उद्योत अति रामजन अगम घर अगम तादू ॥

नाटकी चेटकी जंत्र मंत्रादि सब तंत्र को जोर कोउ नाहिं लागै ।
डाकिनी साकिनी प्रेत छल छिद्र अनन्त राम परताप तें दूर भागै ॥
राम परताप बल राम सुख सम्पदा राम अखूट भंडार मेरे ।
राम आचार विचार किरीया सबै राम पुनि पाठ गरथान हेरे ॥
राम मुझ घणी समर्थ शरणा सबल तात अरु मात कुल वंश सारा ।
राम पोषण भरण राम प्रतिपाल नित सत्य ही शब्द मेरो अधारा ॥
राम संजीवन प्रान जीवन सदा आस छिनवास रग रोम रिच्छा ।
दम्म ता कदम बल एक कारण करण आदि से अन्त लेवै परिच्छा ॥
एक रस एक प्रतिपाल समर्थ धणी घणी संस्तुती परणाम जाकूं ।
गर्भ संभाल कृपालु ऐसी करी काढ ततकाल धिन बंदि तांकूं ॥
जाठरा अग्नि में मग्न आनन्द करण हरण अनेक दुख बाप बापं ।
छाजनं भोजनं अनंत सुख जिण दिया जीया ता शरण मुर मेट तापं ॥
नमस्ते-नमस्ते अजब सुख राम जी जयति अनूप जन भूप देवा ।
अगम गति अगम गति अगम आनन्द अति सत्य ही शब्द नित करूंसेवा ॥
जाण घिनराय कहा गाय मुख आपणे तरण महाराज तोहि लाज स्वामी ।
परम परलोक अहिलोक जानत नहीं करण सहाय इण लोक नामी ॥
अपत का सिपत कहो कौन मुख उचरण शरण अन्नेक अन्नेक तेरे ।
कोटि अन्नेक अन्नेक हें बहुगुन्हा करण प्रतिपाल माईत मेरे ॥
अधर धिन सधर मम तात पूरण ब्रह्म चार पद अर्थ सम्भाल देता ।
भक्ति अरु मुक्ति वैकुण्ठ रग रोम रम राम भज राम भज राम कहता ॥

राम महाराज की गोद चरणारविन्द तीन त्रय काल में संत सारा ।
जन्नरामा नमो शरण जाकी सदा राम रिच्छा सोई विरद थारा ॥२॥

—

राम रक्षा कवच

श्री दयाल जी महाराज कृत छप्पय

भव्व दैव दु:ख हरण, राम करुणा के सागर ।
आरति हरण उद्योत, जीव केतान उज्यागर ।
श्वास श्वास विश्राम, आस पूरण अवनाशी ।
निरधारां आधार, दीन बन्धू सुखरासी ।
शरणाई पिंजर विजय, प्रतिपालक महाराज है ।
रामदास चिंता हरण, राम गरीब निवाज है ॥१॥
कहा देश परदेश, कहा घर मांही बारै ।
रिच्छक राम दयाल, सदा है संगी हमारै ।
पर्वत अवघट घाट, वाट वन मांझ संगाती ।
जा के बेली राम ताप लागै नहिं ताती ।
धाड़ चोर खोसा कहा, उबर्या मांहि उबार है ।
मोहि भरोसो राम को, रामा प्राण अधार है ॥२॥
राम ढाल तरवार, राम बन्दूक हमारै ।

राम सूर सामंत, राम अरि फौज संहारे ।
राम अनड़ गढ कोट राम निर्भय मेवासो ।
राम साथ सामान, राम राजा रैवासो ।
राम धणी प्रभुता प्रबल, श्वास श्वास रक्षा करै ।
रामदास समरथ शरण, रे जिव! अब तूं क्यूं डरै ॥३॥
जो मांगे सोइ देत, राम सुख सागर दाता ।
तीन लोक में सन्त, राम भज भया विख्याता ।
पावन पतित मलेच्छत राम शरणे जो आयो ।
अभयदान ता दियो, प्राक निर्मल जस गायो ।
पिता पुत्र ज्यों स्याय की, अवगुण चित्त न धार है ।
सुगुणा साहिब राम जी, सदा जीव आधार है ॥४॥
अनन्त विघन भय हरण, राम समरथ सुखदाता ।
श्वास श्वास विश्राम, रामजीवन कुशलाता ।
शरणे की प्रतिपाल, राम पतितन के पावन ।
निरधारां आधार, सुयश हरिजन मुख गावन ।
आद अन्त संगी सदा, मन इच्छा पूरण करै ।
रामदास के राम जी, त्रिविध ताप दूरै हरै ॥५॥
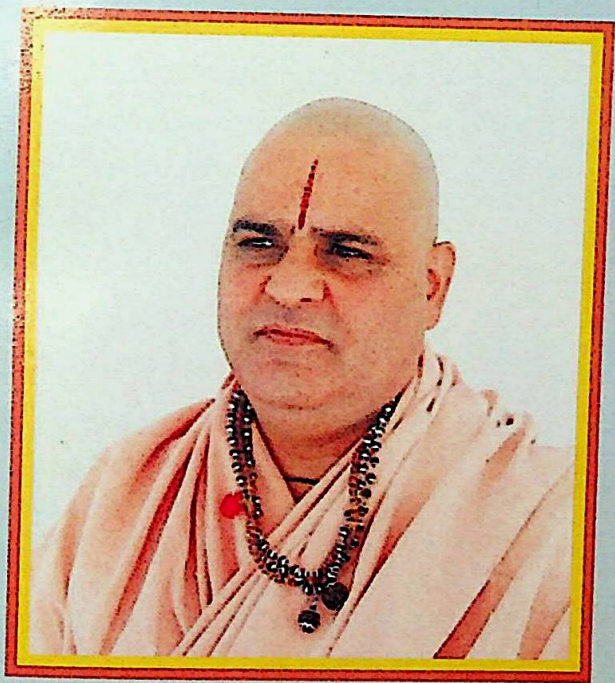
श्री १००८ श्री क्षमारामजी महाराज
रामस्नेहि सम्प्रदायाचार्य सिंहस्थल (१०)

राम रक्षा मन्त्र

नमो राम गुरुदेव जी, जन त्रिकाल के वन्द ।
विघ्न हरण मंगल करण, रामदास आनन्द ॥

॥इति॥

सन्ध्या वन्दन

आरती

[१]

ऐसी आरती घट ही में कीजे, राम रसायण निस दिन पीजे ॥
घट ही में देवल घट ही में देवा, घट ही में सहज करै मन सेवा ॥
घट ही में पांच पचीसूं पंडा, घट ही में जागे जोतिअखंडा ॥
घट ही में पाती फूल जढ़ावै, घट ही में आतम देव मनावै ॥
घट ही में शंख शब्दघन तूरा, घट ही में प्रेम परस निज नूरा ॥
घट ही में गावे हरिका दासा, घट ही में पावै पद परकासा ॥
जन हरिराम राम घट मांहीं, बिन खोज्यां कोई पावै नाहीं ॥

[२]

ऐसी आरती करूं गुरुदेवा, तन मन वचन सहज करि सेवा ॥
प्रकटे इसा परम गुरु स्वामी, आदि अंत होते निजनामी ॥

ज्ञान ध्यान ऐसे गुन धीरा, सहज समाधि सदा मुख सीरा ॥
सेवा संत शरण जो आवै, ज्युँ मलयागर भुवंग मिलावें ॥
सतगुरु करम काटि निरवाला, मलियागर मैटें पगज्वाला ॥
वंदन करै हरिदेव सदाई सतगुरु चरण कमल चितलाई ॥

[३]

आरती करूं गुरु हरिराम देवा, ब्रह्म विलास अगम घर भेवा ॥
आये संत ब्रह्म व्योपारी, राम नाम बिणजै बहोभारी ॥
ज्ञान ध्यान अणभै अणरागी, रोम रोम में झालर वागी ॥
इला पींगला सुखमण भोगी, अटल अमर अणभै पद जोगी ॥
शील सन्तोष सांच सतधारी, सता समाधि शून्य से यारी ॥
आय रामियो शरण तुम्हारी, पल-पल ऊपर प्राण अँवारी ॥

[४]

निज मन भाव आरती सारी, श्री गुरु रामदास बलिहारी ॥
सतगुरु ज्ञान ध्यान की मूरत, सतगुरु समी अवर नहिं सूरत ॥
विष्णु ब्रह्मा शिव सतगुरु मांई, अनत कोटि जन परचै सांई ॥
दीनदयाल जीवों के तारग, सतगुरु मोक्ष मुक्ति के मारग ॥
बारम्बार करूं परणामा, परम धाम आनन्द विश्रामा ॥
अष्ट विधान आरती षोडस, द्यालबाल के मस्तक मोड़स ॥

[५]

आरती करूं गुरु देव निरंजन, सुरगुण रूप धरे जन अंजन ॥
धर अवतार केता जिव तारे, आयां शरण सबे अघ जारे ॥
काल जंजाल जुरा डर नाहीं, निरभय निजानंद पद मांही ॥
जै जै जै जयमल के नन्दन, हरिरामा रामा धिन वन्दन ॥
द्याल बाल सतगुरु परणामा, पूरणदास लिया विश्रामा ॥

[६]

ऐसी आरती करो मन ज्ञानी, पलक न विसरूं सारंग पानी ॥
पांच पचीस का करो विचारा, जा बिच आतम राम पियारा ॥
प्रेम को तेल सुरत की बाती, ब्रह्म की जोति जगै दिनराती ॥
आरती गुरु गोविन्द की करिये, कहै कबीर भवसागर तरिये ॥

[७]

आरती करूं पति देव मुरारी, चँवर डुलै बलि जाऊं तुम्हारी ॥
चहुंदिश आरति चहुंदिश पूजा, चहुंदिश राम मेरे और न दूजा ॥
आरतिं कीजै प्रीति लगाई, जनम जनम का पातक जाई ॥
आरति कीजै ऐसे तैसे, ध्रुव प्रह्लाद करी शुक जैसे ॥
आनन्द आरती आतम पूजा, नामदैव भणे मेरे देव न दूजा ॥

॥इति॥

सन्ध्या स्तुति पाठ

परब्रह्म सतगुरु प्रणम्य पुनि सब सन्त नमोय ।
हरिरामा मुरभवन में, या पद समा न कोय ॥१॥
प्रथम सेव गुरुदेव की, पीछै हरि की सेव ।
जन हरिया गुरुदेव बिन, भक्ति न उपजै भेव ॥२॥
गुरु सेवा के राम की, या तुल नांही और ।
गुरु तो भांजै भरम कूं, राम मुगत की ठौर ॥३॥
पहली दाता हरि भया, जिनतें पाई जिन्द ।
पीछे दाता गुरु भया, तिन दाखे गोविन्द ॥४॥
सत्तगुरु अरु सन्तजन, राम निरंजण देव ।
दास नरायण वीनवै, दीजै परभू सेव ॥५॥
वन्दन हरि गुरु जनं प्रथम, कर मन कायक वैण ।
अखिल भुवन जो सोधिये, समा न या कोई सैण ॥६॥
वन्दन जैमलदास जी भ्यो प्रणम्य हरिराम ।
हरीदेव मोती नमो दास रघू विसराम ॥७॥
सतगुरु सेती वीनती, परब्रह्म सूं परणाम ।
अनत कोटि संत रामदास निशदिन करूं सलाम ॥८॥
अटल वैण गुरुदेव का, रामदास सत मान ।
एता पूठा नां फिरै, गिरिवर गंग गिनान ॥९॥

गिरी मेरु अरु गंग की, या हद ऊली बात ।
रामदास गुरु शबद ते, मिलै निरंजण नाथ ॥१०॥
नमो राम गुरुदेव जी, जन त्रिकाल के वन्द ।
विघन हरण मंगल करण, रामदास आनंद ॥११॥
जै जै जैमलदास गुरु, नमो नमो हरिराम ।
रामदास पद कंज रज, द्यालबाल विश्राम ॥१२॥
उनमंता अविगतरता, सिंवरंता निज नाम ।
शीतलता दिव्य दृष्टिता, नमो सन्त हरिराम ॥१३॥
हरिरामा रामा नमो द्यालबाल मुझ स्याम ।
मन वच क्रम करियै सदा, पूरण ताहि प्रणाम ॥१४॥
श्री हरिगुरु हरिराम धिन, रामदास मुझ स्याम ।
द्याल पुरुष पूरण प्रती, अर्जुन की परणाम ॥१५॥
प्रथम करूं परणाम, राम दास सद्गुरु स्वामी ।
दूसर श्री गुरु द्याल, अनन्त जीवां हंस नामी ।
तीसर श्री गुरुदेव, ब्रह्म पूरण भरपूरा ।
वाणी विमल रसाल, भरम करम चक चूरा ।
सन्ध्या मध्य प्रभात रट, जीव परमपद पाय है ।
अर्जुनदास जु रावरे, चरण कमल चित लाय है ॥१६॥
नमस्कार कर जोड़ के, राम दास धिन द्याल ।
पूरण अर्जुन गुरु प्रती, विनय करे हरलाल ॥१७॥

कबीर प्रणवत गुरु गोविन्द कूं, अब जन बन्दूं सोय ।
पहल भये परणाम ता, नमो स आगे होय ॥१८॥
अभ्यन्तर नहिं भाव, नाम कहै हरि नाम सूं ।
नीर विहूणी नाव, क्यों कर तरियै केशवा ॥१६॥
हरि सा हीरा छाड के, करे आन की आश ।
ते नर जमपुर जावसी, सत भाखे रैदास ॥२०॥
भगत कहा जोगी जती, षट् दर्शन विश्राम ।
जगन्नाथ जगदीश कूं, भंजै ताहि परणाम ॥२१॥
गुरु कूं पूजै गुरु मुखी, बाना पूजै साद ।
षड्दर्शन कूं पूजै कूबजी, जा का मता अघाद ॥२२॥
षड्दर्शन अरु खलक की, रहणी दुआ दुलभ्भ ।
रज्जब रहसी असंग जुग, कीरत रूप्यो खम्भ ॥२३॥
दया धर्म को रूंखड़ो, सत सूं बढतो जाय ।
सन्तोष से फूलै फलै, दादु अमर फल खाय ॥२४॥
मीठा बोलण निंव चलण, पर औगण ढक लेण ।
पांचू चंगा नानगा, हरि भज हाथां देण ॥२५॥
ज्ञान गरीबी गुरु धरम, नरम वचन निर्दोष ।
तुलसी ऐता राखिये, सरदा शील सन्तोष ॥२६॥
जग में बैरी को नहीं, सब सैणां को साथ ।
केवल कूबो यूं कहै, चरण निवाऊं माथ ॥२७॥

–इति–

[नम्बर (१५) के बाद अपने-अपने स्थानीय महन्तों के वचन (साखियें) बोले जाते हैं। जैसे सियाट में श्रीविजैरामजी, सुमतरामजी महाराज आदि, सूर सागर में श्रीपरसरामजी, सेवगरामजी महाराज आदि, पाली में श्रीनिर्मलरामजी महाराज आदि की साखियें बोलते हैं और उनके बाद पुनः आगे की (नम्बर १६) यथावत् पूर्ण स्तुति बोली जाती है।]

श्री सिंहस्थल खेड़ापा, गादी, देवल, मन्दिर, समाध पाट, पादुका, ज्ञानी ध्यानी, नेमी, प्रेमी, गुप्त, प्रगट, (भंडारी, कोठारी, पुजारी, वैरागी) चार-सम्प्रदाय बावन द्वारा, अनंत कोट सब सन्तों से सन्ध्या आरती का (दण्डवत् परिक्रमा सहित प्रणाम) राम सभा से राम राम महाराज ॥ राम राम महाराज॥

---

१. श्री २. शिव ३. सनकादि व ४. ब्रह्म सम्प्रदायों के क्रमशः रामानुज, विष्णु स्वामी, निम्बार्क व माध्वाचार्य चार आचार्य हैं। यथा नाभा भक्तमाल "रमापद्धति रामानुजं विष्णुस्वामि त्रिपुरारिं। निम्बादित्य सनकादिका, माधव गुरु मुखचारि॥"

इन्हीं उपरोक्त चार सम्प्रदायों के क्रमशः ३४, ५, ६ और ४ द्वारे हैं। "हय" रु नखत श्री के गिनो, सनकादिक नव द्वार। शिव के द्वारे पंच हैं, ब्रह्म सम्प्रदा चार।

श्री राम स्तुति

श्री रामचन्द्र कृपालु भज मन, हरण भव भय दारुणम् ।
नवकंज लोचन कंज मुख कर कंज पद कंजारुणम् ॥
कन्दर्प अगणित अमित छवि, नव नील नीरज सुन्दरम् ।
पट पीत मानहु तड़ित रुचिशुचि नौमि जनक सुतावरम् ॥
भज दीनबन्धु दिनेश दानव दैत्य वंश निकन्दनम् ।
रघुनन्द आनन्द कन्द कौशल चंद दशरथ नन्दनम् ॥
शिर मुकुट कुण्डल तिलक चारु उदार अंग विभूषणम् ।
आजानु भुज शर चाप धर संग्राम जित खरदूषणम् ॥
इति वदति तुलसीदास शंकर शेष मुनि मन रंजनम् ।
मम हृदय कंज निवास कुरु, कामादि खल दलगंजनम् ॥
मन जाहि राचेउ मिलिहि सो बर सहज सुन्दर सांवरो ।
करुणा निधान सुजान शील सनेह जानत रावरो ॥
एहि भांति गौरि अशीष सुनि सिय सहित हिय हरसी अली ।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मंदिर चली ॥

सोरठा

जानि गौरि अनुकूल, सिय हिय हरष न जाय कहि ।
मंजुल मंगल मूल, बाम अंग फरकन लगे ॥

॥इति॥

गीता आरती

ॐ जय भगवद्गीते, जय भगवद्गीते ।
हरि-हिय-कमल-विहारिणि, सुंदर सुपुनीते ॥
कर्म-सुमर्म-प्रकाशिनि, कामासक्ति-हरा ।
तत्त्व-ज्ञान विकाशिनी, विद्या-ब्रह्म-परा ॥१॥
निश्चल-भक्ति-विधायिनी, निर्मल मलहारी ।
शरण-रहस्य-प्रदायिनी, सबविधि सुखकारी ॥२॥
रागद्वेष-विदारिणी, कारिणी मोद सदा ।
भव-भय-हारिणि तारिणी, परमानंदप्रदा ॥३॥
आसुर-भाव-विनाशिनी, नाशिनी तम-रजनी ।
दैवी-सद्गुण-दायिनी, हरि-रसिका सजनी ॥४॥
समता त्याग सिखावनी, हरि-मुख की बानी ।
सकल शास्त्र की स्वामिनी, श्रुतियों की रानी ॥५॥
दया-सुधा-बरसावनी, मातु कृपा कीजै ।
हरि-पद-प्रेमदान करि, अपनो कर लीजै ॥६॥

॥इति॥

॥ श्रीहरिः ॥

सार 'सबद'

[१]

अगम अगाध मैं ज्ञान पोथी पढ्या,
भरम अज्ञान कूं दूरि डार्‍या।
नाम निरधार आधार मेरे भया,
गहर गुम्मान मनमोह मार्‍या॥
तीन चकचूर कर चित्त चौथे गया,
नाभि अस्थान धुनि धम्म कारा।
श्वास उछ्वास में वास निर्भे किया,
रम रह्या एक आतम्म यारा॥
सहज में स्वांम सुख रास ऐसे मंडै
रोम में रोम ररंकार जागै।
दास हरिराम गुरुदेव · परताप ते
हद्द कूं जीत बेहद्द लागै॥

(अनन्त श्रीहरिरामदासजी महाराज, सींथल)

॥श्रीहरिः॥

[२]

राम सुमरि रे प्राणिया, भूले मत भाई ।
सुमिरण बिन छूटै नहीं, जमद्वारे जाई ॥टेर॥
सब दुनिया भरमी फिरे, तीरथ अरु वरता ।
जैसे पांणी ओस कां, कछु काज न सरता ॥१॥
कहा आचार विचार है, क्या साधन सेवा ।
सतगुरु बिन पावै नहीं, आतम निज देवा ॥२॥
तपसी त्यागी मुनीश्वरा, पढ़िया अरु पंडिता ।
नाम बिना खाली रह्या, सिध उड़ता अरु गड़ता ॥३॥
जगत भेख एको मते, एकण दिस जावै ।
तत्त्व नाम जाणै नहीं, फिर-फिर गोता खावै ॥४॥
साध संगत निश दिन करै, एकौ रामजी ने ध्यावै ।
रामदास धिन सन्त जन, निर्भय पद पावै ॥५॥

(अनन्त श्रीरामदासजी महाराज, खैड़ापा)

॥श्रीहरिः॥

वन्दना

सत-चित-सुखमय अचल सम,
रहत सकल थित राम।
अलख-अगुन अरु गुन सहित,
नित प्रति करऊँ प्रनाम ॥१॥
जनम-करमअघहर अमल,
श्रवन-सुखद गुनगाथ।
मम तन मन जन वचन सब,
तव अरपन जदुनाथ ॥२॥
सुर नर मुनिवर चर अचर,
सब कर हित करनार।
तिन कर गुन गन कछु कहत
लघुजन मति अनुसार ॥३॥
गुन तव, मन तव, बचन तव,
तन तव, सब तव ईस।
सरन सुखद तव पद कमल
इक रति करूं बखसीस ॥४॥
(परम श्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज)